VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

अंतर्राष्ट्रीय संबंध

क्लासरूम स्टडी मटेरियल 2025

जून 2024 से मई 2025

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in /c/VisionIASdelhi /visionias_upsc vision_ias /VisionIAS_UPSC www.visionias.in

ENGLISH MEDIUM
1 July | 5 PM

हिन्दी माध्यम
5 July | 5 PM

- द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, लाइवमिंट, टाइम्स ऑफ इंडिया, इकोनॉमिक टाइम्स, योजना, आर्थिक सर्वेक्षण, बजट, इंडिया ईयर बुक, RSTV आदि का समग्र कवरेज।
- मुख्य परीक्षा हेतु विशिष्ट लक्ष्योन्मुखी सामग्री।
- मुख्य परीक्षा के दृष्टिकोण से एक वर्ष की समसामयिक घटनाओं की खंड–वार बुकलेटस (ऑनलाइन स्टूडेंटस के लिये मेटेरियल केवल सॉफ्ट कॉपी में ही उपलब्ध)
- लाइव और ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाएं जो दूरस्थ अभ्यार्थियों के लिए सहायक होंगी जो क्लास टाइमिंग मे लचीलापन चाहते हैं।

मुख्य परीक्षा
2025 के लिए 1 वर्ष का
समसामयिक घटनाक्रम
केवल 60 घंटे में

UPSC सिविल सेवा परीक्षा 2024 में चयनित सभी उम्मीदवारों को हार्दिक बधाई

10 in Top 10 Selections in CSE 2024 (from various programs of VISIONIAS)

हिन्दी माध्यम में 30+ चयन

AIR	नाम
137	अंकिता कांति
182	रवि राज
412	जितेंद्र कुमावत
438	ममता
448	सुख राम
483	ईश्वर लाल गुर्जर
509	अमित कुमार यादव
554	विमलोक तिवारी
564	गौरव छिम्वाल
618	राम निवास सियाग
622	आलोक रंजन
651	अनुराग रंजन वत्स
689	खेतदान चारण
718	रजनीश पटेल
731	तेशुकान्त
760	अश्वनी दुबे
795	कर्मवीर नरवाडिया
865	आनंद कुमार मीणा
873	सिद्धार्थ कुमार मीणा
890	सुषमा सागर
893	अरुण मालवीय
895	अजय कुमार
899	रितिक आर्य
911	अरुण कुमार
921	ममता जोगी
925	विजेंद्र कुमार मीणा
953	राजकेश मीणा
998	इकबाल अहमद

अंतर्राष्ट्रीय संबंध (International Relations)

विषय-सूची

1. बदलती विश्व व्यवस्था की गतिशीलता (Dynamics of Changing World Order) ____ 6
1.1. उभरती विश्व व्यवस्था ____ 6
1.2. वैश्विक कूटनीति में भारत की भूमिका ____ 8
1.2.1. वैश्विक शांति निर्माता के रूप में भारत की भूमिका: एक नज़र में ____ 8
1.2.2. भारत और ग्लोबल साउथ ____ 9
1.3. मिनीलैटरल का उदय ____ 10
1.4. वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भू-राजनीतिक खतरे ____ 12
1.4.1. चाइना-प्लस-वन रणनीति ____ 14
1.5. अंतरिक्ष कूटनीति: एक नज़र में ____ 15
1.6. परमाणु हथियार शस्त्रागार ____ 16
1.7. भारतीय प्रवासी ____ 17
1.8. मुख्य शब्दावलियां ____ 19
2. भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और समझौते (Regional, and Global Grouping and Agreements Involving India and/or Affecting India's Interest) ____ 20
2.1. भारत-हिंद प्रशांत: एक नजर में ____ 20
2.1.1. हिंद-प्रशांत महासागर पहल ____ 21
2.2. क्वाडिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग/ क्वाड ____ 22
2.3. ऑकस ____ 24
2.4. ब्रिक्स का विस्तार ____ 25
2.5. शंघाई सहयोग संगठन ____ 26
2.6. आसियान: एक नज़र में ____ 27
2.7. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन: सार्क ____ 28
2.8. बिम्सटेक ____ 28
2.9. भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा ____ 30
2.10. ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G-20) शिखर सम्मेलन ____ 31
2.11. G7: एक नज़र में ____ 33
2.12. नाटो ____ 34
2.13. मुख्य शब्दावलियां ____ 35
3. भारत और उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध (India and its Neighbourhood Relations) ____ 36
3.1. भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी ____ 36
3.2. भारत-चीन संबंधों के 75 वर्ष ____ 37
3.2.1. चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा ____ 39
3.3. सिंधु जल संधि ____ 41
3.3.1. शिमला समझौता ____ 42
3.4. भारत-श्रीलंका संबंध: एक नज़र में ____ 44
3.5. भारत-अफगानिस्तान संबंधों में बदलाव ____ 45
3.6. भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंध ____ 46
3.7. भारत-नेपाल संबंध: एक नज़र में ____ 48
3.8. भारत-मालदीव संबंध: एक नज़र में ____ 49
3.9. भारत-भूटान संबंध: एक नज़र में ____ 50
3.10. हिन्द महासागर क्षेत्र ____ 51
3.11. मुख्य शब्दावलियाँ ____ 52
4. भारत से जुड़े और/या भारत को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय समूह और समझौते (Bilateral Grouping and Agreements Involving India And/Or Affecting India) ____ 53
4.1. भारत-पश्चिम एशिया: एक नज़र में ____ 53
4.1.1. पश्चिम एशिया में भारत की संतुलित विदेश नीति ____ 54
4.2. भारत- जापान संबंध ____ 55
4.3. भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया ____ 57
4.3.1. भारत की एक्ट ईस्ट नीति के 10 वर्ष ____ 58
4.4. भारत-प्रशांत द्वीपीय देश संबंध ____ 59
4.5. भारत और मध्य एशियाई गणराज्यों के संबंध ____ 60
4.6. भारत-अफ्रीका संबंध ____ 60
4.7. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध ____ 62
4.7.1. संयुक्त राज्य अमेरिका के संरक्षणवादी उपाय ____ 64
4.8. भारत-कनाडा संबंध ____ 66
4.9. भारत-यूरोप संबंध ____ 67
4.9.1. भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध ____ 67
4.9.1.1. भारत-यूनाइटेड किंगडम विज़न 2035 तथा व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौता (CETA) ____ 68
4.9.2. भारत-यूरोपीय संघ संबंध ____ 69
4.9.3. भारत-फ्रांस संबंध ____ 70
4.9.4. भारत-रूस संबंध ____ 72
4.9.5. भारत-यूरेशिया संबंध ____ 74
4.9.6. भारत-नॉर्डिक संबंध ____ 75

© Vision IAS

4.10. भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध ____________________ 76
4.11. भारत और LAC (लैटिन अमेरिका और कैरिबियन) क्षेत्र संबंध ____________________ 77
4.12. मुख्य शब्दावलियां ____________________ 78
5. महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच तथा उनकी संरचना व अधिदेश (Important International Institutions, Agencies, and Fora, Their Structure, Mandate) ___ 79
5.1. अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून ____________________ 79
5.2. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ____________________ 81
5.3. भारत और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना ____________________ 82
5.4. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय ____________________ 82
5.5. विश्व स्वास्थ्य संगठन ____________________ 85
5.6. राष्ट्रमंडल ____________________ 86
5.7. मुख्य शब्दावलियां ____________________ 87
6. अंतर्राष्ट्रीय संबंध: विगत वर्षों के प्रश्न 2013-2024 (सिलेबस के अनुसार) {International Relations Previous Year Questions 2013-2024 (Syllabus-Wise)}____________________ 88
7. परिशिष्ट: मुख्य आंकड़े और तथ्य (Appendix: Key Facts and Data) ____________________ 95

भूमिका

सपना देखने का साहस रखने वाले अभ्यर्थियों के नाम संदेश,

भारत-भर की लाइब्रेरियों के शांत कोनों में, देर-रात की एकांत पढ़ाई में, और उन लाखों दिलों में जो राष्ट्र सेवा का स्वप्न संजोए हुए हैं - वहीं बसती है वह अडिग दृढ़-इच्छाशक्ति, जो दुनिया की सबसे चुनौतीपूर्ण परीक्षाओं में से एक, UPSC सिविल सेवा परीक्षा में सफलता का जुनून देती है। UPSC CSE 2025 में सफलता केवल परिश्रम से नहीं मिलेगी; इसके लिए एक रणनीतिक दृष्टिकोण, एकीकृत समझ और ज्ञान के विभिन्न पहलुओं को सार्थक उत्तरों में पिरोने की सटीक क्षमता आवश्यक है। इसी दर्शन को ध्यान में रखते हुए **अंतर्राष्ट्रीय संबंध 365** डॉक्यूमेंट तैयार किया गया है। यह डॉक्यूमेंट न केवल पाठ्यक्रम से पूरी तरह मेल खाता है, बल्कि वैश्विक कूटनीति की बदलती प्रवृत्तियों को भी दर्शाता है।

प्रश्न 1. 90% UPSC अभ्यर्थी मुख्य परीक्षा में असफल क्यों हो जाते हैं?

- **बिखरी हुई जानकारी:** कई स्रोतों के उपयोग से भ्रम पैदा होता है।
- **प्रासंगिकता की कमी:** कई रिसोर्स हालिया घटनाक्रमों को UPSC के सिलेबस से नहीं जोड़ पाते हैं।
- **विश्लेषण का अभाव:** दृष्टिकोण, हितधारकों का उल्लेख या समाधान के बिना तथ्यात्मक सामग्री प्रभावहीन हो जाती है।
- **विविधता की अनदेखी:** क्षेत्र, जेंडर, जाति और आर्थिक आयामों की अनदेखी उत्तर की गहराई को सीमित करती है।
- **खराब उत्तर संरचना:** ज्ञान को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत नहीं कर पाना।

लेकिन क्या होगा यदि आप एक व्यापक स्रोत के साथ इन सभी चुनौतियों पर काबू पा सकें?

प्रश्न 2. Mains 365 अंतर्राष्ट्रीय संबंध क्यों?

यह डॉक्यूमेंट आपका एकमात्र वार्षिक मार्गदर्शक है, जो वर्ष के सबसे महत्वपूर्ण और परीक्षोपयोगी वैश्विक संबंधों से जुड़े विषयों को संपूर्ण रूप से कवर करता है। सभी खंडों को UPSC पाठ्यक्रम के अनुसार चयनित और विश्लेषित किया गया है, जिससे GS-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) की सटीक और व्यापक तैयारी सुनिश्चित होती है।

साथ ही, यह डॉक्यूमेंट कई ऐसे उदाहरण भी प्रदान करता है जिन्हें **GS पेपर IV (एथिक्स) और निबंध लेखन** में प्रभावी ढंग से जोड़ा जा सकता है, जिससे जटिल विषयों को समझने और प्रस्तुत करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण विकसित होता है।

प्रश्न 3. क्या इससे परीक्षा हॉल में मेरा समय बचेगा?

हाँ — अगर आप इसे सही तरीके से इस्तेमाल करते हैं। इसमें दिए गए विजुअल जानकारी और इन्फोग्राफिक्स क्विक रिकॉल में आपकी मदद करते हैं। विषयों की बहुआयामी प्रस्तुति (विशेष रूप से विभिन्न वैश्विक घटनाक्रमों में भारत के हितों का ज़िक्र करते हुए) यह सुनिश्चित करती है कि आपके उत्तरों में गहराई एवं संतुलन हो, यानी ठीक वही बातें जिन्हें UPSC विशेष रूप से महत्व देता है।

© Vision IAS

1.2.2. भारत और ग्लोबल साउथ (INDIA AND THE GLOBAL SOUTH)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने वर्चुअल प्रारूप में तीसरे **"वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन (VOGSS)"** की मेजबानी की।

अन्य संबंधित तथ्य

- **12 सितंबर, 2024** को **अंतर्राष्ट्रीय दक्षिण-दक्षिण सहयोग दिवस** के तौर पर मनाया गया।
- यह दिवस **1978** में अपनाई गई **ब्यूनस आयर्स प्लान ऑफ़ एक्शन** की स्मृति में मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विकासशील देशों के बीच तकनीकी सहयोग को प्रोत्साहित करना और उसे प्रभावी रूप से लागू करना है।

ग्लोबल साउथ क्या है?

- **ग्लोबल साउथ शब्दावली सामान्यतः** तकनीकी और सामाजिक रूप से अल्पविकसित देशों को व्यक्त करती है। ये देश मुख्य रूप से दक्षिणी गोलार्ध में अवस्थित हैं। इनमें अधिकतर अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देश शामिल हैं।
- ब्रांट रिपोर्ट में उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध के देशों के बीच उनकी प्रौद्योगिकी संबंधी प्रगति, सकल घरेलू उत्पाद, आदि के आधार पर विभाजन का प्रस्ताव दिया गया था।

इसे भूमिका के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है

ग्लोबल साउथ द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां

- **वैश्विक मंचों पर कम प्रतिनिधित्व:** ग्लोबल साउथ के देशों (अफ्रीकी एवं लैटिन अमेरिका क्षेत्र) को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से बाहर रखा गया है।
- **उच्च सार्वजनिक ऋण:** विकासशील देशों का सार्वजनिक ऋण विकसित देशों की तुलना में दोगुनी दर से बढ़ रहा है (अंकटाड)।
- **जलवायु परिवर्तन का अधिक खतरा: समुद्र के बढ़ते जलस्तर के कारण प्रशांत द्वीप समूह के देश सबसे अधिक जोखिमपूर्ण स्थिति** में हैं {विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)}।
- **अलग-अलग दृष्टिकोण:** लोकतंत्र, मानवाधिकार, आदि की व्याख्या को लेकर ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ के बीच आम सहमति का अभाव है।

उपयोग के लिए तैयार इन्फोग्राफिक्स

ब्रांट लाइन

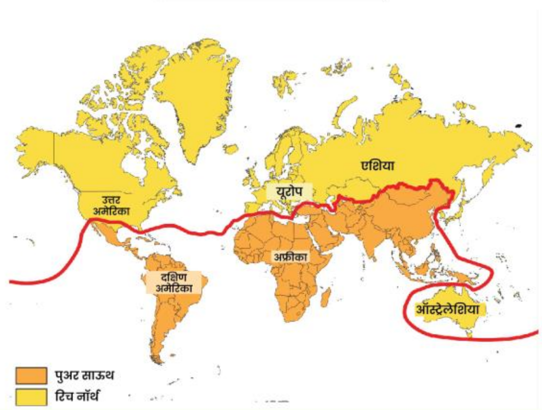

भारत के लिए ग्लोबल साउथ का महत्त्व

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव:** ग्लोबल साउथ भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और उसके आर्थिक परिवर्तन एवं विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।
- **रणनीतिक विचार:** ग्लोबल साउथ के साथ संबंध भारत की "मल्टीडायरेक्शनल एलाइनमेंट (बहुआयामी संरेखण)" रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह रणनीति चीन के प्रभाव को कम करने में भी मदद करती है।
- **आर्थिक विकास:** ग्लोबल साउथ के देशों में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। साथ ही, ये भारतीय उत्पादों के निर्यात के लिए एक विशाल बाजार प्रदान करते हैं।

भारत स्वयं को ग्लोबल साउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में कैसे स्थापित कर रहा है?

- **परियोजनाएं शुरू करके:** साझेदार देशों को वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता प्रदान करना।
- **क्षमता निर्माण और ग्लोबल साउथ के प्रथम सहायता प्रदाता के रूप में उभरना:** उदाहरण के लिए, भारत-संयुक्त राष्ट्र क्षमता निर्माण पहल; कोविड-19 के दौरान वैक्सीन मैत्री पहल; ऑपरेशन ब्रह्मा (म्यांमार)।
- **वैश्विक जलवायु एजेंडे का नेतृत्व करना:** उदाहरण के लिए- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA); आपदा-रोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI); साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (CBDR) का समर्थन करना आदि।
- **अंतर्राष्ट्रीय बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार:** जैसे- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का विस्तार करने की मांग।
- **लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर वैकल्पिक तंत्र:** उदाहरण के लिए- पंचशील, गुजराल सिद्धांत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांतों पर आधारित वैकल्पिक तंत्र।

उदाहरणों द्वारा समर्थित पक्ष

प्रश्न 4. मेरे उत्तरों को अतिरिक्त विश्वसनीयता क्या देती है?

प्रमुख शब्दों, उदाहरणों सहित प्रमाणित आयामों, आंकड़ों से समर्थित तर्कों, प्रासंगिक उद्धरणों और 'रणनीतिक स्वायत्तता' तथा 'चेक-बुक कूटनीति' जैसे लोकप्रिय वाक्यांशों को शामिल करने से न केवल आपके उत्तरों की विश्वसनीयता बढ़ेगी, बल्कि आपके उत्तर बाकियों से अलग भी होंगे।

प्रश्न 5. यह डॉक्यूमेंट 3 घंटे की परीक्षा के अनुसार कैसे तैयार किया गया है?

हर टॉपिक को 'भूमिका (संदर्भ) → पृष्ठभूमि संबंधी आवश्यक जानकारी → बहुपक्षीय विश्लेषण' के क्रम में प्रस्तुत किया गया है, ताकि आप इस फ्रेमवर्क को उठाकर, उसमें अपने विचार जोड़ सकें और जब बाकी लोग अब भी फ्रेमवर्क बना रहे हों, तो आप पूरी गति से उत्तर लिख सकें।

प्रश्न 6. क्या आप इसे एक वास्तविक प्रश्न के उदाहरण से समझा सकते हैं?

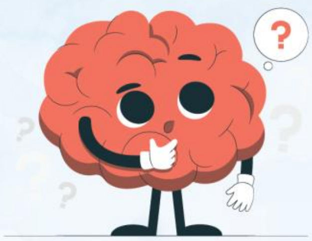

PYQ: 'संघर्ष का विषाणु एस.सी.ओ के कामकाज को प्रभावित कर रहा है।'
उपरोक्त कथन के आलोक में समस्याओं को कम करने में भारत की भूमिका बताइये।

Mains 365: अंतर्राष्ट्रीय संबंध से लिया गया अंश-

- **आतंकवाद पर रुख:** भारत की सीमा-पार आतंकवाद के खिलाफ दृढ़ स्थिति।
- **चीन का वर्चस्व:** भारत द्वारा SCO की चीन-केंद्रित प्रवृत्तियों को संतुलित करना।
- **आर्थिक और ऊर्जा सहयोग:** आर्थिक साझेदारियों में भारत की भूमिका।
- **क्षेत्रीय संपर्क:** INSTC जैसी पहल के माध्यम से संपर्क को बढ़ावा देना।
- **चयनात्मक सहभागिता:** आतंकवाद विरोधी सहयोग पर केंद्रित रहना।

इन्हें परिचय-मुख्य भाग-निष्कर्ष में शामिल करें:

- भूमिका में यह बताया जा सकता है कि भारत ने SCO रक्षा मंत्रियों की घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार किया, क्योंकि उसमें आतंकवाद की चयनात्मक निंदा की गई थी, जो इसके कड़े रुख को दर्शाता है।
- मुख्य भाग में उल्लेख करें कि भारत कैसे कजाख यूरेनियम तक पहुंच बनाकर और INSTC के माध्यम से संपर्क बढ़ाकर क्षेत्रीय आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देकर चीन के वर्चस्व को संतुलित करता है।
- निष्कर्ष में यह रेखांकित करें कि भारत SCO को टकराव की बजाय विकास-केंद्रित लक्ष्यों की ओर ले जाने में कैसे भूमिका निभा रहा है।

परिणाम: एक फोकस्ड, 250-शब्दों का उत्तर होगा जो भारत की SCO में रणनीतिक भूमिका को स्पष्ट उदाहरणों और कूटनीतिक प्रयासों के माध्यम से दर्शाता है। ठीक वही जिसकी UPSC मुख्य परीक्षा में अपेक्षा की जाती है।

प्रश्न 7. कोई फाइनल प्रो टिप?

इस डॉक्यूमेंट को एक बार पढ़कर भूल जाने वाली किताब की तरह न देखें, बल्कि इसे फ्रेमवर्क्स के भंडार की तरह अपनाएं। समकालीन उदाहरणों का इस्तेमाल करना और उत्तरों को सुझाए गए ढांचे के अनुसार प्रस्तुत करना सीखें। आप तेजी से उत्तर लिख पाएंगे, स्पष्ट सोच पाएंगे और बेहतर स्कोर करेंगे।

सादर

टीम VisionIAS

 © Vision IAS

फाउंडेशन कोर्स
सामान्य अध्ययन

प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा 2026

इनोवेटिव क्लासरूम प्रोग्राम

- प्रारंभिक परीक्षा, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
- मौलिक अवधारणाओं की समझ के विकास एवं विश्लेषणात्मक क्षमता निर्माण पर विशेष ध्यान
- एनीमेशन, पॉवर प्वाइंट, वीडियो जैसी तकनीकी सुविधाओं का प्रयोग
- अंतर - विषयक समझ विकसित करने का प्रयास
- योजनाबद्ध तैयारी हेतु करेंट ओरिएंटेड अप्रोच
- नियमित क्लास टेस्ट एवं व्यक्तिगत मूल्यांकन
- प्री फाउंडेशन कक्षाएं
- सीसैट कक्षाएं
- PT 365 कक्षाएं
- MAINS 365 कक्षाएं
- PT टेस्ट सीरीज
- मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज
- निबंध टेस्ट सीरीज
- सीसैट टेस्ट सीरीज
- निबंध लेखन - शैली की कक्षाएं
- करेंट अफेयर्स मैगजीन

नोट: ऑनलाइन छात्र हमारे पाठ्यक्रम की लाइव वीडियो कक्षाएं अपने घर पर ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर देख सकते हैं। छात्र लाइव चैट विकल्प के माध्यम से कक्षा के दौरान अपने संदेह और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। वे अपने संदेह और प्रश्न नोट भी कर सकते हैं और दिल्ली केंद्र में हमारे कक्षा सलाहकार को बता सकते हैं और हम फोन/मेल के माध्यम से प्रश्नों का उत्तर देंगे।

Scan the QR CODE *to* download VISION IAS app

DELHI : 7 अगस्त, **2 PM** | **JAIPUR : 20** जुलाई | **JODHPUR : 10** अगस्त

Lakshya

MAINS MENTORING PROGRAM 2025

30 Days Expert Intervention

A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims Examination

15 JULY 2025

- Highly experienced and qualified team of Mentors for continuous support and guidance
- A structured plan of revision for GS Prelims, CSAT, and Current Affairs
- Effective Utilization of learning resources, including PYQs, Quick Revision Modules (QRMs), and PT-365

Lakshya

PRELIMS & MAINS INTEGRATED MENTORING PROGRAM

Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Program 2026

(A Strategic Revision, Practice, and Mentoring Program for UPSC Prelims and Mains Examination 2026)

VisionIAS introduces the Lakshya Prelims & Mains Integrated Mentoring Programme 2026, offering unified guidance for UPSC aspirants across both stages, ensuring comprehensive support and strategic preparation for success

2026 | **13 MONTHS** | **31 JULY**

Highlights of the Program

- Coverage of the entire UPSC Prelims and Mains Syllabus
- Highly experienced and qualified team of senior mentors
- Development of Advanced answer writing skills
- Special emphasis to Essay & Ethics

1. बदलती विश्व व्यवस्था की गतिशीलता (Dynamics of Changing World Order)

1.1. उभरती विश्व व्यवस्था (Emerging World Order)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **बिम्सटेक (BIMSTEC)** की एक बैठक में भारत के विदेश मंत्री ने रेखांकित किया कि नई विश्व व्यवस्था **क्षेत्रीय** और **एजेंडा-विशेष** आधारित होगी।

नई विश्व व्यवस्था के उद्भव में योगदान देने वाले कारक

- **युद्धोत्तर बहुपक्षीय व्यवस्था का पतन:** उदाहरण के लिए- संयुक्त राष्ट्र जैसी पारंपरिक संस्थाएं आधुनिक संघर्षों को रोकने में **प्रभावी नहीं** रह गई हैं। (उदाहरण के लिए- **रूस-यूक्रेन युद्ध** और **गाजा संकट**)।
- **'वैश्विक बहुसंकट' और वैश्विक अस्थिरता:** सैन्य युद्ध (यूक्रेन), व्यापार युद्ध, महामारी और जलवायु परिवर्तन जैसे परस्पर जुड़े संकट वैश्विक प्राथमिकताओं को आकार दे रहे हैं।
- **क्षेत्रीय और एजेंडा-विशेष भू-राजनीति का उदय:** उदाहरण के लिए- ब्रिक्स (BRICS) का उद्देश्य **पारंपरिक वैश्विक शक्तियों** पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना और **दक्षिण-दक्षिण सहयोग को बढ़ाना** है। विश्व में एक बदलाव दिखाई दे रहा है, जहां **"पश्चिम विरोधी" होने की बजाय, "गैर-पश्चिम" को महत्व** दिया जा रहा है।
- **बहुध्रुवीयता का उदय:** वैश्विक शक्ति अनेक राष्ट्रों के बीच विभाजित हो गई है (जैसे, यूक्रेन संघर्ष में भारत के रुख में स्वायत्तता)।
- **रणनीतिक स्व-सहायता का उदय:** राष्ट्र वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखला (आयात-निर्यात), ऊर्जा आपूर्ति और आपदा प्रत्युत्तर में खुद को मजबूत और सुरक्षित बनाने को प्राथमिकता दे रहे हैं **(जैसे**; क्षेत्रीय सहयोग के लिए बिम्सटेक)।

उभरती विश्व व्यवस्था में भारत के लिए अवसर

- **ग्लोबल साउथ की सामूहिक अभिव्यक्ति के रूप में भारत:** यह गैर-पश्चिमी लोकतांत्रिक देशों को बढ़ावा देता है। जैसे- **भारत ने G20 समूह में अफ्रीकी संघ को सदस्यता दिलवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।**
- **जलवायु कूटनीति:** भारत **पर्यावरण अनुकूल विकास (ग्रीन ग्रोथ)**, तथा वित्तपोषण व्यवस्था में सुधारों की वकालत करता है; उदाहरण के लिए- भारत के नेतृत्व में शुरू किया गया **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन** (ISA)।
- **संतुलित बहुध्रुवीयता:** यह विविध एजेंडा को बढ़ावा देने वाले मंचों में सक्रिय भागीदारी करता है। उदाहरण के लिए- ब्रिक्स, SCO, क्वाड, I2U2, आदि में भारत की सदस्यता।
- **डिजिटल और तकनीकी नेतृत्व:** भारत CoWIN, UPI और ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) जैसे प्लेटफॉर्म्स की सफलता से डिजिटल रूप से सक्रिय अग्रणी देशों की श्रेणी में शामिल हो गया है।
- **मुद्दा-आधारित सहयोग:** उदाहरण के लिए- बिम्सटेक (कनेक्टिविटी और आपदा प्रबंधन पर फोकस); इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क (IPEF); आदि।

उभरती विश्व व्यवस्था में भारत की भूमिका के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **वैश्विक सहयोग में कमी:** WTO का विवाद निपटान तंत्र कमजोर हो गया है। इसलिए, निष्क्रिय वैश्विक संस्थाएं भारत की व्यापार संभावनाओं में बाधा डालती हैं। वैश्विक व्यापार में भारत की कम हिस्सेदारी (2023 में 4.3%) से यह स्पष्ट हो जाता है।
- **जलवायु न्याय के मामले में मतभेद:** जलवायु वित्तपोषण पर विकसित और विकासशील देशों के मत अलग-अलग हैं (**उदाहरण के लिए-** COP27 में **लॉस एंड डैमेज फंड** के गठन पर मतभेद)।

- **भू-राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता और क्षेत्रवाद:** वैश्विक संस्थाओं से क्षेत्रीय/ अनौपचारिक गठबंधनों **(उदाहरण के लिए,** ब्रिक्स, क्वाड) को महत्व देने की ओर बदलाव से विभिन्न देशों के बीच आम सहमति का निर्माण कर पाना बहुत कठिन है।
- **वि-वैश्वीकरण और संरक्षणवाद**: व्यापार युद्ध (जैसे-,अमेरिका-चीन) और यूरोपीय संघ का कार्बन सीमा समायोजन तंत्र (CBAM)[1] **भारत के निर्यात को अधिक महंगा और कम प्रतिस्पर्धी बना सकती हैं।**
- **अन्य चुनौतियां:** प्रतिस्पर्धी **वैश्विक शक्तियों (अमेरिका और चीन)** के साथ संबंधों को संतुलित करना; जमीनी स्तर पर कूटनीतिक उपस्थिति बढ़ाना; लंबे समय से चले आ रहे **सीमा विवादों का समाधान करना; क्षेत्रीय तनावों का प्रबंधन करना;** आदि।

निष्कर्ष

भारत की क्षेत्रीय, एजेंडा-विशेष विश्व व्यवस्था का विज़न **बहुध्रुवीय और बहु-संकट-समाधान कूटनीति** की शुरुआत को दर्शाती है। **BIMSTEC फोरम** इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। इस कूटनीति में सामूहिक **स्व-सहायता, रणनीतिक स्वायत्तता और कनेक्टिविटी** वैश्विक साझेदारियों को नई दिशा दे रही हैं।

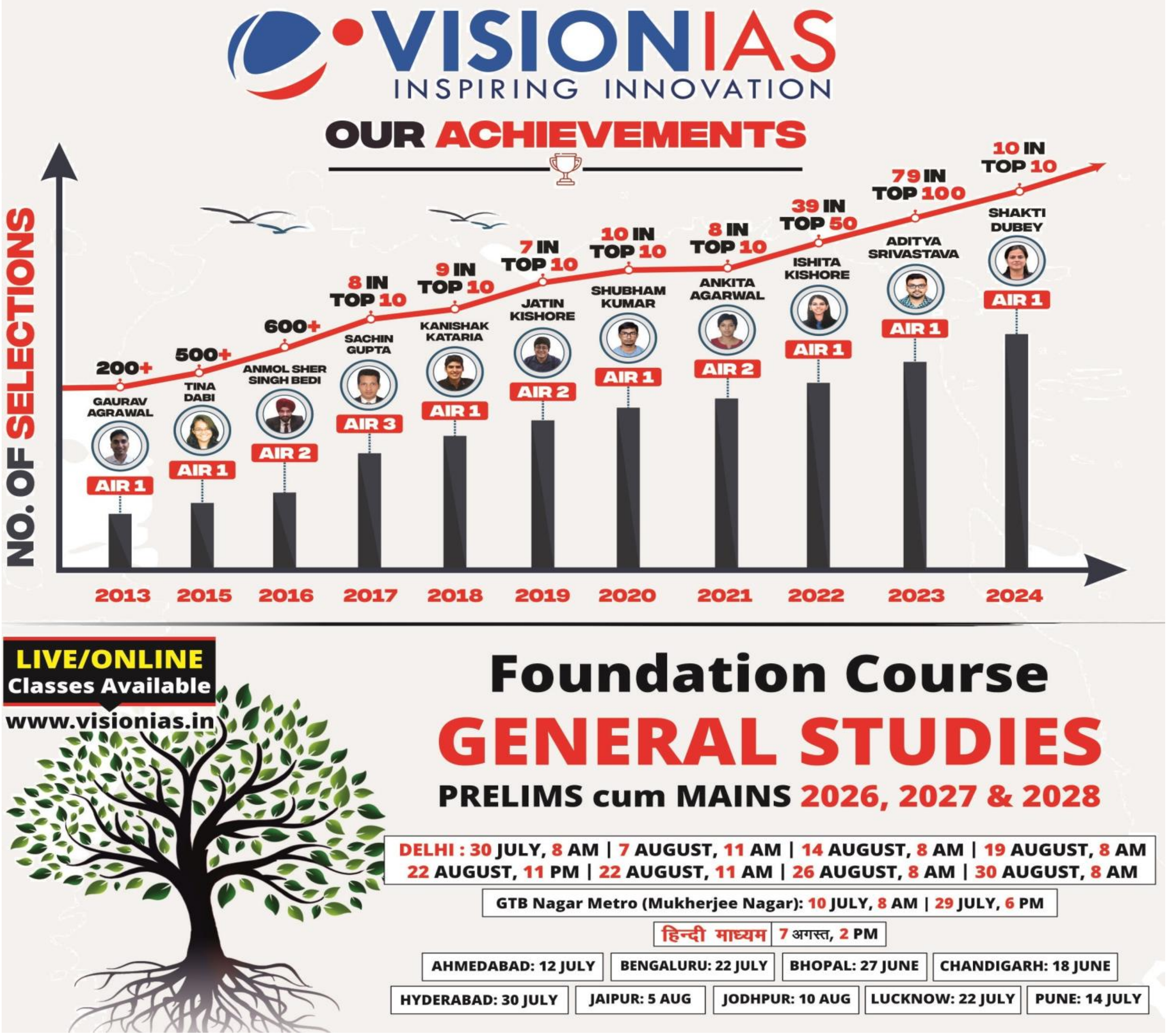

[1] Carbon Border Adjustment Mechanism

1.2. वैश्विक कूटनीति में भारत की भूमिका (India's Role in Global Diplomacy)

1.2.1. वैश्विक शांति निर्माता के रूप में भारत की भूमिका: एक नज़र में (India's Role as a Global Peacemaker at a Glance)

पाथ टू पीस

स्विट्जरलैंड में आयोजित यूक्रेन पर **"पाथ टू पीस"** शिखर सम्मेलन, वास्तव में वार्ता और कूटनीति के माध्यम से समस्या के शांतिपूर्ण समाधान के प्रति भारत की निरंतर प्रतिबद्धता के अनुरूप है।

यूक्रेन युद्ध पर भारत का पक्ष

भारत **हिंसा और शत्रुता को तत्काल समाप्त** करने का पक्षधर रहा है।	भारत **संघर्ष की स्थिति में मानवीय सहायता प्रदान करने** की मांग करता है।	भारत ने माना कि वैश्विक व्यवस्था **कानून,** संयुक्त राष्ट्र चार्टर और क्षेत्रीय अखंडता एवं संप्रभुता के सम्मान पर आधारित है।	भारत संघर्ष के समाधान के लिए **संवाद और कूटनीति के मार्ग अपनाने में विश्वास करता है।**

भारत के हित में वैश्विक शांति स्थापना

- **विश्व में जारी अस्थिरता भारत को** 2047 तक विकसित अर्थव्यवस्था बनने के लक्ष्य में **बड़ी बाधा है।**
- **एक महत्वपूर्ण वैश्विक भागीदार के रूप में भारत:** शांति में मध्यस्थता हेतु भारत के प्रयास **वास्तव में** सुरक्षा प्रदाता के रूप में उसकी भूमिका को बल करते हैं।

"हम युद्ध से दूर रहे हैं, लेकिन हम तटस्थ नहीं हैं, हम शांति के पक्षधर हैं। हम बुद्ध और महात्मा गांधी की धरती से शांति का संदेश लेकर आए हैं।"

— श्री नरेंद्र मोदी

अंतर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देने में भारत का योगदान/ क्षमताएं

ग्लोबल साउथ का नेतृत्व: भारत **ग्लोबल साउथ और ग्लोबल नॉर्थ के बीच एक सेतु** के रूप में कार्य करता है। यह **अफ्रीकी संघ (AU) को G-20 में शामिल** करने के उसके प्रयासों से स्पष्ट होता है।	**संघर्ष समाधान का अनुभव:** उदाहरण के लिए, **श्रीलंका के गृहयुद्ध में मध्यस्थता करना।**	**विकास में भागीदारी के जरिए शांति स्थापना:** उदाहरण के लिए, अफ्रीका (भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग/ ITEC)और अफगानिस्तान (सलमा बांध) आदि।	**सांस्कृतिक कूटनीति:** भारत का **'वसुधैव कुटुम्बकम'** का दर्शन भी विश्व में सद्भाव को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।	**संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत की सक्रिय भागीदारी:** शांति स्थापना अभियानों में भारत ने **2,53, 000 सैनिकों को तैनात किया जो** अन्य किसी भी देश की तुलना में सबसे अधिक संख्या है।

वैश्विक शांति स्थापना प्रयासों में भारत के नेतृत्व के समक्ष मौजूद बाधाएं

पाकिस्तान (पहलगाम हमला) और चीन (गलवान झड़प, 2020) के साथ तनाव वास्तव में शांति स्थापक के रूप में भारत की तटस्थता को सीमित करता है।	**घरेलू चुनौतियां:** उदाहरण के लिए, **संयुक्त राष्ट्र ने भारतीय राज्य मणिपुर में मानवाधिकारों के उल्लंघन पर चिंता** प्रकट की है।	**संसाधनों की कमी:** गरीबी जैसी घरेलू समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने से वैश्विक शांति प्रयासों में बाधा आती है।	विशेष रूप से **संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ भारत की रणनीतिक साझेदारी और क्वाड में इसकी भागीदारी, पश्चिमी हितों के अनुकूल** होने के रूप में देखी जाती हैं।	**संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम जैसी स्थापित वैश्विक शक्तियों** की तुलना में भारत का कूटनीतिक नेटवर्क और प्रभाव अपेक्षाकृत सीमित है। इससे मध्यस्थता करने की इसकी क्षमता प्रभावित होती है।

आगे की राह

विश्वबंधु (विश्व का मित्र) के रूप में भारत की भूमिका: भारत को वैश्विक शांति स्थापना में **अधिक सक्रिय रुख अपनाना चाहिए।**	**भागीदारी:** ग्लोबल साउथ (जैसे- ब्राजील, इंडोनेशिया आदि) और शांति स्थापना वाले पारंपरिक पाश्चात्य देशों (जैसे- नॉर्वे आदि) के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए।	**क्षमता निर्माण:** विदेश मंत्रालय और थिंक टैंक्स के भीतर शांति स्थापना समूह का गठन करना चाहिए, ताकि वैश्विक संघर्षों का अध्ययन किया जा सके। (जैसे; **ओस्लो में नॉर्वे की शांति यूनिट** के समान)।	**5-S दृष्टिकोण (सम्मान, संवाद, सहयोग, शांति, समृद्धि)** भारत की स्वतंत्र और संवाद-आधारित विदेश नीति का प्रतीक है।

निष्कर्ष

संघर्ष समाधान में भारत की भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है क्योंकि यह ग्लोबल साउथ के नेतृत्व के रूप में उभर रहा है। भारत अब तात्कालिक प्रतिक्रियाओं की बजाय सक्रिय अंतरराष्ट्रीय भागीदारी की ओर अग्रसर है, और इसका कूटनीतिक प्रयास उसके बढ़ते वैश्विक प्रभाव को दर्शाते हैं।

1.2.2. भारत और ग्लोबल साउथ (India and the Global South)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने वर्चुअल प्रारूप में तीसरे **"वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ शिखर सम्मेलन (VOGSS)"** की मेजबानी की।

अन्य संबंधित तथ्य

- **12 सितंबर, 2024** को **अंतर्राष्ट्रीय साउथ-साउथ कोऑपरेशन दिवस** के तौर पर मनाया गया।
- यह दिवस **1978** में अपनाई गई **ब्यूनस आयर्स प्लान ऑफ़ एक्शन** के उपलक्ष्य में मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य विकासशील देशों के बीच त**कनीकी सहयोग को प्रोत्साहित करना और उसे प्रभावी रूप से लागू करना** है।

ग्लोबल साउथ क्या है?

- **ग्लोबल साउथ शब्दावली सामान्यतः** तकनीकी और सामाजिक रूप से अल्पविकसित देशों को व्यक्त करती है। ये देश मुख्य रूप से दक्षिणी गोलार्ध में अवस्थित हैं। इनमें अधिकतर अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के देश शामिल हैं।
- **ब्रांट रिपोर्ट** में **उत्तरी और दक्षिणी गोलार्ध** के देशों के बीच उनकी **प्रौद्योगिकी संबंधी प्रगति, सकल घरेलू उत्पाद, आदि** के आधार पर विभाजन का प्रस्ताव दिया गया था।

ग्लोबल साउथ द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियां

- **वैश्विक मंचों पर कम प्रतिनिधित्व:** ग्लोबल साउथ के देशों (अफ्रीकी एवं लैटिन अमेरिका क्षेत्र) को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता से बाहर रखा गया है।
- **उच्च सार्वजनिक ऋण:** विकासशील देशों का सार्वजनिक ऋण विकसित देशों की तुलना में दोगुनी दर से बढ़ रहा है (अंकटाड)।
- **जलवायु परिवर्तन का अधिक खतरा: समुद्र के बढ़ते जलस्तर के कारण प्रशांत द्वीप समूह के देश सबसे अधिक जोखिमपूर्ण स्थिति** में हैं {विश्व मौसम विज्ञान संगठन (WMO)}।
- **अलग-अलग दृष्टिकोण:** लोकतंत्र, मानवाधिकार, आदि की व्याख्या को लेकर ग्लोबल नॉर्थ और ग्लोबल साउथ के बीच आम सहमति का अभाव है।

ब्रांट लाइन

भारत के लिए ग्लोबल साउथ का महत्त्व

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव:** ग्लोबल साउथ भारत के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव और उसके आर्थिक परिवर्तन एवं विकास के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।
- **रणनीतिक विचार:** ग्लोबल साउथ के साथ संबंध भारत की "मल्टीडायरेक्शनल एलाइनमेंट (बहुआयामी संरेखण)" रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।
  - यह रणनीति चीन के प्रभाव को कम करने में भी मदद करती है।
- **आर्थिक विकास:** ग्लोबल साउथ के देशों में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में मौजूद हैं। साथ ही, ये भारतीय उत्पादों के निर्यात के लिए एक विशाल बाजार प्रदान करते हैं।

भारत स्वयं को ग्लोबल साउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में कैसे स्थापित कर रहा है?

- **परियोजनाएं शुरू करके:** साझेदार देशों को वित्तीय, बजटीय और मानवीय सहायता प्रदान करना।
- **क्षमता निर्माण और ग्लोबल साउथ के प्रथम सहायता प्रदाता के रूप में उभरना:** उदाहरण के लिए, भारत-संयुक्त राष्ट्र क्षमता निर्माण पहल; कोविड-19 के दौरान वैक्सीन मैत्री पहल; ऑपरेशन ब्रह्मा (म्यांमार)।

 © Vision IAS

- **वैश्विक जलवायु एजेंडे का नेतृत्व करना:** उदाहरण के लिए- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) आपदा-रोधी अवसंरचना गठबंधन (CDRI); साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (CBDR) का समर्थन करना आदि।
- **अंतर्राष्ट्रीय बहुपक्षीय संस्थाओं में सुधार:** जैसे- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता का विस्तार करने की मांग।
- **लोकतंत्र और मानवाधिकार जैसे मुद्दों पर वैकल्पिक तंत्र:** उदाहरण के लिए- पंचशील, गुजराल सिद्धांत और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के सिद्धांतों पर आधारित वैकल्पिक तंत्र।

ग्लोबल साउथ के लिए भारत की पहलें

- **सामाजिक प्रभाव कोष (Social Impact Fund):** भारत इस कोष के माध्यम से ग्लोबल साउथ में डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर (DPI) को मजबूत करने के लिए 25 मिलियन डॉलर का योगदान देगा।
- **ग्लोबल साउथ यंग डिप्लोमैट फोरम:** इसे शिक्षा और क्षमता निर्माण को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है।
- **अफ्रीकी संघ को G20 में शामिल करना:** अफ्रीकी संघ को भारत की G20 अध्यक्षता के दौरान स्थायी सदस्य के रूप में G20 में शामिल किया गया।
- **आरोग्य मैत्री का विज़न:** 'एक विश्व-एक स्वास्थ्य' भारत का स्वास्थ्य सुरक्षा मिशन है।

ग्लोबल साउथ का नेतृत्व करने में भारत के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **चीन के साथ प्रतिस्पर्धा:** चीन की बेल्ट एंड रोड पहल, चेक बुक डिप्लोमेसी इसके कुछ उदाहरण हैं।
- **कूटनीतिक चुनौती:** ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व करने का प्रयास करते हुए संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस जैसी शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी को संतुलित करना कूटनीतिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- **सीमित विस्तृत राष्ट्रीय शक्ति:** भारत की सीमित राष्ट्रीय क्षमता और विनिर्माण उद्योग का निम्न स्तर; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में कम इनोवेशन तथा कुशल कर्मियों की कमी, ग्लोबल साउथ की समस्याओं का समाधान करने में चुनौतियां पेश करते हैं।
- **साउथ-साउथ कोऑपरेशन में अलग-अलग देशों के अलग-अलग हित:** देशों के आर्थिक, सांस्कृतिक और विकास से जुड़ी अपनी-अपनी प्राथमिकताएं हैं; जैसे स्थलबद्ध अफ्रीकी राष्ट्रों और द्वीपीय राष्ट्रों की प्राथमिकताओं में अन्तर।

निष्कर्ष

ग्लोबल साउथ को सशक्त बनाने के लिए **एकता, समानता और नवाचार की आवश्यकता** है। इसके अलावा संयुक्त वित्तपोषण कोष की स्थापना, G20 जैसे मंचों का लाभ उठाने जैसे प्रयासों की भी आवश्यकता है। भारत द्वारा वॉइस ऑफ ग्लोबल साउथ सम्मेलन का आयोजन और प्रधान मंत्री द्वारा प्रस्तावित **ग्लोबल डेवलपमेंट कॉम्पैक्ट** रुख में बदलाव के संकेत हैं। यह बदलाव **'चेकबुक डिप्लोमेसी'** से जन-केन्द्रित, ऋण-रहित, क्लाइमेट-स्मार्ट और तकनीक-साझा करने पर वैश्विक नेतृत्व में झलकता है।

1.3. मिनीलैटरल का उदय (Rise of Minilaterals)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन की आक्रामकता ने **'स्क्वाड (SQUAD)'** के उद्भव को प्रेरित किया है। यह **संयुक्त राज्य अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया** और **फिलीपींस** के बीच एक मिनिलैटरल समूह है।

अन्य संबंधित तथ्य

- स्क्वाड को इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा आधारित मिनीलैटरल समूहों की श्रृंखला में किए गए एक अतिरिक्त प्रयास के रूप में देखा जा रहा है। इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में सुरक्षा आधारित कुछ अन्य मिनीलैटरल समूह हैं- **क्वाड (QUAD); ऑकस (AUKUS); संयुक्त राज्य अमेरिका-फिलीपींस-जापान त्रिपक्षीय समूह; संयुक्त राज्य अमेरिका-जापान-दक्षिण कोरिया त्रिपक्षीय समूह** आदि।
- स्क्वाड के गठन ने वर्तमान विश्व व्यवस्था में सहयोग के साधन के रूप में **मिनीलैटरलिज्म की बढ़ती प्राथमिकता** को रेखांकित किया है।

मिनीलैटरल समूह क्या होते हैं?

- मिनीलैटरल समूह एक प्रकार के **अनौपचारिक और लक्षित समूह** होते हैं। इनमें शामिल देशों की संख्या **कम (आमतौर पर 3 या 4)** होती है। ये देश समान हितों को साझा करते हैं तथा किसी विशिष्ट खतरे, आकस्मिक चुनौती अथवा सुरक्षा संबंधी खतरे को एक निश्चित समय-सीमा के भीतर संयुक्त रूप से निपटाने का प्रयास करते हैं।

मिनीलैटरल समूहों के उदय के पीछे उत्तरदायी कारण

बहुपक्षीय संस्थाओं की विफलता

- नई और उभरती वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है (उदाहरण के लिए, **आसियान के सदस्य देश** दक्षिण चीन सागर में चीन की आक्रामक कार्रवाई की निंदा करने में विफल रहे हैं)।
- **महाशक्तियों के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता** आम सहमति को बाधित कर रही है (उदाहरण के लिए, WTO की विवाद समाधान प्रणाली की विफलता, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार की मांग को गंभीरता से न लेना आदि।)
- **चीन के अधिक आक्रामक** होने के कारण **क्वाड, AUKUS** जैसे मिनीलैटरल समूहों का उदय हुआ है।
- **कोविड-19 महामारी ने** बहुपक्षीय संस्थाओं की कमजोरियों को उजागर किया है (उदाहरण के लिए, **WHO महामारी के प्रकोप से निपटने में विफल रहा)।**
- **बहुमत द्वारा अनुचित व्यवहार-** विकसित देश, विकासशील देशों की उच्च सौदेबाजी की क्षमता को बहुमत द्वारा किए जाने वाले अनुचित व्यवहार की तरह देखते हैं {उदाहरण के लिए- जलवायु संबंधी कार्रवाई में विकासशील देशों द्वारा 'साझा लेकिन विभेदित जिम्मेदारियों (CBDR) के सिद्धांत' की मांग से असहमत हैं}।

मिनीलैटरलिज्म के लाभ

- मिनीलैटरलिज्म का दृष्टिकोण पारंपरिक बहुपक्षवाद के कठोर ढांचे से मुक्त होता है और देशों को अधिक स्वायत्तता देता है, इससे निर्णय लेने की प्रक्रिया तेज हो जाती है।
- **मुद्दा आधारित सहयोग** समान विचारधारा वाले देशों को एक साथ आने में सक्षम बनाता है (जैसे- **ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान के बीच शुरू की गई आपूर्ति-श्रृंखला लचीलापन पहल)।**
- **वि-वैश्वीकरण (De-globalization) और संरक्षणवादी प्रवृत्तियों में वृद्धि** बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग को मुश्किल बनाती है (उदाहरण के लिए **संयुक्त राज्य अमेरिका व चीन के बीच व्यापार युद्ध)।**

मिनीलैटरल समूहों से भारत को मिलने वाले लाभ

- **रणनीतिक स्वायत्तता और कई फोरम्स के साथ सहयोग:** यह भारत को किसी एक गुट पर अत्यधिक निर्भर रहे बिना अलग-अलग फ़ोरम्स के साथ साझेदारी बढ़ाने का अवसर प्रदान करता है (जैसे, हिंद-प्रशांत क्षेत्र की स्थिरता के लिए **क्वाड**)।
- **ग्लोबल साउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत:** पश्चिमी और विकासशील देशों के हितों के बीच अंतर को करता है (उदाहरण के लिए, वैश्विक संस्थानों और दक्षिण-दक्षिण सहयोग में सुधार के लिए **भारत-ब्राजील-दक्षिण अफ्रीका (IBSA) त्रिपक्षीय सहयोग मंच** की स्थापना।)
- **साझा हितों वाले देशों के साथ सह-साझेदारी**: उदाहरण के लिए- **ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस व भारत त्रिपक्षीय गठबंधन** क्षेत्रीय सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित कर रहा है। इसी प्रकार, **भारत-ईरान-आर्मेनिया त्रिपक्षीय गुट** अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) को बढ़ावा देने के लिए परस्पर सहयोग पर आधारित है।
- **अन्य देशों के सहयोग से समस्याओं का समाधान:** खाद्य, जल और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु समूहों का उपयोग (उदाहरण के लिए: I2U2 फोरम के माध्यम से संयुक्त अरब अमीरात, अमेरिका, इजरायल के साथ तकनीक-आधारित कृषि में सहयोग)।
- **विविध रणनीतिक नेटवर्क:** प्रतिद्वंद्वी गुटों से साझेदारी बढ़ाने में मदद {उदाहरण के लिए: क्वाड के माध्यम से पश्चिमी देशों के साथ साझेदारी तथा अंतर्राष्ट्रीय उत्तर दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) के माध्यम से ईरान व रूस के साथ साझेदारी)।
- **चीन पर निर्भरता में कमी:** देश अति महत्वपूर्ण वस्तुओं की आपूर्ति जारी रखने के लिए अन्य स्रोतों बढ़ाना (उदाहरण के लिए: **चिप 4 अलायन्स**) और वैकल्पिक गठबंधनों में शामिल होना।

मिनीलैटरल समूहों से जुड़ी चुनौतियां

- **प्रमुख हितधारकों को शामिल करने से ग्लोबल साउथ का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता:** उदाहरण के लिए **भारत-फ्रांस-ऑस्ट्रेलिया त्रिपक्षीय समूह** में हिंद-प्रशांत क्षेत्र के कई देशों को शामिल नहीं किया गया है।
- **छोटे समूहों के पास** जलवायु परिवर्तन जैसी जटिल वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए **पर्याप्त सामूहिक संसाधन नहीं हैं।**
- **कुछ देशों को समूह से बाहर रखने की राजनीती के खतरे**: इससे भूराजनीतिक तनाव बढ़ता है (उदाहरण के लिए- **चीन क्वाड को 'एशियाई NATO' के रूप में संबोधित** करता है।)

© Vision IAS

- **मिनीलैटरल समूह अनौपचारिक** होते हैं। ऐसे में समझौतों की निगरानी और लागू करने की इनकी क्षमता कम होती हैं: उदाहरण के लिए, **सप्लाई चैन रेज़ीलिएंस इनीशिएटिव (SCRI)** में बाध्यकारी प्रतिबद्धताओं की कमी है।
- **अनौपचारिक प्रकृति और उचित संरचनाएं नहीं होने** के कारण देशों की नीतियों को प्रभावित करने में ये समूह अधिक सफल नहीं होते हैं।
- **बहुपक्षवाद को कमजोर करना:** ये छोटे-छोटे समूह ग्लोबल गवर्नेंस व्यवस्था को खंडित करते हैं (उदाहरण: WTO में किसी मुद्दे पर व्यवस्थित आम सहमति होती है जबकि QUAD जैसे छोटे समूह की अभी तक भूमिकाएं ही स्पष्ट नहीं हो पाई हैं)।

निष्कर्ष

भारत को ***सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय*** के दर्शन के अनुरूप **बहुपक्षवाद के साथ-साथ मिनीलैटरलिज्म** की अवधारणा को भी अपनाना चाहिए। इसके अलावा, भारत को अल्पावधि में मिनीलैटरल के मार्ग का उपयोग करते हुए **सार्वभौमिक नियम आधारित फ्रेमवर्क** की सुरक्षा के लिए बहुपक्षीय स्तर पर सुधारों पर जोर देते रहना चाहिए।

1.4. वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए भू-राजनीतिक खतरे (Geopolitical Risk to Global Economy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) की वैश्विक वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के अनुसार, **वैश्विक भू-राजनीतिक जोखिमों का उच्च स्तर** बना हुआ है। इन जोखिमों के व्यापक **वित्तीय स्थिरता पर बढ़ते प्रभाव को लेकर चिंताएं** भी बढ़ रही हैं।

अन्य संबंधित तथ्य

- विश्व स्तर पर **आर्थिक एकीकरण से भू-आर्थिक विखंडन (GEF)[2] की ओर वैश्विक बदलाव** वास्तव में वैश्वीकरण के स्थानापन्न का संकेतक है।
- **भू-आर्थिक विखंडन (GEF):** यह रणनीतिक कारणों से वैश्विक आर्थिक एकीकरण की नीति से पीछे हटना है। इन रणनीतिक कारणों में **फ्रेंडशोरिंग, नियरशोरिंग,** और **देशों की आर्थिक निर्भरता का फायदा उठाना** शामिल हैं।
- **भू-आर्थिक विखंडन के माध्यम:**
  - **भू-राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देना**: बहुपक्षवाद (मल्टीलैटेरिज्म) से पीछे हटना, आर्थिक समूहों का उदय और रणनीतिक हित आधारित राष्ट्रीय नीतियाँ।
  - **व्यापार प्रतिबंध**: शुल्क (टैरिफ), गैर-प्रशुल्क बाधाएं, मुद्रा के विनिमय मूल्य में हेरफेर। उदाहरण के लिए: अमेरिका का CAATSA अधिनियम।

भू-राजनीतिक जोखिम

- **व्यापार का हथियार के रूप उपयोग**: विदेश नीति के निर्धारक के रूप में व्यापार नीतियों और साधनों का रणनीतिक उपयोग किया जा रहा है, जिसका उद्देश्य किसी साझेदार देश की नीतियों या कार्यों को प्रभावित करना होता है, विशेषकर देशों के व्यापारिक संकटों का लाभ उठाकर।
  - अमेरिका द्वारा रूस से तेल खरीदने वाले देशों (जैसे भारत) पर **सेकेंडरी प्रशुल्क** लगाने की धमकी।
  - **भारत के 1974 और 1998 के परमाणु परीक्षणों के बाद** पश्चिमी देशों द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के कारण भारत को अपने परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों के लिए अपने थोरियम भंडारों पर निर्भरता बढ़ानी पड़ी।
- **आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित करने वाले विविध जोखिम:** देशों के बीच प्रतिस्पर्धा और संघर्ष, संसाधन प्राप्त करने की होड़, साइबर अटैक जैसी चुनौतियों के कारण वस्तुओं की आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हो सकती हैं।
- **कर व्यवस्था में एकरूपता का अभाव:** उदाहरण के लिए, जहां एक ओर कई देश **मिनिमम ग्लोबल टैक्स** को अपना रहे हैं, तो दूसरी ओर कुछ देश **बहुपक्षीय टैक्स समझौतों से बाहर** निकल रहे हैं।
- **कार्यबल पर जनसांख्यिकीय, तकनीकी और सांस्कृतिक दबाव:** विकसित देशों की आबादी में जहां एक ओर **वृद्ध लोगों का अनुपात** और **सेवानिवृत्त होने वाले लोगों की जनसंख्या** बढ़ रही है, वहीं दूसरी ओर इन देशों में **जन्म दर कम** हो रही है।
  - देशों और समुदायों के बीच सांस्कृतिक संघर्ष में वृद्धि हुई है। इसी तरह आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) के बढ़ते उपयोग से भी जोखिम में वृद्धि हुई है।

[2] Geo-Economic Fragmentation

भू-राजनीतिक खतरों के प्रभाव

- **वित्तीय खतरों की चपेट में अन्य देशों का आना:** भू-राजनीतिक खतरें व्यापार और वित्तीय संबंधों के माध्यम से अन्य देशों में फैल सकते हैं। इससे विश्व के कई देश आर्थिक संकट की चपेट में आ सकते हैं।
- **मैक्रोइकॉनॉमिक प्रभाव:** खतरों के बढ़ने से आर्थिक व्यवधान उत्पन्न हो सकते हैं। इनमें आपूर्ति श्रृंखला का बाधित होना और पूंजी का देश से बाहर निकलना जैसे आर्थिक व्यवधान शामिल हैं।
- **निवेशकों का विश्वास कम होना:** आमतौर पर भू-राजनीतिक खतरें निवेशकों के विश्वास को कम करते हैं। इससे बाजार में अनिश्चितता और अस्थिरता बढ़ती है।
    - उदाहरण के लिए, अमेरिका-चीन व्यापार युद्ध की वजह से हाल में **दोनों देशों के शेयर बाजारों में भारी गिरावट** दर्ज की गई।
- **बहुपक्षीय संस्थान पर प्रभाव**: देशों के बीच सहयोग को कम करता है और एक-दूसरे पर विश्वास कमजोर करता है; उदाहरण के लिए; **WTO के विवाद निपटान तंत्र का निष्क्रिय हो जाना।**
- **सॉवरेन जोखिम:** सैन्य खर्च में बढ़ोतरी और आर्थिक मंदी के चलते कई देशों का सरकारी ऋण, उनके सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की तुलना में तेजी से बढ़ रहा है। इससे उनकी वित्तीय स्थिरता पर संकट गहराता जा रहा है और बढ़ते कर्ज भार के कारण डिफॉल्ट (ऋण न चुकाने) होने का खतरा भी बढ़ता जा रहा है।

भू-राजनीतिक जोखिमों से निपटने हेतु मुख्य नीतिगत सिफारिशें

- **वित्तीय स्थिति की निगरानी बढ़ाना:** नीति निर्माताओं को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि देश-विशेष के भू-राजनीतिक जोखिमों पर लगातार नज़र रखी जाए और उनसे निपटने के लिए उपयुक्त नीतिगत उपाय अपनाए जाएं।
- **पूंजी भंडार बढ़ाना:** पर्याप्त मात्रा में पूंजी और लिक्विडिटी सुरक्षित रखनी चाहिए।
- **वित्तीय बाजारों को मजबूत करना:** उभरती अर्थव्यवस्थाओं को कठोर नियम बनाकर वित्तीय बाजारों को मजबूत और परिपक्व बनाना चाहिए।
- **मैक्रोइकॉनॉमिक बफर बनाए रखना:** आर्थिक संकट से निपटने के लिए सरकारों को खर्च बढ़ाने और कर कटौती जैसे राजकोषीय राहत देने के लिए तैयार रहना चाहिए।
- **संकट से निपटने के लिए तैयार रहना:** बढ़ते भू-राजनीतिक तनावों से उत्पन्न वित्तीय अस्थिरता से निपटने के लिए मजबूत नीतिगत फ्रेमवर्क तैयार करना चाहिए।
- **आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहलों को बढ़ावा देना: आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल/SCRI** (ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान), **इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रोस्पेरिटी (IPEF)**, **खनिज सुरक्षा भागीदारी (MSP)** आदि।
- **किसी एक देश के प्रभुत्व को समाप्त करना चाहिए:** उदाहरणार्थ, **चाइना प्लस वन** रणनीति को बढ़ावा देना चाहिए जो केवल चीन में निवेश करने की बजाय अन्य देशों में भी निवेश का समर्थन करती है।

निष्कर्ष

एक रिपोर्ट के अनुसार IMF द्वारा पहचाने गए **80% खतरें आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और व्यापार युद्धों से जुड़े** हैं। इस तरह **बढ़ते भू-आर्थिक विखंडन (GEF)** के दौर में वित्तीय सुरक्षा, रणनीतिक भंडार रखने और संकट से निपटने की तैयारी जैसी सक्रिय नीतियाँ अत्यंत आवश्यक हैं, ताकि संसाधन पर किसी देश के प्रभुत्व से उत्पन्न खतरों, **आपूर्ति श्रृंखला से जुड़े संकटों,** और वि-वैश्वीकृत हो रहे विश्व में निवेशकों के बारे अनिश्चितताओं से जुड़े खतरों से निपटा जा सके।

1.4.1. चाइना-प्लस-वन रणनीति (China-Plus-One Strategy)

चाइना-प्लस-वन रणनीति

चाइना-प्लस-वन रणनीति क्या है?
चाइना-प्लस-वन रणनीति में कंपनियां केवल चीन में निवेश करने से बचती हैं तथा अपने कारोबार को कुछ अन्य देशों में भी संचालित करती हैं। वर्ष 2013 में गढ़ी गई यह शब्दावली एक **वैश्विक व्यापार रणनीति** है।

पृष्ठभूमि: इसका उदय क्यों हुआ?

चीन में पश्चिमी देशों के 30 वर्षों के निवेश का कारण: › **कम श्रम और उत्पादन लागत।** › **तेजी से बढ़ता** घरेलू उपभोक्ता बाजार।	**इसके परिणामस्वरूप:** › वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का चीन में **अत्यधिक संकेंद्रण। उदाहरण के लिए-** दुर्लभ मृदा तत्व (REE) पर चीन का वर्चस्व। › चीन से निरंतर आपूर्ति पर खतरा। **उदाहरण के लिए-** चीन द्वारा REE के निर्यात पर प्रतिबंध/सीमाएं।

बदलाव के पीछे प्रमुख प्रेरक तत्व

अमेरिका-चीन व्यापार तनाव: 2010 के अंत में दोनों देशों के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया, जिससे बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को विकल्प तलाशने पर मजबूर होना पड़ा।	चीन में **श्रम और कानूनों के पालन की लागत का बढ़ना।**	**चीन की नीतियों पर देशों का विश्वास कम हो जाना:** उदाहरण के लिए- इटली और ब्राजील का 'बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)' से बाहर होना।	**डेटा उपयोग के सख्त नियम:** नवंबर 2021 से लागू चीन का **व्यक्तिगत सूचना संरक्षण कानून की के पालन की व्यवसाय लागत बढ़ गई है।**	**आपूर्ति श्रृंखलाओं को मजबूत बनाने के लिए वैश्विक प्रयास,** जैसे- **18-देशों का रोडमैप 2022.**

भारत इस रणनीति का लाभ उठाने में क्यों पीछे रह गया है?

वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में **भारत की घटती भागीदारी।**	वैश्विक आपूर्ति नेटवर्क के साथ कम **एकीकरण।**	**संरक्षणवादी व्यापार नीतियाँ:** व्यापार उदारीकरण की तुलना में आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता।	**भारत ने प्रमुख क्षेत्रीय** व्यापार समझौतों में शामिल होने से **परहेज** किया {जैसे- (क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) में भारत शामिल नहीं हुआ}।

भारत के लिए आगे की राह

वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं के साथ एकीकरण पर ध्यान केन्द्रित करना। **उदाहरण के लिए- एप्पल की iPhone श्रृंखला** - उत्पादन-से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजनाएं।	निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता और विनियामक पारदर्शिता को बढ़ावा देना। **उदाहरण के लिए-** राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (NSWS)।	चीन के विकल्प की तलाश कर रहे निवेशकों को आकर्षित करने के लिए रणनीतिक मुक्त व्यापार समझौते (FTA) करना चाहिए। **उदाहरण के लिए-** यूनाइटेड किंगडम के साथ मुक्त व्यापार समझौता (2025 में समझौता सम्पन्न हुआ)

निष्कर्ष
संयुक्त राज्य अमेरिका से **लगभग 4 ट्रिलियन डॉलर** का निवेश बाहर जाता है, यदि भारत को इसका **केवल 5% भी मिल** जाए, तो इससे **प्रतिवर्ष भारत को 200 बिलियन डॉलर की विदेशी निवेश प्राप्त** हो सकता है, जो वर्तमान में भारत के **सकल घरेलू उत्पाद (GDP) के 2.5%** के विदेशी निवेश को दोगुना कर देगा।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
UPSC के लिए करेंट अफेयर्स
की समग्र तैयारी हेतु एकमात्र समाधान
Digital Current Affairs 2.0
मुख्य विशेषताएं:
विजन इंटेलिजेंस
डेली प्रैक्टिस
डेली न्यूज समरी
स्टूडेंट डैशबोर्ड
क्विक नोट्स और हाइलाइट्स
संधान तक पहुंच की सुविधा

1.5. अंतरिक्ष कूटनीति: एक नज़र में (Space Diplomacy at a Glance)

अंतरिक्ष कूटनीति

भारत ने 60 से अधिक देशों और कई बहुपक्षीय संगठनों के साथ **सहयोगात्मक समझौतों पर हस्ताक्षर करके अपनी अंतरिक्ष कूटनीति** का विस्तार किया है। इनमें से **अधिकांश समझौते पिछले पांच वर्षों में संपन्न हुए हैं।**

अंतरिक्ष कूटनीति क्या है?
- **अंतरिक्ष कूटनीति, वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने, राष्ट्रों के बीच संबंधों को मज़बूत करने और विदेश नीति के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए** अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना है।
- **यह देशों को** साझा **चुनौतियों से निपटने में** सहयोग करने में **सक्षम** बनाती है।

अंतरिक्ष कूटनीति की दिशा में भारत के प्रयास

वैश्विक सहयोग प्रमुख परियोजनाएँ: निसार (NISAR) मिशन, **आर्टेमिस एकॉर्ड** में भारत की भागीदारी।	**उपग्रह प्रक्षेपण 163 विदेशी उपग्रहों** का प्रक्षेपण **(2019-24)। नेपाल** को उपग्रह विकास में सहायता प्रदान की।	**नाविक (NavIC) नेविगेशन प्रणाली: GPS और बेईदोउ** का भारत का विकल्प, विश्व में अपने परिचालन का विस्तार।	**दक्षिण-दक्षिण सहयोग: दक्षिण एशिया उपग्रह (2017):** संचार और आपदा प्रबंधन में सहायता।	**अंतरिक्ष सुरक्षा:** संयुक्त राष्ट्र में PAROS (बाह्य अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ की रोकथाम) का समर्थन।

अंतरिक्ष कूटनीति का महत्व

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देती है: उदाहरण के लिए; अमेरिका, रूस, यूरोप आदि के सहयोग से निर्मित **अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन (ISS)।**	**वैश्विक चुनौतियों का समाधान करती है:** उदाहरण के लिए, आपदाओं से निटपने के लिए **उपग्रह डेटा साझा** करना।	**संघर्ष को रोकती है और शस्त्र नियंत्रण सुनिश्चित करती है:** उदाहरण के लिए, बाह्य अंतरिक्ष संधि (1967) अंतरिक्ष में 'सामूहिक विनाश के हथियारों' पर प्रतिबंध लगाती है।	**अंतरिक्ष कानून और प्रशासन सुनिश्चित करती है: उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र COPUOS** अंतरिक्ष कानूनों और नीतियों पर चर्चा करता है।	**अंतरिक्ष कचरे से जुड़े जोखिमों को कम करती है: IADC** अंतरिक्ष मलबे को कम करने के प्रयासों का समन्वय करती है।

भारत की अंतरिक्ष कूटनीति में चुनौतियां

नेतृत्व और सहयोग में संतुलन: उदाहरण के लिए, सार्क उपग्रह भारत के क्षेत्रीय प्रभाव को बढ़ाता है, लेकिन पड़ोसियों की तकनीकी निर्भरता को लेकर चिंताएँ भी बढ़ाती है।	**तकनीकी कमियाँ:** कुछ अत्याधुनिक अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों के मामले में भारत **अमेरिका और चीन** से पीछे है।	**दोहरे उपयोग वाली तकनीक को लेकर चिंताएँ:** भारत द्वारा एंटी-सैटेलाइट **(ASAT)** का **परीक्षण** और मिसाइल कार्यक्रम कई देशों की नजर में है। .	**निजी क्षेत्र की भागीदारी:** सरकारी नियंत्रण बनाए रखते हुए निजी अंतरिक्ष कंपनियों का प्रबंधन जटिल बना हुआ है।

भारत की अंतरिक्ष कूटनीति के लिए आगे की राह

वैश्विक अंतरिक्ष शासन को नेतृत्व प्रदान करना अंतरिक्ष कचरा प्रबंधन हेतु रूपरेखा प्रस्तावित करने हेतु **पुन: उपयोग वाले प्रक्षेपण यान (RLV)** तकनीक का लाभ उठाना चाहिए।	**अंतरिक्ष सुरक्षा और रणनीतिक साझेदारियाँ अंतरिक्ष स्थितिजन्य जागरूकता (SSA)** और सैटेलाइट नेविगेशन पर क्वाड सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए। उपग्रह द्वारा निगरानी के लिए **इजरायल और फ्रांस** के साथ रक्षा संबंधों को मजबूत करना चाहिए।	**वाणिज्यिक अंतरिक्ष कूटनीति:** वैश्विक ग्राहकों को आकर्षित करने के लिए **न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL)** के माध्यम से कम **लागत में उपग्रह प्रक्षेपणों** का प्रस्ताव करना चाहिए।	**ग्लोबल साउथ के क्षमता निर्माण में सहयोग कम लागत में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी आधारित समाधान उपलब्ध कराना** (जैसे-ग्राउंड स्टेशन, लघु उपग्रह प्रक्षेपण सेवाएं) प्रदान करना। विकासशील देशों के वैज्ञानिकों को प्रशिक्षित करने के लिए **उन्नति कार्यक्रम का विस्तार करना चाहिए।**

निष्कर्ष

ग्लोबल साउथ के देशों को कूटनीति के माध्यम से समतापूर्ण अंतरिक्ष शासन को आकार देना चाहिए, तथा अंतर्राष्ट्रीय नियमों और मानदंडों में निष्पक्षता का समर्थन करते हुए अंतरिक्ष क्षमताओं का शांतिपूर्ण विस्तार सुनिश्चित करना चाहिए।

© Vision IAS

1.6. परमाणु हथियार शस्त्रागार (Rise in Nuclear Weapons Arsenal)

सुर्ख़ियों में क्यों?

स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) ने अपनी **"SIPRI ईयर बुक रिपोर्ट, 2024"** जारी की है। इस रिपोर्ट में **परमाणु हथियारों के विकास और तैनाती में चिंताजनक वृद्धि** पर प्रकाश डाला गया है।

वैश्विक परमाणु रुझान और भारत की स्थिति से जुड़े मुख्य बिंदु

- **भारत के परमाणु शस्त्रागार (आयुध) में वृद्धि**
  - **परमाणु हथियारों (वॉरहेड) में वृद्धि:** भारत के पास 2023 में 164 परमाणु हथियार थे जो से बढ़कर 2024 में 172 हो गए। भारत के पास पाकिस्तान से दो परमाणु हथियार अधिक हैं।
  - **आधुनिकीकरण की दिशा में कदम:** यह वैश्विक ट्रेंड के अनुरूप है, जहाँ परमाणु हथियार वाले 9 देश अपने आयुधों को आधुनिक बना रहे हैं (जैसे, परमाणु हमले की नई प्रणालियाँ)।
- **विश्व में परमाणु हथियारों की स्थिति**
  - **कुल परमाणु हथियार:** विश्व में कुल 12,121 परमाणु हथियार हैं, जिनमें से लगभग **2,100 हाई अलर्ट पर** हैं (लॉन्च के लिए तैयार)।
  - **पारदर्शिता में कमी:** अमेरिका और रूस के बीच बढ़ते तनाव के कारण परमाणु हथियारों से संबंधित डेटा कम साझा किए जा रहे हैं।
  - **ऑपरेशनल सक्रियता में वृद्धि:** जहाँ परमाणु हथियारों कुल संख्या कम हो रही है, वहीं तैनात/प्रयुक्त किए जा सकने वाले वॉरहेड्स हर साल बढ़ रहे हैं।

राष्ट्र परमाणु हथियार क्यों रखना चाहते हैं?

डेटेरेन्स के माध्यम से सुरक्षा सुनिश्चित करना	घरेलू राजनीतिक दबाव	प्रतिष्ठा और मानदंड
परमाणु हथियार के बहाने आतंकवाद द्वारा ब्लैकमेलिंग का जवाब: **भारत जैसे देश** परमाणु-हथियार रखने वाले शत्रुओं (**जैसे,** चीन-पाकिस्तान एक्सिस) का मुकाबला करने के लिए परमाणु हथियार हासिल करते हैं।	**"परमाणु लॉबी":** सेना, वैज्ञानिक और राजनेता संस्थाओं पर अपनी पकड़ बढ़ाने के लिए परमाणु हथियारों को बढ़ाने पर ज़ोर देते हैं।	**महाशक्ति का प्रतीक:** परमाणु हथियार क्षमता भू-राजनीतिक शक्ति और प्रभाव प्रदान करती है (जैसे, परमाणु हथियार वाले पांच देशों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की स्थायी सदस्यता प्राप्त है)।

परमाणु हथियारों से उत्पन्न खतरे

वैश्विक खतरे की धारणा

- **परमाणु खतरों में वृद्धि:**
  - भू-राजनीतिक तनाव परमाणु निरस्त्रीकरण प्रयासों को बाधित करते हैं। **उदाहरण के लिए-** रूस ने व्यापक परमाणु परीक्षण प्रतिबंध संधि (CTBT) का अनुसमर्थन वापस ले लिया है। साथ ही, नई सामरिक हथियार न्यूनीकरण संधि **(START)** की अपनी सदस्यता को भी निलंबित कर दिया है।
  - **परमाणु धमकी:** 2023 में **रूस** ने चेतावनी दी थी कि **"परमाणु सर्वनाश" "निकट"** आ रहा है। **उत्तर कोरिया** द्वारा संयुक्त राज्य अमेरिका-दक्षिण कोरिया के संयुक्त सैन्य अभ्यासों के जवाब में परमाणु धमकी दी जाती है।
- **यूक्रेन में परमाणु खतरे की आशंका:** उदाहरण के लिए- यूक्रेन के **ज़ापोरिज़्ज़िया परमाणु ऊर्जा संयंत्र** को 2024 **आत्मघाती ड्रोन से निशाना** बनाया गया था जिससे परमाणु दुर्घटना का खतरा बढ़ गया था।
- **बढ़ते खतरे:**
  - **साइबर-परमाणु खतरे:** ये साइबर अटैक परमाणु कमान और नियंत्रण प्रणालियों को भी खतरे में डाल सकते हैं।
  - **अंतरिक्ष परमाणु हथियार:** अंतरिक्ष में परमाणु हथियार के विस्फोट से एक विद्युत चुम्बकीय पल्स उत्पन्न होगी, जो उपग्रहों को अत्यधिक नुकसान पहुंचा सकती हैं। इससे बड़ी मात्रा में मलबा भी बन सकता है।

भारत की परमाणु खतरे से संबंधित धारणा

- **चीन द्वारा परमाणु शस्त्रागार का आधुनिकीकरण:** वह **"न्यूनतम प्रतिरोध"** और **"पहले उपयोग नहीं करने"** की नीति से भी पीछे हट रहा है। इससे क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ती है।
- **पाकिस्तान द्वारा परमाणु हमले की धमकी**
  - **"सामरिक" परमाणु हथियार (TNWs):**
    - TNWs का **भारतीय सेना के 'कोल्ड स्टार्ट डॉक्ट्रिन' का मुकाबला** करने के लिए भी उपयोग किया जा सकता है।
    - भारत ने **'पहले उपयोग नहीं' (नो फर्स्ट यूज) का सिद्धांत अपनाया हुआ है जबकि पाकिस्तान ने ऐसी नीति घोषित नहीं** की है, जिससे **पाकिस्तान द्वारा परमाणु हथियारों के उपयोग का खतरा** बढ़ जाता है।
  - **हथियारों की बढ़ती होड़:**
    - चीन से खतरे को कम करने के लिए भारत परमाणु हथियार बना रहा है, इसी तरह भारत के खतरों को कम करने के लिए पाकिस्तान परमाणु हथियार बना रहा है। इस तरह तनाव का चक्र जारी रहता है।

परमाणु हथियार से जुड़े खतरे को कम करने के उपाय

- संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और NATO देशों की प्रतिबद्ध होना पड़ेगा कि वे NFU (नो-फर्स्ट-यूज़) सिद्धांत को समाप्त करने की धमकी नहीं देंगे।
- सभी सामरिक (टैक्टिकल) परमाणु हथियारों को केंद्रीय भंडारण में रखने और इनका **समय-समय पर सत्यापन करने की अनुमति** देनी चाहिए। **परमाणु हथियारों की संख्या धीरे-धीरे कम** करनी चाहिए।
- देशों को अपने **परमाणु आयुध के आकार को कम करना** चाहिए। साथ ही, **द्विपक्षीय परमाणु समझौता** करना चाहिए। इनमें परमाणु सामग्रियों का हथियार बनाने में उपयोग होने पर इन सामग्रियों की आपूर्ति रोकने से संबंधित प्रावधान होने चाहिए।

निष्कर्ष

"हम यह पुष्टि करते हैं कि परमाणु युद्ध कभी जीता नहीं जा सकता और उसे कभी लड़ा नहीं जाना चाहिए। चूँकि परमाणु हथियारों के प्रयोग के दूरगामी दुष्परिणाम हो सकते हैं, हम यह भी मानते हैं कि जब तक परमाणु हथियार अस्तित्व में हैं, उन्हें केवल रक्षात्मक उद्देश्यों के लिए, आक्रामकता को रोकने और युद्ध की रोकथाम के लिए ही उपयोग किया जाना चाहिए।" — पाँच परमाणु हथियार संपन्न देशों (अमेरिका, चीन, ब्रिटेन, रूस, फ्रांस) के नेताओं का संयुक्त वक्तव्य।

1.7. भारतीय प्रवासी (Indian Diaspora)

सुर्ख़ियों में क्यों?

"विदेश मामलों से संबंधित संसदीय स्थायी समिति (2024-25) ने विदेशों में रहने वाले भारतीय प्रवासियों पर रिपोर्ट जारी की।

भारतीय प्रवासियों या इंडियन डायस्पोरा के बारे में

- भारत सरकार ने 'प्रवासी' समुदाय की कोई सटीक परिभाषा नहीं दी है, लेकिन आमतौर पर इनमें **अप्रवासी भारतीय (NRI) और ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (OCI)** शामिल होते हैं।
    - 2015 में **PIO और OCI कार्डधारकों को OCI नामक एकल श्रेणी में विलय** कर दिया गया।
- **वर्ल्ड माइग्रेशन रिपोर्ट 2024** के अनुसार, **विश्व के देशों में भारतीय समुदाय सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय** (लगभग 1.8 करोड़) है।
- भारतीय प्रवासी समुदायों में अलग-अलग समूहों के लोग शामिल हैं; जैसे कि श्रमिक, व्यापारी, राजनेता, पेशेवर और विद्यार्थी।
- भारत की प्रवासी नीति को **"4C" (केयर, कनेक्ट, सेलिब्रेट & कंट्रीब्यूट)** के रूप में परिभाषित किया जाता है।

भारतीय प्रवासियों का महत्व

भारत के लिए महत्त्व	गंतव्य देशों के लिए महत्त्व
• **सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव:** त्योहारों, भाषाई विद्यालयों और धार्मिक प्रथाओं के माध्यम से **भारतीय परंपराओं का संरक्षण** करते हैं और **एक-दूसरे की संस्कृति को समझने में योगदान** देते हैं। – **फिजी जैसे देशों में गिरमिटिया के रूप में** प्रवासी भारतीय। • **आर्थिक प्रभाव** – **विप्रेषण (रेमिटेंस):** भारत को **2023 में 125 बिलियन डॉलर** प्राप्त हुए, जो **सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 3.4%** है। – **तकनीकी प्रभाव: सुंदर पिचाई (गूगल) और सत्य नडेला (माइक्रोसॉफ्ट)** जैसे भारतीय मूल के व्यक्ति वैश्विक तकनीकी उद्योग को आकार देते हैं। • **राजनीतिक प्रभाव** – **नेतृत्व:** दुनिया भर के कई राजनेताओं की जड़ें भारत से जुड़ी हुई हैं-**उदाहरण के लिए,** ▪ **ऋषि सुनक,** ब्रिटेन के पहले अश्वेत प्रधान मंत्री बने। ▪ **कमला देवी हैरिस, अमेरिका** की पहली महिला और पहली अश्वेत **उपराष्ट्रपति।** – **कूटनीति: प्रवासी भारतीय अपने प्रवास देशों की नीतियों को प्रभावित करते हैं और अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करते हैं।** ▪ **उदाहरण के लिए,** भारतीय अमेरिकी समुदाय ने **भारत-अमेरिका परमाणु समझौता संपन्न कराने** में भूमिका निभाई।	• **विविधता और बहुसंस्कृतिवाद:** भारतीय परंपराओं, भाषाओं आदि के द्वारा स्थानीय संस्कृति को विविधता प्रदान करते हैं। • **श्रम आपूर्ति:** गंतव्य देशों में कार्यबल की कमी को पूरा करता है, खासकर **खाड़ी देशों** में (निर्माण, स्वास्थ्य-देखभाल सेवा, आतिथ्य इत्यादि में)। – **उदाहरण के लिए, लगभग 1 मिलियन की संख्या वाला** भारतीय समुदाय **कुवैत में सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय** है। • **व्यापार और उद्यमिता:** व्यवसाय शुरू करके और रोजगार सृजित करके प्रवासी भारतीय प्रवास वाले देश में आर्थिक विकास को गति देते हैं।

© Vision IAS

भारतीय प्रवासियों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ

1. पश्चिम एशिया में:

- **संघर्ष का क्षेत्र:** बार-बार युद्ध छिड़ने (जैसे; यमन, इजराइल-फिलिस्तीन) से प्रवासियों की जान को खतरा बना रहता है। इन्हें वहां से सुरक्षित बाहर निकालने के लिए बचाव अभियान चलाना पड़ता है जिसमें सरकार को काफी खर्च करना पड़ता है।
- **रोजगार की असुरक्षा:** "सऊदीकरण" जैसी नीतियों की वजह से अल्प-कुशल प्रवासी भारतीय श्रमिकों को विस्थापित होना पड़ता है।
- **डेटा की कमी:** कतर जैसे देशों में प्रवासियों की वास्तविक संख्या पता नहीं चल पाने की वजह से उन्हें समय पर आवश्यक सहायता नहीं मिल पाती है।

2. यूरोप, उत्तर अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया:

- **अलगाववादी आंदोलन:** खालिस्तान-समर्थक उग्रपंथियों के विरोध-प्रदर्शन से राजनयिक संबंधों में तनाव उत्पन्न होता हैं (जैसे अमेरिका, यूके, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया में)।
- **नस्लवाद और भेदभाव:** उपर्युक्त देशों में नस्लीय हिंसा अभी भी जारी है।
- **प्रवासन में बाधाएँ:** सख्त वीजा नियमों की वजह से प्रवासियों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है ।
  - उदाहरण के लिए: **H-1B वीजा धारकों के बच्चों को** अब अमेरिका की नागरिकता स्वतः नहीं मिलती।

प्रवासी भारतीयों के साथ संपर्क बढ़ाने के लिए सरकारी पहलें

भारत को उसके वैश्विक समुदाय से जोड़ना

संस्थागत उपाय

- **प्रवासन अधिनियम (1983):** श्रमिकों के प्रवास और भर्ती एजेंसियों का विनियमन करता है।
- **मंत्रालय का विलय (2016):** बेहतर समन्वय के लिए प्रवासी भारतीय कार्य मंत्रालय का विदेश मंत्रालय में विलय किया गया।

सहभागिता पहल

- **शैक्षणिक कार्यक्रम:** ज्ञान (GIAN), वैभव, प्रभास, वज्र
- **सहयोग को प्रोत्साहित करना।**

डिजिटल माध्यम से आउटरीच

- **ई-माइग्रेट सिस्टम:** ब्लू-कॉलर कर्मियों के प्रवास को प्रशासित करता है।
- **ऑनलाइन मतदाता पंजीकरण:** अनिवासी भारतीय अब ऑनलाइन माध्यम से मतदाता सूची में अपना नाम दर्ज करा सकते हैं।
- **प्रवासी रिश्ता पोर्टल:** विदेश मंत्रालय, भारतीय दूतावास और प्रवासी समुदायों को जोड़ता है।

वैश्विक समझौते

- **माइग्रेशन और मोबिलिटी समझौते (MMPs):** प्रवासियों के कल्याण के लिए फ्रांस, इटली आदि देशों के साथ हस्ताक्षरित।
- **श्रम समझौते (LMAS):** भारतीय श्रमिकों के समर्थन हेतु खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के छह देशों के साथ।

प्रवासियों की सहभागिता को मजबूत करने की दिशा में उपाय:

- **कानूनों में सुधार एवं नीतिगत उपाय:**
  - **आव्रजन विधेयक 2023** को शीघ्र अंतिम रूप देकर लागू करना चाहिए।
  - **प्रवासियों का डेटाबेस रखना:** भारतीय दूतावासों में प्रवासियों के पंजीकरण को प्रोत्साहित करना चाहिए।
  - **शिकायत निवारण तंत्र: 'मदद'** पोर्टल को विस्तार देना चाहिए और CPGRAMS जैसी एकीकृत शिकायत निवारण तंत्र की स्थापना करनी चाहिए।
- **ज्ञान और कौशल का लाभ उठाना:**
  - **कौशल विकास कार्यक्रम:** भारतीयों को विदेश में रोजगार के बेहतर अवसर प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षित करना चाहिए।
  - **प्रवासी नेटवर्क का लाभ उठाना**: पेशेवरों को भारतीय व्यवसायों से जोड़कर **'ब्रेन ड्रेन' को 'ब्रेन गेन'** में बदलना चाहिए।

- **सुरक्षा के उपाय**:
  - **सुविधाओं की पोर्टेबिलिटी:** भारतीयों द्वारा किसी एक देश में सामाजिक सुरक्षा योजनाओं में अंशदान के बाद अन्य देश में प्रवास के बाद भी उनका लाभ उठाने के लिए सरकार को अंतरराष्ट्रीय समझौते करने चाहिए।
  - **पारस्परिक कानूनी सहायता संधियाँ (MLATs):** ये प्रवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करेंगी और सीमा-पार अपराधों से निपटने में सहयोग को मजबूत करेंगी।

निष्कर्ष

भारतीय प्रवासी दुनिया और भारत के बीच "विरासत से जुड़े जीवंत सेतु (Living Root Bridges)" की भूमिका निभाते हैं। इस रूप में वे सांस्कृतिक, आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों को सशक्त करते हैं।

1.8. मुख्य शब्दावलियां (Keywords)

सांस्कृतिक कूटनीति	5-S दृष्टिकोण	बहुदिशात्मक संबंध	गुजराल डॉक्ट्रिन	वाणिज्यिक अंतरिक्ष कूटनीति
युद्धोत्तर बहुपक्षवाद	वैश्विक बहु-संकट	एजेंडा-विशेष गठबंधन	बहुध्रुवीयता की ओर बदलाव	रणनीतिक स्व-सहायता
वि-औपनिवेशीकरण	मिनिलैटरल	बहु-गठबंधन	वॉइस ऑफ द ग्लोबल साउथ	किस देश को समूह से बाहर रखने की राजनीति
त्रिकोणीय सहयोग	भू-आर्थिक विखंडन	फ्रेंडशोरिंग	व्यापार का हथियार के रूप में उपयोग	4C: केयर, कनेक्ट, सेलिब्रेट & कंट्रीब्यूट
बहुसंस्कृतिवाद	चाइना प्लस वन रणनीति	साइबर-परमाणु खतरें		

उत्तर लेखन प्रारूप

Q. दुनिया भर में वैश्विक बहु-संकट के मद्देनजर, नई विश्व व्यवस्था के उदय के लिए उत्तरदायी विभिन्न कारकों पर चर्चा कीजिए। उभरती विश्व व्यवस्था में भारत के लिए अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए।

परिचय	मुख्य भाग: 1	मुख्य भाग: 2	आगे की राह	निष्कर्ष
वैश्विक बहु-संकट की स्थिति को परिभाषित कीजिए।	नई विश्व व्यवस्था और इसके लिए जिम्मेदार विभिन्न कारकों पर चर्चा कीजिए।	नई विश्व व्यवस्था में भारत के लिए अवसरों और चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।	भारत द्वारा नई विश्व व्यवस्था को अपनाने के लिए उठाए गए कदम।	वैश्विक संदर्भ में नई विश्व व्यवस्था के समग्र महत्व के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

2. भारत से जुड़े और/ या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले क्षेत्रीय एवं वैश्विक समूह और समझौते (Regional, and Global Grouping and Agreements Involving India and/or Affecting India's Interest)

2.1. भारत-हिंद प्रशांत: एक नजर में (India-Indo Pacific at a Glance)

भारत और हिंद-प्रशांत

भारत के विदेश मंत्री ने **"हिंद-प्रशांत के बारे में भारत के विजन"** पर कहा कि "केवल जिनकी मानसिकता प्रभाव क्षेत्रों के इर्द-गिर्द ही सीमित है और जो वैश्विक विषयों के लोकतंत्रीकरण से असहज हैं, वे ही आज हिंद-प्रशांत पर विवाद करेंगे"।

हिंद-प्रशांत (IP) के बारे में

- **वैश्विक व्यापार का 50% और 40% तेल व्यापार** हिंद-प्रशांत क्षेत्र से गुजरता है।
- **भारत का 90 प्रतिशत व्यापार** इस क्षेत्र से होता है। इसमें 80 प्रतिशत महत्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार शामिल हैं।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र:** अमेरिका-चीन महाशक्ति प्रतिस्पर्धा का केंद्र बिंदु बन गया है।
- अमेरिका, जापान और ASEAN जैसी प्रमुख शक्तियां अपनी नीतियों में **हिंद-प्रशांत को प्राथमिकता** दे रही हैं।

परिभाषा: "हम हिंद-प्रशांत को एक ऐसा क्षेत्र मानते हैं जो अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर अमेरिका के पश्चिमी तट तक फैला हुआ है।" – **भारत के विदेश मंत्री**

हिंद-प्रशांत के लिए भारत के विज़न के प्रमुख तत्व

- मुक्त, **खुला व समावेशी क्षेत्र।**
- हिंद प्रशांत के केंद्र में **दक्षिण पूर्व एशिया और आसियान।**
- क्षेत्र के लिए एक साझा **नियम-आधारित व्यवस्था** का समर्थन करता है और बल प्रयोग की बजाय संवाद को बढ़ावा देता है।

हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए भारत की नीति

- **हिंद प्रशांत क्षेत्र (IOR) में पारंपरिक भूमिकाओं,** जैसे- सुरक्षा प्रदाता, विकास संबंधी सहायता आदि को **मजबूत और संरक्षित करना।**
- **नौसैनिक रणनीति:** सूचना प्रबंधन और विश्लेषण केंद्र (IMAC) जैसे संस्थानों के माध्यम से समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA)।
- **पहल:** इंडो-पैसिफिक ओशन इनिशिएटिव, हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी, एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर आदि।
- **विदेश नीति: विदेश मंत्रालय के तहत** अलग इंडो-पैसिफिक डिवीजन (IPD), एक्ट ईस्ट पॉलिसी, सागर आदि का उपयोग।

हिंद-प्रशांत में भारत के हित

- इस क्षेत्र में **अपनी उपस्थिति का विस्तार करना।** विशेष रूप से अफ्रीका, मध्य पूर्व और दक्षिण पूर्व एशिया में।
- **निवल सुरक्षा प्रदाता के रूप में अपनी भूमिका बनाए रखना।**
- **चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करना।**

हिंद-प्रशांत के हितों को आगे बढ़ाने में चुनौतियां

- सीमित नौसैनिक क्षमता और सैन्य अड्डों की कमी।
- विभिन्न पहलों के विकास की धीमी गति।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर निश्चित सहमति** का अभाव।

निष्कर्ष

हिंद-प्रशांत क्षेत्र ने वर्तमान में वैश्विक राजनीति को आकार देने में अहम भूमिका निभाई है, और भारत को इस क्षेत्र में केंद्रीय भूमिका निभाने वाले देश के रूप में देखा जाता है।

2.1.1. हिंद-प्रशांत महासागर पहल (Indo-Pacific Oceans Initiative: IPOI)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) के **पांच वर्ष** पूरे हुए।

हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) के बारे में

- यह एक **गैर-संधि आधारित स्वैच्छिक व्यवस्था है, जो स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत तथा नियम-आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था** के लिए सहयोग को बढ़ावा देती है।
- **स्थापना:** भारत ने IPOI को **2019 में बैंकॉक (थाईलैंड) में आयोजित हुए पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS)** के दौरान लॉन्च किया।
- **उद्देश्य:** यह व्यावहारिक सहयोग के जरिए **समान विचारधारा वाले देशों के साथ नई साझेदारी बनाकर एक समुदाय की भावना का निर्माण** करने पर केंद्रित है।
- **सिद्धांत:** यह भारत द्वारा **2015** में शुरू की गई **'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर/ SAGAR)'** पहल की अवधारणा पर आधारित है।
    - सागर पहल का विज़न, अंतर्राष्ट्रीय समुद्री कानूनों एवं मानदंडों का सम्मान करते हुए तथा आर्थिक सहायता और समुद्री सुरक्षा चिंताओं को एक साझा मंच पर लाते हुए **समावेशी विकास को बढ़ावा** देना है।

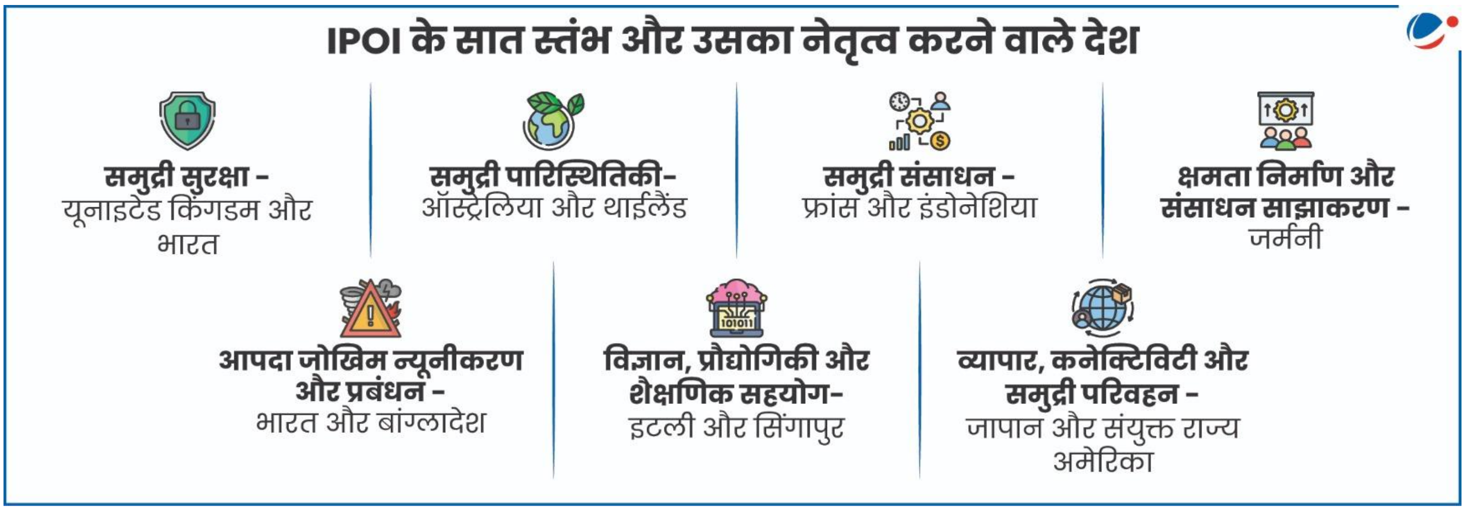

हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) का महत्त्व

- **सामूहिक प्रयासों को समेकित, समन्वित एवं चैनलाइज करना:** यह समुद्री सुरक्षा और सतत विकास के साझा लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में विविध पहलों में समन्वय स्थापित करते हुए क्षेत्रीय भागीदारों को एकजुट करती है।
    - उदाहरण के लिए- **आसियान आउटलुक ऑन इंडो-पैसिफिक (AOIP) और इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI) एक-दूसरे के पूरक** हैं।
- **चीन के आक्रामक व्यवहार से निपटना:** यह **नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था** को बढ़ावा देती है; यह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **चीन के आक्रामक व्यवहार से निपटने में मदद** कर सकती है। (उदाहरण के लिए- 2020 में **भारत और वियतनाम, IPOI के अनुरूप अपने द्विपक्षीय सहयोग** को बढ़ाने पर सहमत हुए थे।)
- **समुद्री सुरक्षा और संसाधन गवर्नेंस:** यह **सहयोग आधारित सुरक्षा** तथा **क्रिटिकल मिनरल्स (लिथियम, दुर्लभ मृदा तत्व) के सतत प्रबंधन** को बढ़ावा देती है।
- **लचीला और समावेशी फ्रेमवर्क:** इसके **समझौते बाध्यकारी नहीं** हैं इसलिए **नए खतरों के अनुरूप अनुकूल प्रतिक्रिया निर्धारित** करने में मदद करती है।

हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI) के समक्ष प्रमुख चुनौतियां:

- **संस्थागत क्षमता एवं कार्रवाई की कमी:** इस पहल के प्रत्येक स्तंभ के लिए सुपरिभाषित दिशा एवं एजेंडा का अभाव है। (जैसे; समुद्री पारिस्थितिकी. सुरक्षा स्तंभ).
- **भू-राजनीतिक तनाव:** चीन **IPOI** को उसका **विरोध करने वाली रणनीतियों का हिस्सा** मानता है।

© Vision IAS

- **संसाधन की कमी और देशों के अलग-अलग नियमों से जुड़ी बाधाएँ:** वित्तीय सहायता सीमित होने और विभिन्न देशों की अलग-अलग नीतियाँ संयुक्त परियोजनाओं के क्रियान्वयन में बाधा डालती हैं।
- **प्रतिनिधित्व की कमी:** इस पहल में पूर्वी अफ्रीका, खाड़ी देशों और लघु द्वीपीय देशों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला है।

आगे की राह

- **इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रोस्पेरिटी (IPEF) को बढ़ावा देना:** यह अमेरिका ने संयुक्त रूप से शुरू किया गया है। भारत इस पहल का उपाध्यक्ष है। इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझेदार देशों के बीच आर्थिक सहयोग को मजबूत करना है। भारत इस पहल की **सप्लाई चेन काउंसिल** में भी शामिल है।
    - **IPEF के चार प्रमुख स्तंभ** अग्रलिखित हैं: **कनेक्टेड इकोनॉमी, रेजिलिएंट इकोनॉमी, क्लीन इकोनॉमी और फेयर इकॉनमी।**
- **साझा दृष्टिकोण अपनाना:** प्रत्येक स्तंभ के लिए 5-वर्षीय कार्य योजना तैयार तैयार करना चाहिए (जैसे समुद्री सुरक्षा, ब्लू इकोनॉमी)।
- **प्रत्येक स्तंभ पर संवाद:** व्यवस्थित तरीके से क्षेत्रीय देशों के बीच परामर्श करने के लिए IORA (इंडियन ओशियन रिम एसोसिएशन), EAS (ईस्ट एशिया समिट) जैसे फ़ोरम्स का उपयोग करना चाहिए।
- **सदस्य संख्या बढ़ाना:** समावेशन बढ़ाने हेतु पूर्वी अफ्रीका और खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) के देशों को इस फोरम में शामिल करना चाहिए।
- **वार्षिक प्रगति रिपोर्ट जारी करना:** पारदर्शिता और हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए अपडेटेड रिपोर्ट जारी करनी चाहिए।

निष्कर्ष

भारत का हिंद-प्रशांत के प्रति दृष्टिकोण, इसकी एक्ट ईस्ट नीति का विस्तार है। यह दृष्टिकोण हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समावेशिता और नौवहन की स्वतंत्रता को महत्त्व देता है। यह जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया जैसे प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों के साथ साझेदारी को बढ़ावा देता है। साथ ही, अंतर्राष्ट्रीय समुद्रों में सभी देशों के लिए संतुलित व सहयोगात्मक फ्रेमवर्क को प्रोत्साहित करता है।

2.2. क्वाडिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग/ क्वाड (QUAD)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने **संयुक्त राज्य अमेरिका के विलमिंगटन में आयोजित छठे क्वाड लीडर्स समिट** में भाग लिया।

क्वाडिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग (QUAD) के बारे में

- क्वाड **समुद्री हितधारक लोकतांत्रिक देशों (Maritime democracies)** का एक बहुपक्षीय फ्रेमवर्क है और एक वैश्विक कल्याणकारी शक्ति समूह **(Global Force for Good)** है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए वास्तविक, सकारात्मक और स्थायी प्रभाव प्रदान करता है।
- **सदस्य:** क्वाड **ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका** के बीच एक **कूटनीतिक साझेदारी** है। यह कोई **सैन्य गठबंधन नहीं** है।
- **उद्देश्य:** यह एक ऐसे **खुले, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र** का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है।
- **सहयोग के महत्वपूर्ण क्षेत्र: स्वास्थ्य-देखभाल, जलवायु परिवर्तन, महत्वपूर्ण व उभरती प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, इन्फ्रास्ट्रक्चर** और **साइबर सुरक्षा।**

भारत के लिए क्वाड का महत्त्व

- **चीन के खिलाफ सामरिक संतुलन:** क्वाड भारत को समान विचारधारा वाले देशों के साथ जुड़ने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इससे उसकी सुरक्षा स्थिति में सुधार और **चीन की घेराबंदी का खतरा कम** होता है।
- संयुक्त राष्ट्र समुद्री कानून अभिसमय (UNCLOS) जैसी अंतर्राष्ट्रीय विधियों को सम्मान करते हुए **स्वतंत्र, खुला और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र** सुनिश्चित करता है।
- **एक्ट ईस्ट को बढ़ावा:** क्वाड गठबंधन ने भारत को पूर्वी एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- **भारत की सैन्य क्षमता में वृद्धि:** उदाहरण के लिए- **मालाबार युद्धाभ्यास 2024** ने संयुक्त रूप से प्रशिक्षण और संचालन की क्षमता को बेहतर किया है।
- **तकनीकी और आर्थिक सहयोग:** सेमीकंडक्टर जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रकों में सुरक्षित आपूर्ति श्रृंखला बनाने के उद्देश्य से भारत को क्वाड मंच से लाभ हुआ है। **चीन पर अपनी निर्भरता को कम करने के लिए "आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल (SCRI)**[3]" शुरू की है। साथ ही, यह भारत की **व्यापक आत्मनिर्भर भारत पहल** के अनुरूप भी है।
- **आपदाओं के खतरों से निपटने में सहायक:** प्राकृतिक आपदाओं के दौरान भारत सहित क्षेत्र के अन्य देशों की सहायता करता है।

[3] Supply Chain Resilience Initiative

क्वाड के समक्ष मौजूद चुनौतियां

- **पूरी तरह से संस्थागत नहीं:** अपने वर्तमान स्वरूप में, क्वाड अपेक्षाकृत कम संस्थागत बना हुआ है। इस मंच का ज्यादातर काम-काज नियमित बैठकों, अर्ध-नियमित शिखर सम्मेलनों, सूचनाओं के आदान-प्रदान आदि के माध्यम से ही होता है।
- **शीत-युद्ध की मानसिकता:** चीन ने क्वाड कूटनीति की आलोचना करते हुए इसे **"शीत-युद्ध की मानसिकता"** का प्रतिबिंब और **"एशियाई नाटो"** स्थापित करने का प्रयास बताया है।
- **अलग-अलग देशों के अलग-अलग राष्ट्रीय हित:** उदाहरण के लिए-
  - विशेष रूप से चीन के संबंध में भारत मुख्य रूप से क्षेत्रीय सुरक्षा पर ध्यान केंद्रित करता है, जबकि अमेरिका के व्यापक वैश्विक रणनीतिक हित हैं।
  - **ऑस्ट्रेलिया की चीन पर आर्थिक निर्भरता तथा जापान की अमेरिका पर सुरक्षा निर्भरता** इस गठबंधन को और जटिल बनाती है।
- **अनूठा चरित्र:** क्वाड के उद्देश्य को आसियान (ASEAN), पैसिफिक आइलैंड फोरम और इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA) जैसे अन्य क्षेत्रीय समूहों से अलग परिभाषित करना कठिन साबित हुआ है।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर अमेरिका का सीमित फोकस:** अंतर्राष्ट्रीय नीतिगत मंचों पर यह धारणा बनी हुई है कि, यूरोप और मध्य-पूर्व में युद्धों का अर्थ है कि एशिया पर अमेरिका का ध्यान सीमित हो जाएगा।

क्वाड से जुड़ी भारत की चिंताएं

सैन्य गठबंधन के प्रति अनिच्छा: भारत क्वाड को एक औपचारिक सैन्य गठबंधन बनने से दूर रखना चाहता है ताकि वह अपनी स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखे।

चीन के साथ संबंध: क्वाड सदस्यों में भारत एकमात्र देश है जो चीन के साथ अपनी भूमि सीमा साझा करता है। इससे भारत के लिए यह सुनिश्चित करना अनिवार्य हो जाता है कि क्वाड केवल एक चीन-विरोधी समूह बनकर न रह जाए।

फोकस का कमजोर होना: अन्य समूह जैसे कि **SQUAD (जिसमें ऑस्ट्रेलिया, जापान, फिलीपींस और संयुक्त राज्य अमेरिका शामिल हैं)** का गठन क्वाड को कम महत्वपूर्ण बना सकते हैं।

साझेदारी में संतुलन: भारत **शंघाई सहयोग संगठन (SCO), रूस और ईरान जैसे देशों** के साथ संबंध बनाए रखना चाहता है, जबकि ये देश क्वाड (QUAD) को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।

आगे की राह

- **क्वाड को संस्थागत बनाना:** एक औपचारिक संरचना या सचिवालय की स्थापना इसके प्रभाव को बढ़ा सकती है। इसके परिणामस्वरूप, यह संगठन क्षेत्रीय सुरक्षा और कूटनीतिक गतिविधियों में अधिक प्रभावी तरीके से अपनी भूमिका को निभा सकेगा।
- **पूरक बनें, प्रतिस्पर्धी नहीं:** समावेशी सहयोग को बढ़ावा देने के लिए मौजूदा क्षेत्रीय संगठनों (जैसे, आसियान, IORA) का समर्थन करना चाहिए, उनकी जगह नहीं लेनी चाहिए।
- **अन्य भागीदारों को शामिल करना:** जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने और समुद्री सुरक्षा सुनिश्चित करने जैसी साझा प्राथमिकताओं पर क्वाड के बाहर के हिन्द-प्रशांत देशों (जैसे, वियतनाम, इंडोनेशिया) को शामिल करना चाहिए।
- **रणनीतिक अस्पष्टता:** सुरक्षा से परे क्षेत्रों (जैसे: स्वास्थ्य-देखभाल, अवसंरचना विकास) पर सयोग बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए ताकि साझा हितों को आगे बढ़ाते हुए चीन को उकसाने से बचा जा सके।

निष्कर्ष

क्वाड हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **लोकतंत्र को मजबूत करने** का आधार बनकर उभरा है। यह महामारी के दौरान **टीकों की आपूर्ति** करता है, **समुद्री सुरक्षा** सुनिश्चित करता है और **प्रौद्योगिकी को साझा करने को बढ़ावा** देता है। हालांकि, यदि इसे संस्थागत स्वरूप नहीं दिया और आसियान के साथ तालमेल नहीं बिठाया सका, तो फिर यह तथाकथित 'एशियाई नाटो' केवल चीन की नीतियों का जवाबी कार्रवाई वाला समूह बनकर रह जाएगा।

2.3. ऑकस (AUKUS)

ऑकस (AUKUS)

ऑकस (AUKUS) के गठन के पांच वर्ष पूरे हो गए हैं। यह **त्रिपक्षीय सिक्योरिटी और डिफेंस साझेदारी** है।

AUKUS (उत्पत्ति: 2021) के बारे में

प्रकृति: यह **ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका** के बीच त्रि-पक्षीय सामरिक रक्षा गठबंधन है।

AUKUS के स्तंभ:
- **पिलर I –** यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही देश ऑस्ट्रेलिया को परमाणु-संचालित पनडुब्बियां बनाने में मदद कर रहे हैं।
- **पिलर II –** साइबर सिक्योरिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम प्रौद्योगिकियों, आदि **के क्षेत्र में सहयोग में तेजी लाने पर ध्यान** केंद्रित किया गया है।

फ्रेमवर्क: AUKUS रक्षा प्रौद्योगिकियों की प्रगति हेतु एक मंच के रूप में कार्य करता है।

हिंद-प्रशांत में AUKUS का महत्व

हिंद-प्रशांत के लिए सामरिक निहितार्थ: AUKUS का लक्ष्य स्वतंत्र, खुले, सुरक्षित एवं शांतिपूर्ण और समावेशी हिंद-प्रशांत के विज़न को साकार करना है।

अमेरिका की प्रतिबद्धता: AUKUS को हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा के लिए अमेरिका की मजबूत प्रतिबद्धता के रूप में देखा जाता है।

यूनाइटेड किंगडम की भूमिका: AUKUS हिंद-प्रशांत क्षेत्र की सुरक्षा में दीर्घकालिक भूमिका के लिए यूनाइटेड किंगडम की आकांक्षा को पूरा करने में योगदान देगा।

AUKUS से संबंधित चिंताएं

स्पष्टता का अभाव: AUKUS के आधिकारिक **वक्तव्यों और रणनीतिक उद्देश्य** में स्पष्टता का अभाव है।

क्षेत्रीय तनाव: चीन, AUKUS का विरोध करता है। इससे हिंद-प्रशांत में क्षेत्रीय तनाव पैदा हो सकता है।

संयुक्त राज्य अमेरिका क्वाड के एक सदस्य के साथ **अत्यधिक मांग वाली तकनीक साझा कर रहा है,** लेकिन दूसरे सदस्य देश के साथ नहीं कर रहा है।

AUKUS बनाम क्वॉड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग (Quad)

AUKUS:
- AUKUS रक्षा साझेदारी को प्राथमिकता देता है जबकि क्वाड रक्षा साझेदारी वाला मंच नहीं है।
- सहयोग के क्षेत्र केवल रक्षा प्रौद्योगिकी तक सीमित हैं।

क्वाड:
- क्वाड का अधिक ध्यान हिंद-प्रशांत क्षेत्र में रणनीतिक सहयोग पर केंद्रित है, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान शामिल हैं।
- यह स्वतंत्र, खुले, समृद्ध और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र को लेकर प्रतिबद्ध है।

भारत और AUKUS

भारत के लिए AUKUS का महत्व:
- **क्वाड का पूरक: A**UKUS साझा खतरे के रूप में चीन से निपटने तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र को स्वतंत्र, खुला और समावेशी बनाए रखने के लिए क्वाड के प्रयासों को मजबूत करेगा।
- **सामरिक सहयोग:** यह फ्रांस के साथ सामरिक सहयोग और यूरोपीय देशों के साथ विश्वास को मजबूत करने के अवसर प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए, भारत-फ्रांस-UAE (2023)

भारत के लिए चिंताएं:
- **क्षेत्रीय प्रभाव:** भविष्य में परमाणु हमला करने वाली पनडुब्बियों की बढ़ती उपस्थिति के कारण पूर्वी हिंद महासागर में भारत के **क्षेत्रीय प्रभाव में संभावित कमी** आ सकती है।
- **भारत का व्यापक इंडो-पैसिफिक** दृष्टिकोण **अमेरिका की इंडो-पैसिफिक की संकीर्ण परिभाषा से टकराता है,** जो अफ्रीका और मध्य पूर्व को शामिल नहीं करता।

निष्कर्ष

AUKUS ने क्वाड के संबंध में भारत के सामने आने वाली कुछ दुविधाओं को रेखांकित किया है, जैसे: क्या **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन** के प्रभाव को कम करने का भार **साझा किया जाए या उसे दूसरे पर डाला जाए,** और क्या **रक्षा साझेदार के रूप में संयुक्त राज्य अमेरिका पर और अधिक निर्भरता** के लिए **प्रतिबद्ध** हुआ जाए या नहीं।

2.4. ब्रिक्स का विस्तार (Expansion of BRICS)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, रूस के **कजान** शहर में **16वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन** आयोजित किया गया। यह पहला ऐसा शिखर सम्मेलन था जिसमें ब्रिक्स के विस्तार के बाद नए सदस्य देश भी शामिल हुए।

ब्रिक्स के विस्तार का महत्त्व:

- **बहुध्रुवीय विश्व को आकार देने में महत्त्व:** ब्रिक्स एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर एक सूक्ष्म बदलाव की पेशकश करता है, जहां मध्यवर्ती शक्तियां (मिड पावर) तेजी से केंद्रीय भूमिका निभा रही हैं।
- **नए क्षेत्रों में ब्रिक्स समूह के फुटप्रिंट का विस्तार:** यह विस्तार मध्य-पूर्व, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका सहित प्रमुख क्षेत्रों में ब्रिक्स की उपस्थिति को मजबूत करता है। इससे ब्रिक्स की वैश्विक पहुंच में और वृद्धि हुई है।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था में प्रभाव बढ़ना:** विस्तार के बाद दुनिया की 40% आबादी वाले ब्रिक्स देशों ने क्रय शक्ति समता के मामले में G7 देशों को पीछे छोड़ दिया है।
    - अफ्रीका महाद्वीप के **मिस्र और इथियोपिया** के ब्रिक्स में शामिल होने से वैश्विक आर्थिक समावेशन को बढ़ावा मिलेगा।

ब्रिक्स के विस्तार से जुड़ी चिंताएं

- **विकास के विविध स्तर:** ब्रिक्स समूह में शामिल किए गए देशों के आर्थिक विकास का स्तर काफी अलग-अलग है।
- **भू-राजनीतिक चिंताएं:** भू-राजनीतिक रूप से, कई देश ब्रिक्स की विस्तार नीति को चीन की रणनीति के रूप में देखते हैं, जहां वह समान विचारधारा वाले देशों को साथ लेकर अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयास कर रहा है।
- **सदस्यों के बीच व्यापक आंतरिक मतभेद:** यह समूह अलग-अलग सामाजिक संरचनाओं, संसाधनों और विकासात्मक पथों वाले लोकतांत्रिक एवं सत्तावादी शासनों का मिश्रण है।
- **वैश्विक संस्थाओं में सुधारों के प्रति दृष्टिकोण:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) जैसी संस्थाओं में संस्थागत सुधारों के प्रति ठोस दृष्टिकोण की बजाय वक्तव्य आधारित बना हुआ है।

आगे की राह

- **स्थायी सचिवालय:** सदस्यों की संख्या बढ़ने की वजह से इसका एक स्थायी सचिवालय होना जरुरी है।
- **संरक्षणवाद के खिलाफ सामूहिक रुख:** ब्रिक्स का भविष्य व्यापार संबंधी संरक्षणवाद के खिलाफ ब्रिक्स देशों के सामूहिक रुख पर निर्भर करेगा।
- **सामंजस्य को प्राथमिकता:** मौजूदा सदस्य देशों के बीच सामाजिक-आर्थिक सहयोग के द्वारा आपस में आर्थिक और सामाजिक सामंजस्य को प्राथमिकता देनी चाहिए।
- **बॉटम अप दृष्टिकोण:** यह दृष्टिकोण अपनाने से निजी क्षेत्र और नागरिकों के भागीदारी में वृद्धि हो सकती है।
    - इसमें **एकल ब्रिक्स वीजा,** शोधकर्ताओं के बीच सहयोग बढ़ाना आदि को शामिल किया जा सकता है।
- **बहुपक्षीय प्रयासों को आगे बढ़ाना:** ब्रिक्स देशों को ग्लोबल साउथ के साथ अपने संबंधों को मजबूत बनाकर बहुपक्षीय प्रयासों को आगे बढ़ाना चाहिए। इन देशों में ध्रुवीकरण की बजाय एकता का वैश्विक संदेश दिया जाना चाहिए।
- **सहयोग के अन्य क्षेत्र:** उदाहरण के लिए ब्रिक्स स्पेस एक्सप्लोरेशन कंसोर्टियम का निर्माण; पारंपरिक चिकित्सा पर रिपॉजिटरी स्थापित करना जैसे उद्देश्यों का और अधिक विस्तार करना आदि।

© Vision IAS

निष्कर्ष

ब्रिक्स बहुध्रुवीय ग्लोबल गवर्नेंस की दिशा में एक व्यापक बदलाव का सूचक है। यह प्रमुख उभरती हुई अर्थव्यवस्थाओं को एक मंच पर लाता है। सदस्य देशों के बीच आंतरिक विरोधाभासों और परस्पर विरोधी हितों के बावजूद, यह संगठन वैकल्पिक वित्तीय, आर्थिक और राजनीतिक तंत्र तथा साउथ-साउथ कोऑपरेशन के अवसर प्रदान करता है।

2.5. शंघाई सहयोग संगठन (Shanghai Cooperation Organization: SCO)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत ने **चीन के किंगदाओ में आयोजित शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के रक्षा मंत्रियों की बैठक** में संयुक्त घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया, जिससे बैठक बिना सर्वसम्मति के समाप्त हो गई।

भारत द्वारा समझौता पर हस्ताक्षर करने से इनकार करने के प्रमुख कारण

- **आतंकवाद की निंदा में चयनात्मक दृष्टिकोण**: डॉक्यूमेंट में पहलगाम आतंकवादी हमले का उल्लेख नहीं था, जबकि बलूचिस्तान का उल्लेख किया गया था।
    - भारत ने ज़ोर देकर कहा कि SCO को सीमा-पार आतंकवाद को प्रायोजित करने वाले देशों की आलोचना करने से नहीं बचना चाहिए।
- **आतंकवाद पर अडिग रुख:** भारत मानता है कि शांति और आतंकवाद साथ-साथ नहीं चल सकते। भारत अपना यह सिद्धांत वह सभी बहुपक्षीय मंचों पर मजबूती से रखता है।

SCO में भारत के रणनीतिक अवसर

- **मध्य एशिया से संपर्क का माध्यम:** SCO भारत की **"कनेक्ट सेंट्रल एशिया" नीति** को सशक्त करता है।
- **आर्थिक और ऊर्जा सहयोग**: जैसे; भारत कज़ाखस्तान के यूरेनियम संसाधनों को प्राप्त कर सकता है।
- **क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा**: अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC) जैसी परियोजनाओं को समर्थन मिल सकता है।
- **कूटनीतिक संपर्क जारी रखने का माध्यम:** यह पाकिस्तान और चीन से तनाव के बावजूद दोनों देशों के साथ संवाद बनाए रखने का मंच प्रदान करता है।

SCO को लेकर भारत की चिंताएं

- **चीन का वर्चस्व:** SCO के चीन-केंद्रित समूह में बदलने की आशंका है; जैसे-चीन अपनी **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** का जोर-शोर से प्रचार करता है।
- **सदस्यता विस्तार से जुड़ी समस्याएं**: बेलारूस जैसे नए सदस्य SCO के अपने क्षेत्र तक केंद्रित रखने के प्रयासों को कमजोर करते हैं।
- कम प्रभावी होना: SCO के निर्णय बाध्यकारी नहीं होते। इस तरह यह फोरम भी गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) जैसे **चर्चा केंद्र की तरह** कार्य करता है।
- **पश्चिम देश-विरोधी धारणा:** SCO को कभी-कभी पश्चिमी देशों के प्रभाव का विरोध करने वाले गुट के रूप में देखा जाता है।

SCO में भारत की संतुलनकारी रणनीति

- **राष्ट्रीय हितों की रक्षा:** 2023 के SCO शिखर सम्मेलन में भारत ने **चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) को समर्थन देने से इनकार** कर दिया।
- **चुनिंदा भागीदारी: SCO-क्षेत्रीय आतंकवाद रोधी संरचना (RATS)** के माध्यम से आतंकवाद-रोधी सहयोग में भारत की सक्रिय भागीदारी है।
- **विकास-प्रधान एजेंडा:भारत** पारंपरिक चिकित्सा और स्टार्टअप्स जैसे गैर-राजनीतिक विषयों में सहयोग को आगे बढ़ाने पर बल देता है।
- **रूस के साथ साझेदारी**: भारत SCO के प्रमुख एजेंडा पर रूस के साथ तालमेल बनाये रखता है।

वैश्विक बहुपक्षीयता में SCO की भूमिका

- **भू-राजनीतिक पहुंच**: यह यूरेशिया के 80% क्षेत्र और विश्व की 42% जनसंख्या को कवर करता है।
- **आर्थिक प्रभाव**: वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में लगभग 25% योगदान देता है।
- **भू-राजनीतिक विस्तार:** यह फोरम यूरेशिया के 80% क्षेत्र और विश्व की 42% जनसंख्या को कवर करता है।

- **आर्थिक प्रभाव:** SCO के सदस्य देश **वैश्विक GDP में लगभग 25% का योगदान** देते हैं।
- **पश्चिमी देशों के फ़ोरम्स का विकल्प:** यह गैर-पश्चिमी देशों के बहुपक्षीय मॉडल प्रस्तुत करता है।
- **सुरक्षा सुनिश्चित करने में भूमिका:** अफ़गानिस्तान से नाटो सेना की वापसी के बाद की वहां की सुरक्षा स्थिति पर निगरानी रखता है।

निष्कर्ष

भारत SCO को मध्य एशिया के देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने के लिए एक महत्वपूर्ण फोरम मानता है, हालांकि इसके चीन-केंद्रित झुकाव को लेकर सतर्क भी रहता है। भारत SCO को पश्चिम देशों के-विरोधी गुट की बजाय **विकास-प्रधान मंच के रूप में रूपांतरित** करना चाहता है। भारत की संतुलित रणनीति उसे अपने बुनियादी मूल्यों से समझौता किए बिना सार्थक भागीदारी को बढ़ावा देने में सक्षम बनाती है।

2.6. आसियान: एक नज़र में (ASEAN at a Glance)

आसियान

"मुझे विश्वास है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है - यह भारत और आसियान देशों की सदी है।" – **प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी**

भारत के लिए आसियान का महत्व

आसियान भारत का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** है (2023-24 के दौरान भारत और आसियान के बीच 122.67 बिलियन डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ।)	**हिंद-प्रशांत रणनीति: आसियान सेंट्रलिटी** का भारत की **'एक्ट ईस्ट'** नीति और भारत अपने पूर्वी पड़ोसी देशों में (उदाहरण- म्यांमार में) स्थिरता बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भमिका निभा रहा है।	**पूर्वोत्तर के साथ कनेक्टिविटी:** जैसे- कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट, आदि।	भारत मलक्का जलडमरूमध्य सहित **महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित** करना।	**सॉफ्ट पॉवर व सद्भावना: उदाहरण के लिए-** पर्यटन और शिक्षा

हिंद-प्रशांत क्षेत्र में आसियान का महत्व

भूराजनीतिक और आर्थिक केन्द्रीयता	नियम-आधारित व्यवस्था	महाशक्तियों (अमेरिका और चीन) की प्रतिद्वंद्विता के बीच संतुलन की भूमिका	कनेक्टिविटी (उदाहरण; आसियान कनेक्टिविटी के लिए मास्टर प्लान, 2025)

भारत-आसियान संबंधों में चुनौतियां

आर्थिक चिंताएं: उदाहरण के लिए- **क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP)** समझौते से बाहर निकलने के भारत के फैसले ने आसियान सदस्यों में आर्थिक तौर पर निराशा की भावना पैदा की है।	**भारत का व्यापार घाटा:** 2022-23 में बढ़कर 43.57 बिलियन डॉलर हो गया।	**बढ़ता चीनी प्रभाव:** उदाहरण के लिए- बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)

संबंधों को मजबूत बनाने के लिए आगे की राह

भारत और आसियान देशों के संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए **10-सूत्रीय योजना लागू करना**	**आसियान-भारत मुक्त व्यापार समझौते (FTA)** को अपडेट और विस्तारित करना चाहिए।	**चीन के प्रतिसंतुलन** के लिए भारत को एक **'हिंद-प्रशांत समुद्री साझेदारी'** शुरू करनी चाहिए	**दक्षिण चीन सागर में समुद्री गतिविधियों** के लिए 'नौवहन हेतु **आचार संहिता (CoC)'** बनानी चाहिए।	**प्रमुख कनेक्टिविटी परियोजनाएं** (जैसे, भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग) को पूरा किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत की **इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI)** और **आसियान आउटलुक ऑन द इंडो-पैसिफिक (AOIP) शांति, सहयोग और सतत विकास** पर ध्यान केंद्रित करती हैं। ये पहलें **स्वतंत्र, मुक्त और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए** भारत-आसियान सहयोग को मजबूत करती हैं।

© Vision IAS

2.7. दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन: सार्क (SAARC)

सार्क (SAARC)

- दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन **(SAARC)** की स्थापना **1985** में हुई थी। इसके सदस्य देश हैं; **अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, भारत, मालदीव, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका।**

सार्क की विफलताओं के कारण

पिछला सार्क द्विवार्षिक शिखर सम्मेलन 2014 में नेपाल द्वारा आयोजित किया गया था।	**2016 का शिखर सम्मेलन (जिसकी मेजबानी पाकिस्तान को करनी थी)** पुलवामा में हुए आतंकवादी हमले के बाद स्थगित कर दिया गया।	**पाकिस्तान की अड़चनें:** CPEC (चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा) पर चीन के साथ पाकिस्तान का सहयोग करना, जो भारत की क्षेत्रीय संप्रभुता की अवहेलना करता है। पाकिस्तान द्वारा प्रायोजित आतंकवाद भी एक बड़ी बाधा है।	**बिग ब्रदर की धारणा:** सार्क के राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में भारत के आधिपत्य का डर।	**संरचनात्मक समस्याएं:** द्विपक्षीय और विवादास्पद मुद्दों को SAARC के एजेंडे से बाहर रखा गया है और विवादों को सुलझाने या विवादों में मध्यस्थता की कोई व्यवस्था नहीं है।	**सर्वसम्मति से निर्णय लेने** की अनिवार्यता निर्णय प्रक्रिया को कठिन बना देती है।

सार्क को पुनर्जीवन देने की आवश्यकता क्यों है?

साझा मुद्दों से निपटना: प्रमुख मुद्दों में जलवायु परिवर्तन, खाद्य, ऊर्जा सुरक्षा, गरीबी आदि शामिल हैं।	**साझा नीतिगत आवश्यकताएँ:** दक्षिण एशिया जलवायु परिवर्तन के खतरों का अधिक सामना कर सकता है, साथ ही इस क्षेत्र में सापेक्ष गरीबी में जीवन-यापन करने वाली विश्व की बड़ी आबादी रहती है।	**क्षेत्र के देशों के बीच (अंतरा-क्षेत्रीय) व्यापार की असीम संभावनाएं:** दक्षिण एशिया के देशों के कुल व्यापार में अंतरा-क्षेत्रीय व्यापार केवल 5% है, जबकि आसियान में यह 25% तक है।	**विगत सफलताएं:** इनमें दक्षिण एशिया मुक्त व्यापार समझौता; सार्क विकास कोष; कृषि, ऊर्जा आदि पर सार्क क्षेत्रीय केंद्र शामिल हैं।

आगे की राह

मुद्दा-आधारित सहयोग (जैसे, स्वास्थ्य, जलवायु, आपदा राहत) के माध्यम से **सहभागिता को पुनर्जीवित करना।**	BBIN जैसे उप-क्षेत्रीय समूहों के माध्यम से **क्षेत्रीय कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना।**	**पाकिस्तान द्वारा उत्पन्न की जाने वाली गतिरोधों को दूर करने** के लिए सार्क को पाकिस्तान रहित पहलों पर ध्यान केन्द्रित करना।	**सांस्कृतिक संबंध:** साझा विरासत को बढ़ावा देना। सॉफ्ट पावर और लोगों के बीच आपसी संबंधों का लाभ उठाना।	व्यापार सुविधा के माध्यम से **आर्थिक एकीकरण को प्रोत्साहित** करना।

निष्कर्ष

जहां एक ओर भारत दक्षिण एशियाई उपग्रह के प्रक्षेपण, दक्षिण एशियाई विश्वविद्यालय की स्थापना आदि के माध्यम से सार्क (SAARC) सहयोग को बढ़ाता रहा है, वहीं दूसरी ओर वह BIMSTEC और 'एक्ट ईस्ट नीति' (Act East Policy) जैसी अन्य क्षेत्रीय सहयोग पहलों पर भी समान रूप से ध्यान केंद्रित कर रहा है।

2.8. बिम्सटेक (BIMSTEC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

थाईलैंड की अध्यक्षता में **बैंकॉक में छठा बिम्सटेक (BIMSTEC) शिखर सम्मेलन** संपन्न हुआ।

- बिम्सटेक (BIMSTEC) का अर्थ है- **बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी-सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन।**

छठे बिम्सटेक शिखर सम्मेलन में भारत के नेतृत्व में शुरू की गई महत्वपूर्ण पहलें

- **बोधि/BODHI (मानव संसाधन अवसंरचना के संगठित विकास के लिए बिम्सटेक):** यह पेशेवरों, छात्रों, शोधकर्ताओं आदि को प्रशिक्षण एवं छात्रवृत्ति प्रदान करके **युवाओं को कुशल बनाने** का कार्यक्रम है।
- **डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर: भारत** क्षेत्र में इसकी आवश्यकता का आकलन करने के लिए एक **पायलट अध्ययन** आयोजित करेगा।
- **अन्य मुख्य आउटकम्स**
    - **बिम्सटेक बैंकॉक विज़न 2030: समृद्ध, सक्षम और खुले या "प्रो बिम्सटेक"** के निर्माण के लिए रणनीतिक योजना की रूपरेखा तैयार करने वाला पहला विज़न तैयार किया गया है। इसके तहत **आर्थिक एकीकरण, कनेक्टिविटी और मानव सुरक्षा** पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
    - **समुद्री परिवहन सहयोग पर समझौता: क्षेत्रीय समुद्री कनेक्टिविटी के विस्तार** के लिए समझौता पर हस्ताक्षर किए गए हैं। .

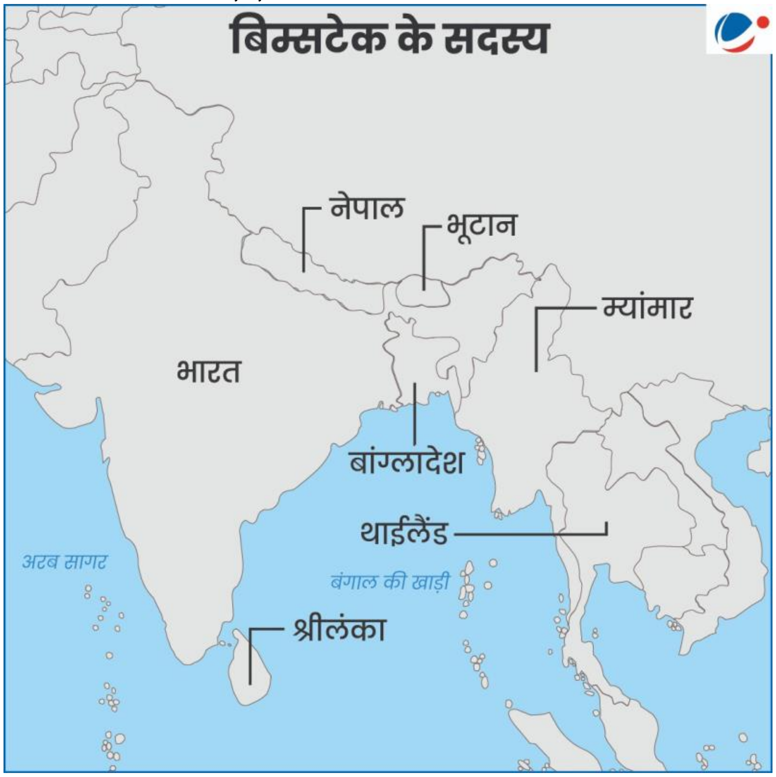

बिम्सटेक (BIMSTEC) के बारे में

- **स्थापना:** यह एक **क्षेत्रीय संगठन है।** इसकी स्थापना **1997 में बैंकॉक घोषणा-पत्र** पर हस्ताक्षर के साथ हुई थी।
    - प्रारंभ में इसका गठन चार सदस्य राष्ट्रों- **बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड** के साथ किया गया था। तब इसका संक्षिप्त नाम **BIST-EC** था।
- **सचिवालय: ढाका** (बांग्लादेश) में स्थित है।
- **उद्देश्य:** तेजी से आर्थिक विकास और सामाजिक प्रगति के लिए एक सक्षम परिवेश बनाना और साथ ही, बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में शांति व स्थिरता बनाए रखना।
- **7 प्राथमिकता वाले क्षेत्र/ स्तंभ (प्रत्येक का नेतृत्व 1 सदस्य देश द्वारा किया जाता है)**: जैसे- **भारत सुरक्षा स्तंभ** के लिए नेतृत्वकर्ता देश है।

बिम्सटेक भारत की विदेश नीति के उद्देश्यों को पूरा करने में कैसे मदद कर सकता है?

- **सार्क (SAARC) का विकल्प: बिम्सटेक में पाकिस्तान को शामिल नहीं** किया गया है। **सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन)** भू-राजनीतिक तनावों के कारण **काफी हद तक निष्क्रिय** बना हुआ है।
- **भारत की विदेश नीति के अनुकूल:** बिम्सटेक भारत की **'एक्ट ईस्ट' और 'नेबरहुड फर्स्ट', इंडो-पेसिफिक और क्वाड के लक्ष्यों** जैसी पहलों में सहायता करता है।
- **दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के बीच रणनीतिक सेतु के रूप में: थाईलैंड और म्यांमार** जैसे आसियान सदस्य देशों के माध्यम से **भारत को आसियान देशों** के साथ प्रभावी ढंग से जोड़ने में सहायक है।
- **ब्लू इकोनॉमी और समुद्री सुरक्षा:** यह समुद्री व्यापार मार्गों की सुरक्षा, समुद्री डकैती-रोधी अभियानों और आपदा प्रबंधन में मदद करता है। यह हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के **सागर/ SAGAR** (क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास) और **महासागर/ MAHASAGAR** (क्षेत्रों में सुरक्षा और विकास के लिए पारस्परिक एवं समग्र उन्नति) विज़न के साथ भी प्रभावी रूप से जुड़ा हुआ है।
- **दक्षिण एशियाई एकीकरण: परिवहन संबंधी कनेक्टिविटी के लिए बिम्सटेक मास्टर प्लान** जैसी परियोजनाओं के माध्यम से क्षेत्रीय एकीकरण को बढ़ावा दिया जा रहा है।

बिम्सटेक से जुड़ी चिंताएं

- **संगठन की धीमी प्रगति:** बिम्सटेक के गठन के 27 साल बाद इसका चार्टर लागू हुआ है। पिछले 27 वर्षों में वर्तमान शिखर सम्मेलन सहित केवल 6 शिखर सम्मेलन ही आयोजित किए गए हैं।
- **भू-राजनीतिक चुनौतियां:** भारत और भूटान को छोड़कर बिम्सटेक के अन्य सभी सदस्य देश चीन की BRI परियोजनाओं का हिस्सा हैं।
- **सदस्य देशों के बीच कम व्यापार:** क्षमताओं के बावजूद, बिम्सटेक सदस्यों के बीच व्यापार अपेक्षाकृत कम है, यानी कुल व्यापार का लगभग **6-7% है।**
    - 2004 में शुरू किया गया बिम्सटेक मुक्त व्यापार समझौता (**BIMSTEC FTA**) अभी तक लागू नहीं हुआ है।

© Vision IAS

- **अवसंरचनात्मक और कनेक्टिविटी में अंतर:** उदाहरण के लिए- **भारत-म्यांमार-थाईलैंड (IMT) त्रिपक्षीय राजमार्ग तथा बांग्लादेश-भूटान-भारत-नेपाल (BBIN) मोटर वाहन समझौता** लागू होने में काफी देरी हो रही है।
- **राजनीतिक अस्थिरता: म्यांमार, नेपाल** और **श्रीलंका** जैसे सदस्य देशों में आंतरिक राजनीतिक संकट एवं संघर्ष विकास कार्यों को बाधित करते हैं।
- सदस्यों के बीच तनावपूर्ण संबंध जैसे **रोहिंग्या शरणार्थी संकट पर बांग्लादेश-म्यांमार संबंध, भारत-नेपाल सीमा मुद्दा** आदि भी सहयोग में बाधा डालते हैं।

निष्कर्ष

बिम्सटेक (BIMSTEC) दक्षिण-पूर्व एशिया के साथ कनेक्टिविटी, व्यापार और सुरक्षा के माध्यम से क्षेत्र में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका को मजबूत करता है। यह फोरम भारत की "एक्ट ईस्ट" और "नेबरहुड फर्स्ट" नीतियों के अनुरूप है। साथ ही यह **सुरक्षित, समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करने के भारत के विजन** को बढ़ावा देता है। यह मंच **सार्क (SAARC) की समस्याओं से बाहर निकलकर भारत के क्षेत्रीय लक्ष्यों को आगे बढ़ाने का एक व्यावहारिक माध्यम** भी है।

2.9. भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (India-Middle East-Europe Economic Corridor)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा परियोजना की घोषणा के **एक वर्ष** पूरे हो गए हैं। पिछले एक वर्ष में जहां एक ओर इस महत्वाकांक्षी **अंतर्राष्ट्रीय गलियारा** परियोजना के मामले में कुछ प्रगति देखी गई है, तो दूसरी ओर कुछ बाधाएं भी उभर कर सामने आई हैं।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) के बारे में

- **शुरुआत:** नई दिल्ली में **2023 में आयोजित G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान** इस परियोजना के समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए थे।
- **उद्देश्य:** इसका उद्देश्य **मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी परियोजना** जैसी **अवसंरचनाओं का विकास** करना है।
- **इस परियोजना में दो अलग-अलग गलियारे शामिल होंगे:**
    - **पूर्वी गलियारा:** यह भारत को खाड़ी देशों से जोड़ेगा; और
    - **उत्तरी गलियारा:** यह खाड़ी देशों को यूरोप से जोड़ेगा।
- यह परियोजना **वैश्विक अवसंरचना और निवेश के लिए साझेदारी (PGII)**[4] पहल का हिस्सा है।

IMEC के कार्यान्वयन की वर्तमान स्थिति

- **UAE और इजरायल के बीच रेलवे नेटवर्क** और **हाइफ़ा बंदरगाह** की क्षमता के विस्तार में भी प्रगति देखी गई है।
- **स्वच्छ ऊर्जा निर्यात, अंडर-सी फाइबर-ऑप्टिक केबल, एनर्जी ग्रिड लिंकेज** तथा **स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकी** में सहयोग करने जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में **प्रगति नहीं** हुई है।
- **व्यापार-प्रक्रियाओं का विकास:** जैसे- भारत और UAE ने **'वर्चुअल ट्रेड कॉरिडोर' (VTC)** शुरू किए हैं।
- अन्य **क्षेत्रीय देशों को भी शामिल होने की अनुमति** है।

भारत के लिए महत्त्व

- **भारत और खाड़ी देशों के बीच संबंधों को मजबूत करेगा।**
- **आर्थिक संवृद्धि:** IMEC **क्षेत्रीय व्यापार** को बढ़ावा देगा, भारत में **निवेश आकर्षित करेगा।**
- व्यापारिक जहाजों को यूरोप तक पहुँचने में **स्वेज नहर समुद्री मार्ग** की तुलना में **40% कम समय लगेगा।** इससे **व्यापार लागत में 30% तक की कमी** आ सकती है।
- **विस्तारित कनेक्टिविटी के माध्यम से यूरोपीय संघ (EU)** और **खाड़ी सहयोग परिषद (GCC) को जोड़कर** भारत के वैश्विक शक्ति बनने की महत्वकांक्षा को पूरा कर सकता है।
- व्यस्त समुद्री मार्गों के **अवरोधों (चोकपॉइंटस) पर निर्भरता कम** करता है, **शांति को बढ़ावा** देता है और **चीन की BRI का विकल्प** प्रस्तुत करता है।

---
[4] Partnership for Global Infrastructure and Investment

मुख्य चुनौतियां

- **उच्च लागत: मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी स्थापित करना काफी जटिल** काम है। इसके अलावा **खाड़ी देशों में विनिर्माण क्षमता** अधिक विकसित नहीं है।
- **क्षेत्र के महत्वपूर्ण देश शामिल नहीं:** मध्य पूर्व की कई महत्वपूर्ण अर्थव्यवस्थाएं IMEC परियोजना में **शामिल नहीं** हैं।
- **क्षेत्रीय अस्थिरता** (इजरायल-हमास युद्ध, हूती विद्रोही)
- **स्पष्ट वित्तपोषण प्रतिबद्धताओं की कमी** है तथा अरब-इजरायल संबंध इसके विकास को प्रभावित कर रहे हैं।

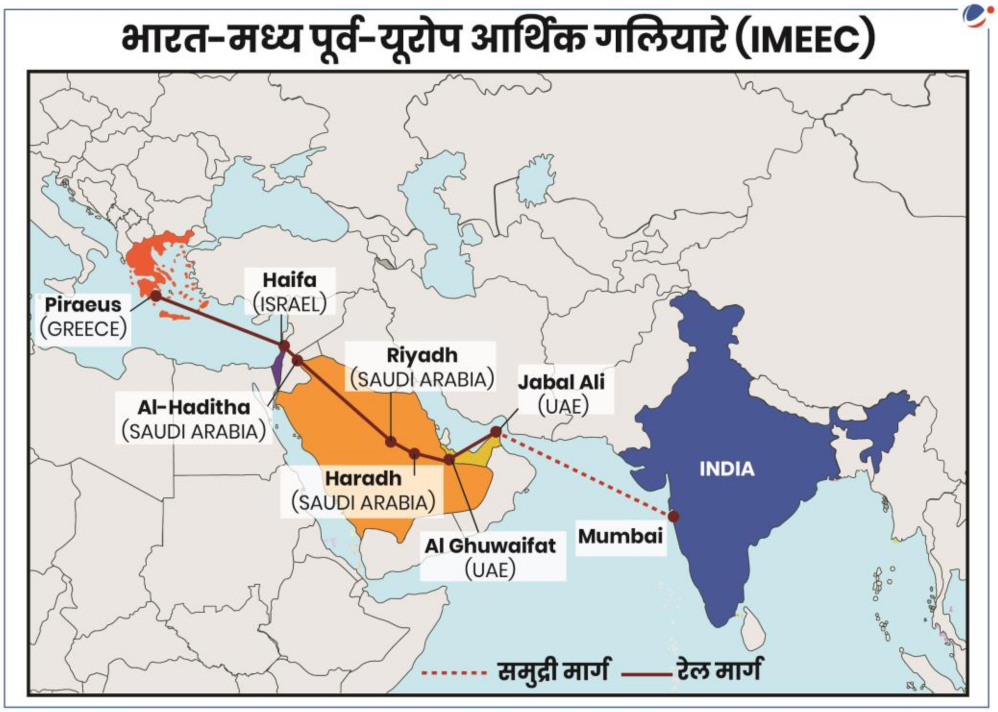

निष्कर्ष

IMEC **यूरेशियाई कनेक्टिविटी में व्यापक बदलाव** ला सकता है, जो **भारत को यूरोप तक 40% अधिक तेज़ गति से पहुँचने में मदद** करेगा। साथ यह **चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के प्रभुत्व को प्रतिसंतुलित** भी करने में मदद करेगा। हालांकि यह कॉरिडोर-निर्माण मध्य पूर्व में जारी **क्षेत्रीय संघर्षों और वित्त पोषण की कमी के कारण ठहर**-सा गया है। इस परियोजना की सफलता **पश्चिम एशिया में स्थिरता** और **समझौता ज्ञापनों (MoUs) को वास्तविक अवसंरचना विकास में बदलने** हेतु ठोस निवेश सुनिश्चित करने पर निर्भर करती है।

2.10. ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G-20) शिखर सम्मेलन (G20 Summit)

सुर्ख़ियों में क्यों?

19वां G-20 शिखर सम्मेलन ब्राजील के रियो डी जेनेरियो में आयोजित हुआ। इस सम्मेलन की थीम थी- **"एक न्यायसंगत विश्व एवं एक संधारणीय ग्रह का निर्माण (Building a Just World and a Sustainable Planet)"।**

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G-20) के बारे में

- **उत्पत्ति:** इसका गठन **एशियाई वित्तीय संकट (1997-1998)** के बाद **1999** में हुआ था।
- **वार्षिक शिखर सम्मेलन: G-20** शिखर सम्मेलन **प्रतिवर्ष बारी-बारी से सदस्य देशों की अध्यक्षता (G-20 प्रेसीडेंसी)** में आयोजित किया जाता है।
- **सदस्य:** G7 (फ्रांस, कनाडा, इटली, जापान, जर्मनी, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम) + अफ्रीकी संघ, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, रूस, चीन, यूरोपीय संघ, भारत, इंडोनेशिया, मैक्सिको, सऊदी अरब, तुर्की, दक्षिण कोरिया, दक्षिण अफ्रीका।

रियो डी जेनेरियो में आयोजित G-20 शिखर सम्मेलन के बारे में

- रियो शिखर सम्मेलन में **अफ्रीकी संघ (AU) ने पहली बार एक पूर्ण सदस्य के रूप में भाग लिया।**
- इस **सम्मेलन की मेजबानी ब्राजील** ने की। ब्राजील, G-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने वाला **ग्लोबल साउथ का तीसरा देश** बन गया है। अन्य दो देश हैं- **इंडोनेशिया (2022) और भारत (2023)।**
- अगला **G-20 शिखर सम्मेलन दक्षिण अफ्रीका** में आयोजित होगा। वर्तमान में **ब्राजील, भारत और दक्षिण अफ्रीका 'G-20 ट्रोइका' देश हैं।** ये देश **ग्लोबल साउथ** का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा IBSA और ब्रिक्स (BRICS) समूह के भी सदस्य हैं।

© Vision IAS

रियो डी जेनेरियो लीडर्स डिक्लेरेशन द्वारा उठाए गए मुख्य कदम

सामाजिक समावेशन तथा भुखमरी के विरुद्ध लड़ाई:
- **भुखमरी और गरीबी के विरुद्ध वैश्विक गठबंधन** शुरू किया गया है। इसके सदस्यों की संख्या 148 है।
- **स्थानीय और क्षेत्रीय उत्पादन, नवाचार और समान पहुँच के लिए वैश्विक गठबंधन:** इसे खतरे वाले लोगों तक उपेक्षित रोगों के टीके, निदान (डायग्नोस्टिक) और अन्य स्वास्थ्य प्रौद्योगिकियां पहुंचाने के लिए शुरू किया गया है।

सतत विकास और जलवायु कार्रवाई: जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध वैश्विक एकजुटता हेतु एक कार्य बल का गठन किया जाएगा।

ग्लोबल गवर्नेंस और कर लगाना: अधिक धनी लोगों पर कर लगाने पर पहली बार सहमति व्यक्त की गई।

G20 का भारत के लिए महत्व

- **वैश्विक नेतृत्व और कूटनीति:** भारत में 2023 में पहली बार G20 शिखर सम्मेलन का आयोजन हुआ। इससे भारत की बढ़ती कूटनीतिक क्षमता और वैश्विक नेतृत्व की शक्ति प्रदर्शित हुई।
- **वैश्विक नीतियों को प्रभावित करना**: भारत ने "ग्लोबल साउथ" के देशों का प्रतिनिधित्व करते हुए अफ्रीकी संघ को G20 का स्थायी सदस्य बनवाया, तथा विकासशील देशों व विश्व में समानता के मुद्दों को प्रमुखता दी।
- **आर्थिक महत्त्व:** G20 के सदस्य देश विश्व की लगभग 85% GDP और 75% अंतरराष्ट्रीय व्यापार में योगदान देते हैं।
- **विदेशी निवेश और व्यापार:** G20 शिखर सम्मेलन व इससे जुड़ी पहलें (जैसे IMEC) भारत में व्यापार और आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध होंगी।
- **पर्यटन और सॉफ्ट पावर:** G20 की बैठकों के आयोजनों का उपयोग भारत ने देश में पर्यटन को बढ़ावा देने और अपनी संस्कृति व विरासत को प्रदर्शित करने के लिए किया।

G20 की सीमाएं

- **प्रतिनिधित्व से जुड़ी समस्याएं:** अफ्रीकी संघ को शामिल करने के बाद "G21" नाम को लेकर विवाद है। रूसी राष्ट्रपति व सऊदी क्राउन प्रिंस की अनुपस्थिति जैसे कारणों से देशों के बीच कूटनीतिक एकता को लेकर संदेह उत्पन्न हुआ है।
- **नीतियों पर असहमति:** जैसे; अर्जेंटीना द्वारा सतत विकास का विरोध किया जा रहा है, बड़ी अर्थव्यवस्थाएं संपत्ति कर (वेल्थ टैक्स लगाने) का विरोध कर रही हैं, साथ ही प्रगतिशील कर प्रणाली के प्रस्तावों पर भी सहमति नहीं बन पाई है।
- **संरचनात्मक कमियां**: G20 के **निर्णय बाध्यकारी नहीं होते**, इसका **कोई औपचारिक चार्टर** नहीं है, BRICS और SCO जैसे मंचों से प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है, एक ही समय **जलवायु परिवर्तन पर COP29 बैठक** होने के बावजूद जलवायु लक्ष्यों पर अधिक प्रगति हासिल नहीं हो पाई।
- **इसका अपना कोई स्थायी सचिवालय नहीं है:** साथ ही, G7 और G20 की भूमिकाओं में स्पष्टता की कमी है।

निष्कर्ष

G20 भारत के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है जहाँ वह वैश्विक आर्थिक नीतियों को प्रभावित कर सकता है, ग्लोबल साउथ का प्रतिनिधित्व कर सकता है और ग्लोबल गवर्नेंस में सुधारों की वकालत कर सकता है। यह व्यापार, जलवायु कार्रवाई, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर और समावेशी विकास जैसे क्षेत्रों में भारत की भूमिका को बढ़ाकर उसकी वैश्विक नेतृत्वकारी क्षमता को सशक्त बनाता है।

2.11. G7: एक नज़र में (G7 at a Glance)

ग्रुप ऑफ सेवन [G7]

G-7 दुनिया के सबसे विकसित **लोकतंत्रों का एक अनौपचारिक समूह** है। इसमें कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका सदस्य देश है।

समकालीन विश्व में G7 की भू-राजनीतिक प्रासंगिकता

वैश्विक सुरक्षा और संघर्ष पर प्रतिक्रिया: G7 के देशों ने रूस पर प्रतिबंध लगाने में समन्वय दिखाया और जब्त हुई रूसी परिसंपत्तियों का उपयोग करके यूक्रेन को वित्त-पोषित किया।	**वैश्विक शासन के लिए संचालन समूह: उदाहरण के लिए- आधार क्षरण और लाभ स्थानांतरण (BEPS) पर OECD/ G20 फ्रेमवर्क** का समर्थन करता **है और FATF की** स्थापना **में भूमिका** निभाई।	**लोकतांत्रिक शक्तियों का मंच:** चीन और रूस जैसे देशों को प्रतिसंतुलित करते हुए **'नियम-आधारित व्यवस्था'** के लिए एक प्रमुख गठबंधन के रूप में कार्य करता है।	**सतत एवं डिजिटल गवर्नेंस का नेतृत्व:** GPAI एवं हिरोशिमा AI प्रोसेस के माध्यम से AI के नैतिक उपयोग का समर्थन करता है।	**ग्लोबल साउथ के साथ सहभागिता:** भारत, दक्षिण अफ्रीका, ब्राजील आदि के साथ सहयोग करता है।

G7 के लिए भू-राजनीतिक और संस्थागत बाधाएं

आर्थिक प्रभुत्व में कमी: G7 का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में हिस्सा **लगभग 70% (1980 के दशक) से घटकर लगभग 44% (2021)** हो गया।	**सर्वसम्मति की बाधाएं:** सदस्य देशों के राष्ट्रीय हित एकीकृत कार्रवाई में बाधा डालते हैं।	**कानूनी प्राधिकार का अभाव:** अनौपचारिक संरचना, निर्णयों को लागू करने के लिए कोई तंत्र मौजूद नहीं है।	**संयुक्त घोषणा जारी नहीं होना (2025):** नीतियों पर विशेष रूप से अमेरिका के साथ, गंभीर मतभेद होने के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई।	**ग्लोबल साउथ का कम प्रतिनिधित्व:** भारत, ब्राजील, नाइजीरिया जैसे ग्लोबल साउथ के देश इस समूह में शामिल नहीं हैं जिससे विश्व में G7 की वैधता सीमित होती है।

G7 में भारत के सामरिक हित

पश्चिमी देशों और ग्लोबल साउथ में संतुलन: भारत स्वयं को एक **"दक्षिण-पश्चिमी देश"** के रूप में प्रस्तुत करता है। (डॉ. जयशंकर)	**सतर्क कूटनीति:** विदेश नीति की स्वायत्तता बनाए रखते हुए ब्रिक्स में अमेरिका की आलोचना या **G7 में रूस** का विरोध करने से परहेज करता है।	**वैश्विक शक्ति बनने की आकांक्षा:** भारत का G7 के साथ संबंध हिंद-प्रशांत क्षेत्र की रणनीति और **महासागर (MAHASAGAR) सिद्धांत** के अनुरूप है।	**लोकतंत्र और विकास:** एक लोकतांत्रिक देश और **चौथी सबसे बड़ी** अर्थव्यवस्था के रूप में भारत का दर्जा उसके वैश्विक प्रभाव को बढ़ाता है।	**G7 के माध्यम से द्विपक्षीय संबंधों में सुधार:** कनाडा ने 2025 के **G7** में सम्मेलन में भारत को निमंत्रण देकर द्विपक्षीय संबंधों में तनाव को दूर करने का प्रयास किया।

निष्कर्ष

G7 शिखर सम्मेलन **सदस्य देशों को साझा मूल्यों और चिंताओं पर चर्चा करने के लिए एक मंच** प्रदान करता है। हालांकि शुरुआत में इसका ध्यान **अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति पर केंद्रित** था, लेकिन 1980 के दशक में, G7 ने अपने **कार्यक्षेत्र का विस्तार करते हुए विदेश नीति और सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को भी इसमें शामिल** कर लिया।

 © Vision IAS

2.12. नाटो (NATO)

उत्तर अटलांटिक संधि संगठन (नाटो/ NATO)

नाटो देशों ने हेग में हुई बैठक के दौरान **2025 तक अपनी-अपनी अर्थव्यवस्थाओं के कुल आउटपुट का 5 प्रतिशत रक्षा पर व्यय करने** पर सहमति व्यक्त की।

हालिया घटनाक्रम

नाटो ने **रक्षा क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद का 5%** निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है, जो कि 2% की पिछली प्रतिबद्धता से काफी अधिक है।
- इनमें से **3.5%** निवेश मुख्य (कोर) रक्षा आवश्यकताओं (जैसे, खरीद) में किया जाएगा।
- रक्षा और सुरक्षा संबंधी निवेशों **(जैसे;** बुनियादी ढांचा, रक्षा उद्योग) के लिए **1.5%** निर्धारित किया गया है।

नाटो का पूर्वी क्षेत्र में विस्तार: फिनलैंड 2023 में नाटो में शामिल हो गया, इसके बाद 2024 में स्वीडन भी नाटो में शामिल हो गया, जिससे उत्तरी यूरोप में गठबंधन मजबूत हुआ है।
- 2022 में **यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद यूक्रेन ने नाटो की सदस्यता** के लिए आवेदन किया है।

नाटो के पूर्वी क्षेत्र में विस्तार के प्रभाव

- **रूस और पश्चिमी देशों के बीच बढ़ता तनाव:** नाटो का पूर्व की ओर विस्तार रूस के संदेह को और अधिक बढ़ा रहा है, जिससे वह पश्चिमी देश-विरोधी गठबंधन में चीन और ईरान के और अधिक नजदीक जा रहा है।
- **क्षेत्रीय सैन्यीकरण:** नए सदस्य, देशों के बीच सैन्य एकीकरण के लिए फंड का उपयोग कर रहे हैं, जिससे वि-सैन्यीकरण का प्रयास कमजोर हो रहा है।
- **यूरोपीय देशों के बीच बढ़ती खाई:** यूरोपीय देशों के बीच आर्थिक (उत्तर-दक्षिण) और भू-राजनीतिक (पूर्व-पश्चिम) स्तर पर विभाजन बढ़ रहे हैं।
- **बढ़ती सुरक्षा चिंताएं:** रूस नाटो के विस्तार को अस्थिरता पैदा करने वाला तथा संघर्ष को बढ़ाने वाला मानता है।

नाटो का विस्तार और भारत के हितों पर इसका प्रभाव

- **भू-राजनीतिक सहयोग:** मजबूत नाटो, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत के हितों के अनुरूप है।
- **साझा मूल्य:** नाटो के साथ घनिष्ठ संबंध लोकतांत्रिक सिद्धांतों के लिए भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाती है।
- नाटो का विस्तार **चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित** करता है जो भारत के सामरिक हितों के अनुरूप है।
- **भारत के आतंकवाद-रोधी प्रयास** नाटो के **'अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद के विरुद्ध बढ़ी हुई तत्परता'** के अनुरूप हैं।

भारत-नाटो संबंधों की आगे की राह

- **क्वाड सहयोग को मजबूत करना:** संयुक्त सैन्य अभ्यास, नीतियों और खुफिया जानकारी साझा करने के माध्यम से स्वतंत्र और खुला हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुनिश्चित करना चाहिए।
- **नाटो की रणनीतिक संकल्पना 2022 के अनुरूप:** नौवहन की स्वतंत्रता, साइबर सुरक्षा और जलवायु खतरों के संबंध में भारत के हित नाटो 2022 के अनुरूप हैं।
- **नाटो के 'शांति और सुरक्षा के लिए विज्ञान (SPS) कार्यक्रम' के साथ सहयोग:** विज्ञान, नवाचार और नई तकनीक के क्षेत्र में।
- **अंतरिक्ष-रणनीतिक सहयोग का क्षेत्र:** भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम 'नाटो स्पेस सिम्पोजियम' पहल के माध्यम से नाटो के 2024 के बहु-क्षेत्रीय अंतरिक्ष अभियानों पर केंद्रित दृष्टिकोण का पूरक है।

निष्कर्ष

भारत को **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता, शक्ति संतुलन और व्यापक कूटनीतिक-सुरक्षा उद्देश्यों को आकार देने के लिए नाटो के साथ भागीदारी बढ़ाने के साथ-साथ अपनी रणनीतिक स्वायत्तता** बनाये रखना होगा।

Vision Publication
Igniting Passion for Knowledge..!
Scan the QR code to explore our collection and start your journey towards success.

2.13. मुख्य शब्दावलियां (Keywords)

आसियान की केंद्रीयता	सॉफ्ट पावर	वि-डॉलरीकरण	सामाजिक-आर्थिक अभिसरण	बॉटम-अप दृष्टिकोण
वैश्विक मामलों का लोकतंत्रीकरण	निवल सुरक्षा प्रदाता	नियम-आधारित व्यवस्था	संसाधन का अभिशासन	मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी
वर्चुअल व्यापार गलियारा	बिग ब्रदर की धारणा	प्लुरिलैटरल फ्रेमवर्क	एशियाई नाटो	रणनीतिक स्वायत्तता
विषम बहुध्रुवीयता	सतर्क कूटनीति	रणनीतिक घेराबंदी		

उत्तर लेखन प्रारूप

Q. भारत की सामरिक स्वायत्तता के लिए खतरा बन रही चीन की बेल्ट एंड रोड पहल को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत के पास क्या विकल्प उपलब्ध हैं? इस संदर्भ में, भारत के लिए भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) के महत्व की व्याख्या कीजिए।

परिचय	मुख्य भाग: 1	मुख्य भाग: 2	निष्कर्ष
2-3 पंक्तियों में IMEC और BRI की जानकारी दीजिए।	चीन की बेल्ट एंड रोड पहल को प्रतिसंतुलित करने के लिए भारत के पास उपलब्ध विकल्पों का उल्लेख कीजिए।	भारत के लिए भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) के महत्व का उल्लेख कीजिए।	दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देते समय रणनीतिक स्वायत्तता का महत्व बताते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़

देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं

- ✓ सामान्य अध्ययन
- ✓ निबंध
- ✓ दर्शनशास्त्र

2025	ENGLISH MEDIUM 27 JULY	हिन्दी माध्यम 27 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 27 JULY	हिन्दी माध्यम 27 जुलाई

Scan the QR CODE *to* download **VISION IAS** app

ऑप्शनल सब्जेक्ट टेस्ट सीरीज़

- ✓ भूगोल
- ✓ समाजशास्त्र
- ✓ दर्शनशास्त्र
- ✓ हिंदी साहित्य
- ✓ राजनीति विज्ञान एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंध

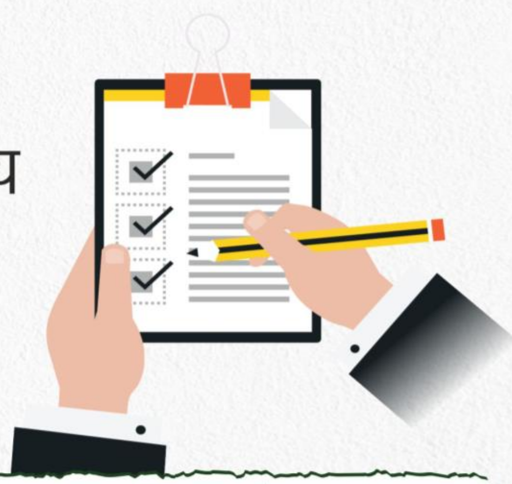

2025	ENGLISH MEDIUM 27 JULY	हिन्दी माध्यम 27 जुलाई
2026	ENGLISH MEDIUM 27 JULY	हिन्दी माध्यम 27 जुलाई

3. भारत और उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध (India and its Neighbourhood Relations)

3.1. भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (India's Neighbourhood First Policy)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत की **नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) को एक दशक पूरा** हुआ।

भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP) के बारे में

- **उत्पत्ति: नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी** की परिकल्पना **2008** में की गई थी तथा **2014 के बाद** इस पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा था।
- **उद्देश्य:** निकटतम पड़ोसी देशों जैसे **अफगानिस्तान, बांग्लादेश, भूटान, मालदीव, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान और श्रीलंका** के साथ संबंधों को मजबूत करना।
- **मुख्य सिद्धांत:** एक **गैर-पारस्परिक, परिणाम-उन्मुख दृष्टिकोण के साथ "5-स" फ्रेमवर्क** (सम्मान, संवाद, शांति, समृद्धि, संस्कृति)।

भारत की NFP के प्रमुख पहलू

- **कनेक्टिविटी के माध्यम से आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना: उदाहरण के लिए- बांग्लादेश:** जुलाई 2024 में मोंगला बंदरगाह पर एक टर्मिनल के परिचालन अधिकार और रेल पारगमन से पूर्वोत्तर भारत के लिए वस्तुओं की ढुलाई लागत कम हो गई है।
- **उच्च स्तरीय राजनीतिक सहभागिता में वृद्धि: उदाहरण के लिए- नेपाल:** भारत के प्रधान मंत्री की 2014 में नेपाल यात्रा, जो 17 वर्षों बाद किसी भारतीय प्रधान मंत्री की इस देश में पहली द्विपक्षीय यात्रा थी।
- **विकास संबंधी सहायता एवं अवसंरचनात्मक परियोजनाएं: उदाहरण के लिए- मालदीव:** ग्रेटर माले कनेक्टिविटी प्रोजेक्ट, आदि।
- **ऊर्जा सहयोग:** उदाहरण के लिए- **बांग्लादेश-नेपाल-भारत** त्रिपक्षीय विद्युत व्यापार समझौता हुआ था।
- **चीन के प्रभाव का मुकाबला करना: उदाहरण के लिए, मालदीव:** मालदीव को लगातार वित्तीय सहायता (विशेष रूप से मुद्रा विनिमय) चीन के प्रभाव से निपटने का प्रत्यक्ष प्रयास है।
- **मानवतावादी नेतृत्व: उदाहरण के लिए- वैक्सीन मैत्री:** मालदीव और भूटान को **"नेबरहुड फर्स्ट"** नीति के अनुरूप सबसे पहले वैक्सीन प्रदान की गई थी।

भारत के पड़ोस (दक्षिण एशिया) का भारत के लिए महत्व

- **आर्थिक एकीकरण: दक्षिण एशिया का अंतर-क्षेत्रीय व्यापार मात्र 5%** होने के कारण, भारत के पास क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण का नेतृत्व करने का अवसर है।
- **अवसंरचना: दक्षिण एशिया में अवसंरचना से जुड़ी पहलें** भारत को आर्थिक और रणनीतिक दोनों रूप से चीन को प्रतिसंतुलित करने का अवसर देती हैं।
- **सांस्कृतिक प्रभाव: दक्षिण एशिया का साझा इतिहास** लोगों के बीच मजबूत एकरूपता सुनिश्चित करता है तथा सॉफ्ट पावर प्रभाव को बढ़ावा देता है।
- **सुरक्षा: स्थिर दक्षिण एशिया** भारत की सुरक्षा हेतु काफी महत्वपूर्ण है, क्योंकि क्षेत्रीय संघर्षों का भारत की आंतरिक सुरक्षा पर प्रभाव पड़ सकता है।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाओं में निवेश:** जैसे बांग्लादेश के माध्यम से अखौरा-अगरतला रेल लिंक, अफगानिस्तान में INSTC, आदि।

चुनौतियां

- **राजनीतिक अस्थिरता:** उदाहरण के लिए- म्यांमार में तख्तापलट, बांग्लादेश में अशांति, मालदीव का चीन समर्थक रुख, 2021 में तालिबान का सत्ता पर कब्जा।
- **"बिग ब्रदर" वाली छवि:** उदाहरण के लिए, 2015 में नेपाल की आर्थिक नाकेबंदी के बाद हुई प्रतिक्रिया।
- **परियोजनाओं के कार्यान्वयन में देरी:** उदाहरण के लिए, माले ब्रिज निर्माण में देरी ने भारत विरोधी भावना को बढ़ावा दिया।
- **अनसुलझे विवाद:** तीस्ता नदी (बांग्लादेश), कालापानी (नेपाल)।
- **चीन के BRI का विस्तार:** हंबनटोटा बंदरगाह (श्रीलंका), नेपाल और बांग्लादेश में BRI का विस्तार।
- **आर्थिक संकट:** 2022 में, आर्थिक संकट ने राजनीतिक अस्थिरता और सार्वजनिक अशांति को जन्म दिया है।
- **अवैध प्रवास और जबरन विस्थापन:** यह आर्थिक और राजनीतिक अस्थिरता के कारण श्रीलंका और बांग्लादेश से भारत में हो रहा है।

आगे की राह (5-स दृष्टिकोण)

- **सम्मान:** 'पड़ोसी प्रथम सिद्धांत' के माध्यम से पड़ोसियों पर ज़ोर।
- **संवाद:** ट्रैक 2 कूटनीति में शामिल होना।
- **सहयोग:** संकट के समय पड़ोसियों की सहायता करना।
- **शांति:** पड़ोसी देशों के साथ विवादों को सुलझाने की दिशा में भारत का मूल सिद्धांत।
- **समृद्धि:** अंतर-क्षेत्रीय व्यापार और अवसंरचना की कनेक्टिविटी के माध्यम से।

निष्कर्ष

"भारत जैसे देश को अपनी समृद्धि को पूरे क्षेत्र के उत्थान के लिए एक प्रेरक शक्ति के रूप में देखने की दूरदृष्टि अपनानी चाहिए। इसका अर्थ है - पड़ोसी देशों को अधिक महत्व देना और अधिक संसाधन आवंटित करना। यह एक ऐसी नीति है जिसे 'पड़ोसी प्रथम' के मुख्य भाग के रूप में देखा जाता है।" **एस. जयशंकर ने अपनी पुस्तक 'द इंडिया वे' में इसका उल्लेख किया है।**

3.2. भारत-चीन संबंधों के 75 वर्ष (75 Years of India-China Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

चीन के राष्ट्रपति ने 75 वर्ष पुराने संबंधों के उपलक्ष्य में "ड्रैगन-एलिफेंट टैंगो" का प्रस्ताव रखा।

अन्य संबंधित तथ्य

- **"ड्रैगन-एलिफेंट टैंगो"** शब्दावली का उपयोग **चीन और भारत** के बीच **शांतिपूर्ण एवं सहयोगात्मक संबंधों** के विजन को व्यक्त करने के लिए किया जाता है।
- ड्रैगन शब्द **चीन** का प्रतिनिधित्व करता है, जो चीनी पौराणिक कथाओं का एक प्रतीक है। वहीं एलीफेंट (हाथी) शब्द **भारत** का प्रतिनिधित्व करता है।

शांतिपूर्ण भारत-चीन संबंधों का महत्व

- **क्षेत्रीय शांति:** शांतिपूर्ण संबंध विवादित सीमा पर टकराव की आशंका को कम करता है और इससे दक्षिण एशिया और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में व्यापक शांति और स्थिरता को बढ़ावा मिलता है।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समृद्धि और शांति:** स्थिर भारत-चीन संबंध हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सामरिक तनाव को कम करके और सहयोगात्मक विकास को बढ़ावा देकर समृद्धि सुनिश्चित कर सकता है।
- **व्यापार और निवेश:** उदाहरण के लिए, चीन भारत के फार्मास्युटिकल उद्योग के लिए **सक्रिय फार्मास्युटिकल घटकों (APIs)** का मुख्य स्रोत है। साथ ही वह भारत के स्टार्टअप इकोसिस्टम में बड़ा निवेशक भी है।
- चीन भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझीदार है (118.4 अरब डॉलर)।
- **संसाधनों तक पहुंच:** चीन दुर्लभ भू-धातुओं का प्रमुख आपूर्तिकर्ता है, जो तकनीकी और सौर लक्ष्यों के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **वैश्विक प्रभाव:** ब्रिक्स और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सहयोग और विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में सुधार के लिए दबाव बनाया जा सकता है।
- **वैश्विक चुनौतियों का सामना करना: जलवायु परिवर्तन, लोक स्वास्थ्य, ऊर्जा सुरक्षा** जैसी वैश्विक चुनौतियों पर संयुक्त कार्रवाई को भी बढ़ावा मिलेगा।

भारत-चीन संबंधों में प्रमुख चिंताएँ

- **सीमा स्पष्ट रूप से सीमांकन का अभाव:** 3,488 किलोमीटर लंबी वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर विवादों के कारण झड़पें हुई हैं। उदाहरण के लिए, डोकलाम (2017), गलवान (2020)
- **व्यापार असंतुलन:** व्यापार घाटा बढ़कर 85 अरब डॉलर (2023-24) हो गया.
- सेमीकंडक्टर, फार्मा APIs आदि के लिए **चीन पर निर्भरता।**
- **चीन-पाकिस्तान गठजोड़:** PoK से होकर गुजरने वाला चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) भारत की संप्रभुता का उल्लंघन करता है।
- **मुखरता:** चीन स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स जैसी रणनीतियों के माध्यम से मालदीव, श्रीलंका जैसे भारत के पड़ोसी देशों में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहा है।

© Vision IAS

- **जल शक्ति:** चीन उत्तर-पूर्व की नदियों को नियंत्रित करता है; उसने **जांगमू, जियाचा आदि** जैसे बांध बनाए हैं।
- **भारत के चारों ओर एक रणनीतिक आर्क**: **चीन, पाकिस्तान और बांग्लादेश के गठबंधन** ने अपनी पहली त्रिपक्षीय बैठक आयोजित की, जो भारत के पड़ोस में बीजिंग के बढ़ते प्रभाव को दर्शाती है।
    - पहले भी चीन ने **पाकिस्तान और अफगानिस्तान** के साथ त्रिपक्षीय वार्ताएं की थीं, जिससे अफगानिस्तान से लेकर बंगाल की खाड़ी तक एक सामरिक घेरा मजबूत हुआ।
    - साथ ही, **चीन-तुर्की-पाकिस्तान गठबंधन,** पहलगाम आतंकी हमले के दौरान स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। यह भारत के क्षेत्रीय प्रभावशीलता को चुनौती देता है।

आगे की राह

- **राजनयिक संवाद बनाए रखना:** उदाहरण के लिए, दोनों देश **ब्रिक्स, SCO, G20 और एशियन इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट बैंक (AIIB)** के सदस्य हैं।
- **एक-दूसरे का सम्मान करना: सम्मान, संवेदनशीलता और आपसी हित** पर आधारित संबंध।
- **रणनीतिक संतुलन:** कूटनीतिक संलग्नता को बनाए रखते हुए अपनी **संप्रभुता** की रक्षा करना।
- **जल संसाधन प्रबंधन:** दोनों देशों में बहने वाली नदियों के लिए हाइड्रोलॉजिकल डेटा साझा करने पर सहयोग बढ़ाना चाहिए।
- **विश्वास निर्माण उपाय (CBMs)**: सीमा क्षेत्रों में **आर्थिक और सांस्कृतिक** आदान-प्रदान का विस्तार करना चाहिए।

चीन की स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति बनाम भारत की "हीरों का हार (Necklace of Diamonds)" रणनीति

स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति

- **चीन की रणनीति:** चीन **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में वाणिज्यिक और सैन्य ठिकानों** (जिन्हें "मोती" कहा जाता है) का एक नेटवर्क विकसित कर रहा है। इसका उद्देश्य अपने **ऊर्जा आपूर्ति मार्गों की सुरक्षा** करना और **क्षेत्र में अपने प्रभाव का विस्तार करना है।**
- **चीन के प्रभाव वाले क्षेत्र:** पाकिस्तान (ग्वादर), श्रीलंका (हंबनटोटा), बांग्लादेश (चटगांव) और म्यांमार (सितवे और कोको द्वीप) और **जिबूती में उसका एक सैन्य अड्डा** भी है।

हीरों का हार (Necklace of Diamonds)" रणनीति

इस बहुआयामी अप्रोच में निम्नलिखित शामिल हैं -

- **नौसैनिक अड्डों का विकास और पहुंच सुनिश्चित करना:** उदाहरण के लिए, ईरान (चाबहार), ओमान, सिंगापुर (चांगी नौसैनिक अड्डा)।
- **क्षेत्रीय साझेदारी: एक्ट ईस्ट नीति** अपनाई गई है। इसके अलावा आसियान, जापान और **ऑस्ट्रेलिया** के साथ संबंधों को मजबूत किया जा रहा है।
- **समुद्री विजन:** क्षेत्रीय सुरक्षा और संवृद्धि हेतु **सागर/ महासागर/ MAHASAGAR** सिद्धांतों को अपनाया गया है।

निष्कर्ष

"भारत और चीन के बीच स्थिर और शांतिपूर्ण संबंध न केवल दोनों देशों के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र और विश्व के लिए महत्वपूर्ण हैं। राजनयिक और सैन्य स्तरों पर सकारात्मक एवं रचनात्मक द्विपक्षीय संबंध स्थापित कर दोनों देश अपनी सीमाओं पर शांति एवं स्थिरता बहाल करने और बनाए रखने में सक्षम होंगे।"

- भारत के प्रधान मंत्री।

दक्षिण चीन सागर (SCS) में विवाद

- **प्रादेशिक विवाद:** चीन पश्चिमी हान राजवंश के समय के अपने ऐतिहासिक अधिकार का हवाला देकर पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा करता है। (1992 का दावा; "नौ-डैश लाइन" द्वारा चिह्नित)
- **2016 का विवाद:** परमानेंट कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन ने फिलीपींस के पक्ष में फैसला सुनाया और कहा कि चीन की "नाइन-डैश लाइन" दावे का कोई कानूनी आधार नहीं है।
- **दक्षिण चीन सागर,** प्रशांत और हिंद महासागर को मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से पूर्वी चीन सागर से जोड़ता है। यह वैश्विक व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है।
    - वैश्विक समुद्री व्यापार का एक-तिहाई हिस्सा दक्षिण चीन सागर (SCS) से होकर गुजरता है;
    - साथ ही, प्रतिवर्ष वैश्विक स्तर पर कारोबार किए जाने वाले **लगभग 40% पेट्रोलियम उत्पाद** इसी समुद्र मार्ग से गुजरते हैं।
    - भारत के **समुद्री मार्ग से** होने वाले व्यापार में से **लगभग 50 फीसद व्यापार** मलक्का जलडमरूमध्य से होता है।

दक्षिण चीन सागर (SCS) में विवाद के कारण क्या है?

- **चीन द्वारा सैन्यीकरण: चीन ने 2013-2015 के बीच** स्प्रैटली द्वीप समूह में **कृत्रिम द्वीपों का निर्माण** किया।
- **राष्ट्रवाद:** चीन और अन्य तटीय देशों ने आक्रामक रुख अपनाते हुए दक्षिण चीन सागर पर अपने-अपने दावों को मजबूत करने के लिए राष्ट्रवादी बयानबाजी का सहारा लिया है।
- **बाह्य हितधारक:**
  - **संयुक्त राज्य अमेरिका:** हमले की स्थिति में फिलीपींस की रक्षा करने के लिए बाध्यकारी संधि चीन की चिंताओं को बढ़ा रहा है।
  - **ताईवान फैक्टर:** चीन-ताइवान के बीच तनाव बढ़ने से क्षेत्र में और अत्यधिक अस्थिरता उत्पन्न हो रही है।

निष्कर्ष

जैसे-जैसे चीन दक्षिण चीन सागर में अपनी सैन्य मौजूदगी बढ़ा रहा है, वैश्विक व्यापार के लगभग $3.4 ट्रिलियन मूल्य को खतरा उत्पन्न हो रहा है। भारत के लिए यह और भी गंभीर है क्योंकि उसका लगभग 50% व्यापार मलक्का जलडमरूमध्य से होकर गुजरता है। ऐसे में भारत को इस रणनीतिक जलमार्ग की सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। यह लक्ष्य वह क्वाड देशों के साथ सहयोग, ASEAN देशों के साथ मजबूत साझेदारी और UNCLOS के तहत चीन की आक्रामक गतिविधियों का विरोध करके हासिल कर सकता है। यदि ऐसा नहीं किया गया, तो एशिया का भविष्य चीन के कृत्रिम द्वीपों और उसके विस्तारवादी क्षेत्रीय दावों के अधीन हो सकता है।

3.2.1. चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (China-Pakistan Economic Corridor: CPEC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

चीन, पाकिस्तान और अफगानिस्तान के विदेश मंत्रियों ने **चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे (CPEC)** को अफगानिस्तान तक बढ़ाने पर सहमति व्यक्त की है।

अन्य संबंधित तथ्य

- हाल ही में, चीन और पाकिस्तान ने CPEC के अंतर्गत सहयोग में तेजी लाने के लिए छह समझौतों पर हस्ताक्षर किए।

चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC) के बारे में

- CPEC **चीन के उत्तर-पश्चिमी शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र और पश्चिमी पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाला लगभग 3,000 किलोमीटर लंबा मार्ग** है। इस मार्ग में कई **अवसंरचना परियोजनाओं** का विकास किया जा रहा है।
- CPEC, **बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** की एक प्रमुख परियोजना है। BRI को **2015 में शुरू** किया गया था।
- यह **सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट** और **मैरीटाइम सिल्क रोड** के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करेगा। इसमें सड़क, रेलवे, गैस पाइपलाइन और ऊर्जा परियोजनाएं शामिल हैं।
  - **सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट ("बेल्ट"):** यह चीन को मध्य एशिया एवं दक्षिण एशिया से और आगे यूरोप से जोड़ती है।
  - **न्यू मैरीटाइम सिल्क रोड ("रोड"):** यह चीन को दक्षिण-पूर्व एशिया, खाड़ी देशों, पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका से जोड़ते हुए यूरोप तक जाता है।
- विवादास्पद रूप से CPEC पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK), विशेष रूप से गिलगित बाल्टिस्तान से होकर गुजरता है, जो भारत की क्षेत्रीय संप्रभुता का उल्लंघन है।

बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) के बारे में

- BRI की शुरुआत चीन ने **वर्ष 2013** में की थी, BRI एक महत्वाकांक्षी वैश्विक अवसंरचना रणनीति है, जो एशिया, अफ्रीका और यूरोप के 150 से अधिक देशों को शामिल करती है।
- BRI को **वन बेल्ट वन रोड (OBOR)** के नाम से भी जाना जाता है। इसके दो घटक हैं-
  - **सिल्क रोड इकोनॉमिक बेल्ट ("बेल्ट"):** यह भूमि-आधारित बेल्ट चीन को मध्य एशिया एवं दक्षिण एशिया से और आगे यूरोप से जोड़ती है।
  - **21 वीं शताब्दी का न्यू मैरीटाइम सिल्क रोड ("रोड"):** यह मैरीटाइम रोड चीन को दक्षिण-पूर्व एशिया, खाड़ी देशों, पूर्वी और उत्तरी अफ्रीका से जोड़ते हुए यूरोप तक जाता है।

CPEC के विस्तार से भारत के हितों को कैसे नुकसान होता है

- **संप्रभुता का उल्लंघन:** CPEC भारत की सहमति के बिना पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है।
- **रणनीतिक खतरा:** यह अवसंरचना पाकिस्तान को भारत के खिलाफ एक सस्ता प्रतिरोधक बना सकता है।
- **सुरक्षा जोखिम:** यह अवसंरचना आतंकवाद, तस्करी और अन्य सीमा-पार खतरों को बढ़ावा दे सकती है।
- **अफगानिस्तान तक विस्तार:**
  - **भू-रणनीतिक चुनौती:** यह विस्तार भारत के क्षेत्रीय प्रभाव को कम कर सकता है और चाबहार पोर्ट और अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारे (INSTC) जैसे परियोजनाओं को कमजोर कर सकता है।
  - **रणनीतिक घेराबंदी:** यह चीन-पाकिस्तान-अफगानिस्तान गठजोड़ को मजबूत कर सकता है, जिससे भारत की स्थिति कमजोर हो सकती है।
  - **सुरक्षा संबंधी जोखिम:** अफगानिस्तान की भूमि (तालिबान शासन के तहत) का संभावित उपयोग भारत विरोधी आतंकवादी गतिविधियों के लिए हो सकता है।

CPEC के प्रत्युत्तर में भारत द्वारा उठाए गए कदम

- **चाबहार बंदरगाह**: भारत का ईरान में रणनीतिक निवेश पाकिस्तान को दरकिनार करते हुए मध्य एशिया तक पहुँच का मार्ग प्रदान करता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC)**: ईरान और रूस के माध्यम से भारत को यूरोप से जोड़ने वाला एक मल्टी-मॉडल परिवहन मार्ग।
- **भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC)**: इसे 2023 में लॉन्च किया गया, जिससे भारत, मध्य पूर्व और यूरोप के बीच कनेक्टिविटी को बढ़ावा मिलेगा।
- **क्वाड्रिलेटरल सिक्योरिटी डायलॉग (QUAD)**: भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया ने **एक स्वतंत्र, खुले और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र** के लिए सहयोगात्मक रुख अपनाया है।

निष्कर्ष

CPEC का अफ़ग़ानिस्तान में विस्तार भारत की संप्रभुता और क्षेत्रीय प्रभाव के लिए खतरा है, जिससे 62 अरब डॉलर का गलियारा एक रणनीतिक जाल बन सकता है। ऐसे में भारत को चाबहार-INSTC एकीकरण, IMEC और क्वाड साझेदारियों को तेजी से आगे बढ़ाना होगा, ताकि अपने पड़ोसी देशों में चीन की BRI महत्वाकांक्षाओं का मुकाबला किया जा सके।

VISIONIAS INSPIRING INNOVATION
न्यूज़ टुडे
रोजाना 9 PM पर न्यूज़ टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए
न्यूज़ टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए
न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए
अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची
"न्यूज़ टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:
किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए
न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है
टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

3.3. सिंधु जल संधि (Indus Water Treaty)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में हुए **पहलगाम आतंकी हमले के बाद भारत ने पाकिस्तान के साथ की गई 1960 की सिंधु जल संधि (IWT) को तत्काल प्रभाव से निलंबित** कर दिया। इस फैसले पर तब तक कोई पुनर्विचार नहीं किया जाएगा, जब तक कि पाकिस्तान विश्वसनीय तौर पर सीमा-पार आतंकवाद को अपना समर्थन देना बंद नहीं कर देता।

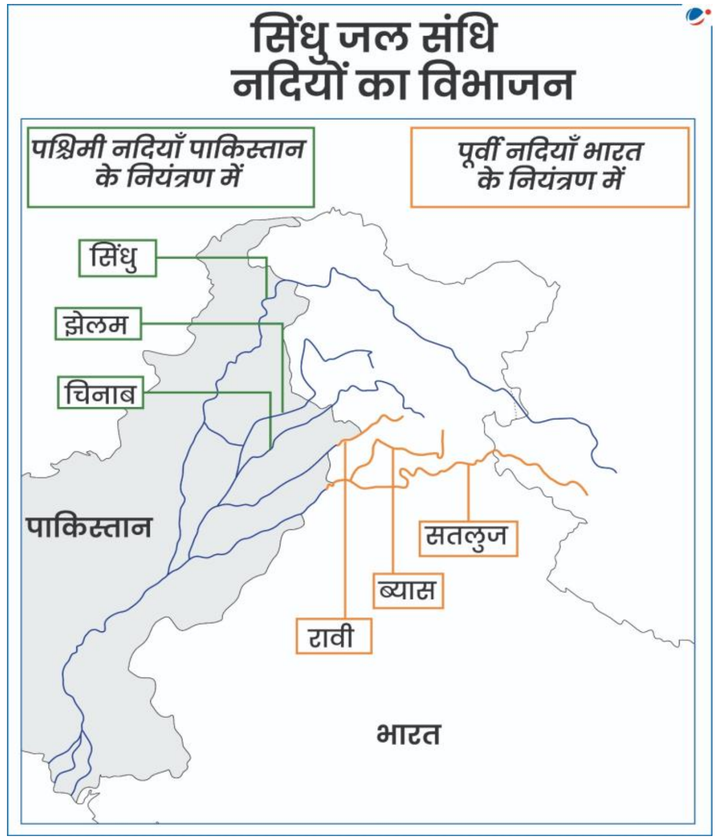

अन्य संबंधित तथ्य

- **पाकिस्तान के लिए परिणाम:**
  - **खाद्य सुरक्षा संकट:** पाकिस्तान की 80% खाद्य फसलें सिंधु नदी प्रणाली पर निर्भर हैं।
  - **कृषि निर्यात में गिरावट:** लगभग 5 अरब डॉलर की गिरावट।
  - **ऊर्जा सुरक्षा का खतरा।**

सिंधु जल संधि (IWT) के बारे में

- **उत्पत्ति:** सिंधु जल संधि पर **1960 में भारत और पाकिस्तान ने हस्ताक्षर** किए थे। इस संधि पर **विश्व बैंक द्वारा मध्यस्थता** की गई थी।
- **उद्देश्य:** सिंधु और उसकी सहायक नदियों के जल का **भारत व पाकिस्तान के बीच वितरण** सुनिश्चित करना।
- **नदी जल के बंटवारे के प्रावधान:**
  - **पूर्वी नदियां (रावी, ब्यास और सतलुज): भारत** इन नदियों का समस्त जल बिना किसी रोक-टोक के उपयोग कर सकता है।
  - **पश्चिमी नदियां (सिंधु, झेलम और चिनाब):** इन नदियों का जल **पाकिस्तान** को आवंटित किया गया है। हालांकि, भारत को विशिष्ट गैर-उपभोग उद्देश्य से कुछ सीमित गतिविधियों की अनुमति प्राप्त है, जैसे- नौवहन, बाढ़ सुरक्षा या बाढ़ नियंत्रण, घरेलू उपयोग, कृषि उपयोग, जल-विद्युत उत्पादन से संबंधित गतिविधियां, आदि।
  - संधि के **अनुच्छेद III(1) के अनुसार,** "भारत पर यह दायित्व है कि वह पश्चिमी नदियों के जल के प्रवाह को पाकिस्तान में बहने देने के लिए बाध्य है।"
  - **डेटा का आदान-प्रदान:** संधि के तहत जल प्रवाह और उपयोग के संबंध में दोनों पक्षों के बीच नियमित रूप से जानकारी का आदान-प्रदान किया जाता है।
- **विवाद समाधान:** IWT **3-चरणीय विवाद समाधान तंत्र** प्रदान करता है, अर्थात्:
  - **चरण 1: स्थायी सिंधु आयोग (PIC)** – दो आयुक्त; **प्रतिवर्ष** बैठक।
  - **चरण 2: तटस्थ विशेषज्ञ** – तटस्थ विशेषज्ञ की नियुक्ति विश्व बैंक द्वारा की जाती है। इसका निर्णय बाध्यकारी होता है।
  - **चरण 3: मध्यस्थता न्यायालय (CoA)** – यह आम तौर पर सात सदस्यों वाला अस्थायी मध्यस्थता अधिकरण होता है, जो अपनी प्रक्रियाओं एवं निर्णयों का निर्धारण **बहुमत** से करता है।

IWT से संबंधित अन्य मुद्दे

- **भारतीय बांधों पर पाकिस्तान की आपत्तियां:** किशनगंगा (झेलम) और रतले (चेनाब) बांधों पर पाकिस्तान ने आपत्ति जताई है।
- **विवाद समाधान-तंत्र का पालन न करना:** भारत की किशनगंगा जलविद्युत परियोजना पर पाकिस्तान ने तटस्थ विशेषज्ञ तंत्र को दरकिनार करते हुए सीधे **हेग स्थित स्थायी मध्यस्थता न्यायालय (PCA)** में मामले को ले गया था।
- **जैव विविधता पर प्रभाव:** शाहपुरकंडी (रावी) और उझ (रावी) परियोजनाएं रावी के प्रवाह को बदल सकती हैं। इससे सिंधु नदी डॉल्फिन और उनका पर्यावास प्रभावित हो सकते हैं।

© Vision IAS

- **राज्य-प्रायोजित आतंकवाद:** 2016 में, कश्मीर में एक आतंकवादी हमले के बाद भारत ने चेतावनी दी थी कि “पानी और खून एक साथ नहीं बह सकते”।
- **संधि में योजना के अनुसार नियमित डेटा साझाकरण नहीं:** नदी बेसिन की गतिशीलता को समग्रता से समझने के लिए जल प्रवाह संबंधी डेटा साझाकरण महत्वपूर्ण रूप से आवश्यक है।

निष्कर्ष

भारत द्वारा ‘निलंबन’ शब्द का प्रयोग अपने अंतर्राष्ट्रीय दायित्वों को अस्वीकार करने के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। बल्कि, यह एक रणनीतिक संकेत है कि संधियों को व्यावहारिक राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए लचीला और प्रासंगिक बनाया जाना चाहिए। ये संधियां तभी टिकाऊ रह सकती हैं जब सभी पक्ष अपनी विश्वसनीयता बनाए रखें और भारत के राष्ट्रीय हितों को कोई क्षति न पहुंचे।

3.3.1. शिमला समझौता (Shimla Agreement)

सुर्ख़ियों में क्यों?

पाकिस्तान ने घोषणा की है कि वह **शिमला समझौते सहित भारत के साथ सभी द्विपक्षीय समझौतों में अपनी भागीदारी को ‘निलंबित’** रखेगा।

शिमला समझौता

- **पृष्ठभूमि:** भारत-पाकिस्तान ने **1971 के युद्ध के बाद शांति उपाय के रूप में इस समझौते पर 1972 में हस्ताक्षर** किए थे।
  - 1971 के युद्ध के परिणामस्वरूप **पूर्वी पाकिस्तान की जगह बांग्लादेश नामक एक नए राष्ट्र का निर्माण** हुआ।
- **शिमला समझौते के मुख्य प्रावधान:**
  - **संबंधों का सामान्यीकरण:** संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांत और उद्देश्य दोनों देशों के बीच संबंधों को विनियमित करेंगे।
    - इस समझौते में **संचार, व्यापार, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आम लोगों के बीच संपर्क को फिर से स्थापित करने** के लिए उपायों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है।
    - इसने युद्धबंदियों और संघर्ष के दौरान हिरासत में लिए गए नागरिकों की स्वदेश वापसी को भी सुगम बनाया, जो एक मानवीय कदम था।
- **द्विपक्षीय समाधान:** सभी विवादों का समाधान आपसी सहमति से शांतिपूर्ण माध्यमों के जरिए करना, जैसे- द्विपक्षीय वार्ता या किसी अन्य शांतिपूर्ण तरीके से।
- **जम्मू और कश्मीर में नियंत्रण रेखा (LoC) की स्थापना:** युद्ध के बाद **17 दिसंबर 1971** को जम्मू और कश्मीर में जो संघर्ष विराम रेखा थी, उसे लाइन ऑफ कंट्रोल (LoC) मान लिया गया।
- **संप्रभुता और क्षेत्रीय अखंडता के लिए सम्मान:** दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता का सम्मान करने तथा आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प लिया।
- **भविष्य की बैठकों के लिए प्रावधान:** शांति प्रयासों को आगे बढ़ाने और अनसुलझे मुद्दों का समाधान करने के लिए शासनाध्यक्षों के बीच बैठकों का प्रावधान किया गया।

शिमला समझौते का महत्व

कूटनीतिक फ्रेमवर्क के मूल मुद्दों को द्विपक्षीय रखना: यह व्यवस्था कश्मीर के मुद्दे को अंतर्राष्ट्रीय मुद्दा बनाने के पाकिस्तान के प्रयासों को विफल करने में सहायक सिद्ध हुई।

लाइन ऑफ़ कंट्रोल को स्थिर बनाना: इस समझौते ने इसे अंतर्राष्ट्रीय वैधता प्रदान की।

सांस्कृतिक, वैज्ञानिक एवं आर्थिक सहयोग और आदान-प्रदान की संभावना: जैसे करतारपुर गलियारा, नया वीजा समझौता 201 , आदि।

विश्वास बहाली और संवाद: आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से।

शिमला समझौते के निलंबन के प्रभाव

- **सांकेतिक और राजनयिक प्रभाव:** पाकिस्तान द्वारा निलंबन मुख्य रूप से सांकेतिक है, क्योंकि बार-बार उल्लंघन के कारण इस समझौते की व्यावहारिक प्रासंगिकता कम हो गई है। (जैसे, **2019 के पुलवामा हमले**)
- **LoC के लिए सामरिक निहितार्थ**: पाकिस्तान द्वारा LoC को वास्तविक सीमा के रूप में मान्यता न देने से यथास्थिति को बदलने के प्रयास हो सकते हैं, जैसा कि **कारगिल युद्ध** में देखा गया था।
- **क्षेत्रीय स्थिरता:** इस समझौते का निलंबन क्षेत्रीय स्थिरता को कमजोर कर सकता है, विशेष रूप से परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के संदर्भ में।
- **अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण:** पाकिस्तान का यह कदम अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं का उल्लंघन करने के लिए पाकिस्तान की आलोचना का अवसर प्रदान कर सकता है। इससे पाकिस्तान की अविश्वसनीयता संबंधी भारत के आरोपों को बल मिल सकता है।
- **भारत के लिए सामरिक लाभ:** भारत **सीमा-पार आतंकवाद** के खिलाफ अधिक कठोर रुख अपना सकता है, **पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) पर अपने दावों पर नए सिरे से फैसला ले सकता है।**

निष्कर्ष

शिमला समझौते में भारत-पाकिस्तान संबंधों को फिर से स्थापित करने की क्षमता है, क्योंकि इसके द्विपक्षवाद और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धांतों ने स्थिरता के लिए एक ढांचा प्रदान किया था। आगे बढ़ते हुए, दोनों राष्ट्र ऐतिहासिक शिकायतों को दूर करने और आपसी विश्वास को बढ़ावा देने के लिए शिमला समझौते की भावना का सहारा ले सकते हैं।

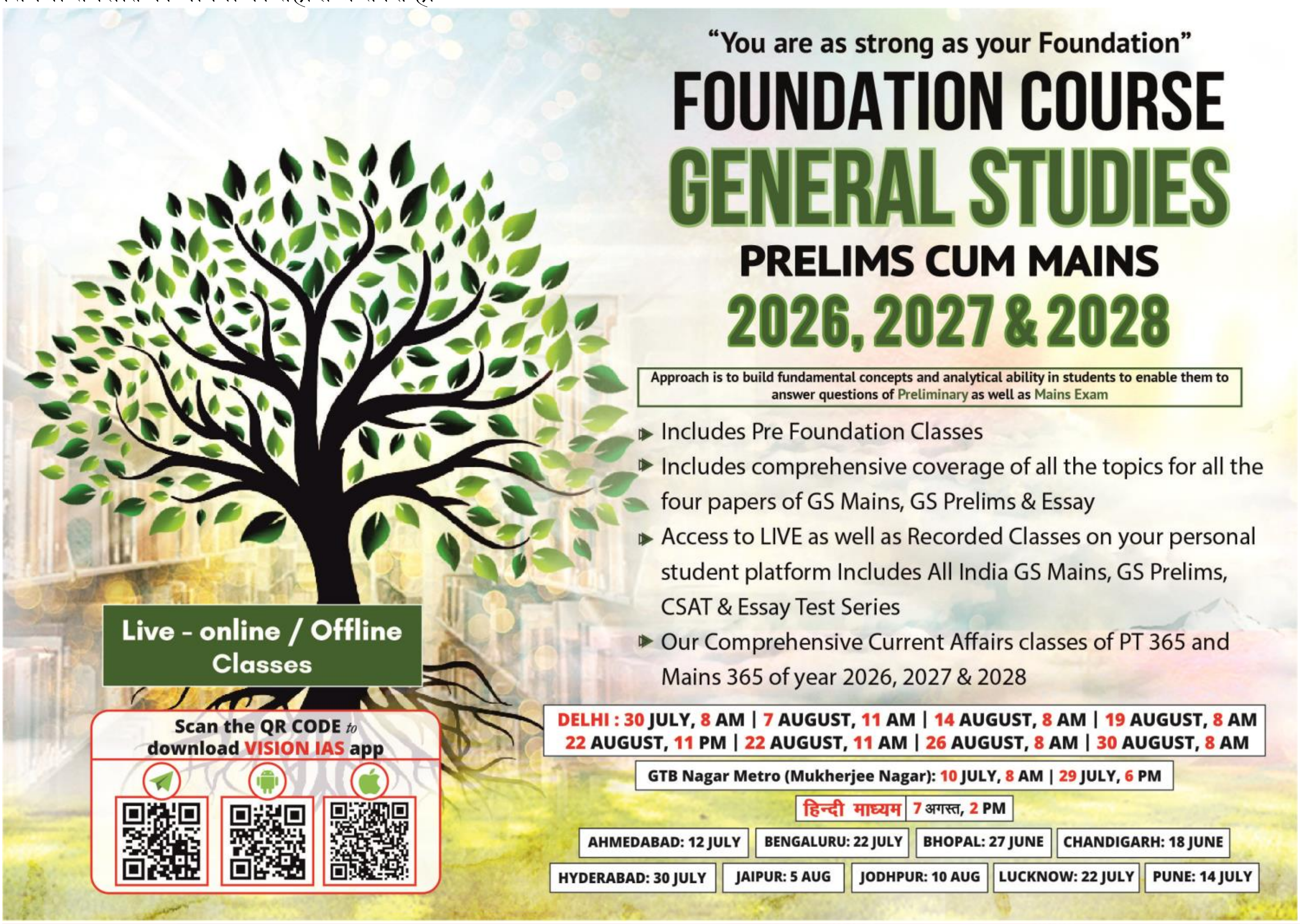

3.4. भारत-श्रीलंका संबंध: एक नज़र में (India – Sri Lanka Relations at a Glance)

भारत-श्रीलंका संबंध

भारत-श्रीलंका संबंध ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संबंधों पर आधारित हैं, तथा दोनों देश **क्षेत्रीय स्थिरता, व्यापार सहयोग को बढ़ाने और साझा सुरक्षा** चुनौतियों से निपटने को प्राथमिकता देते हैं।

भारत-श्रीलंका संबंधों का महत्व

- **ब्रिक्स का सदस्य बनने के लिए श्रीलंका** के आवेदन का भारत ने समर्थन दिया है; श्रीलंका ने **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में 2028-29 के कार्यकाल के लिए अस्थायी सदस्यता हेतु भारत की उम्मीदवारी** का समर्थन किया है।
- **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में साझा समुद्री सुरक्षा हित:** दोनों देशों ने पारंपरिक और गैर-पारंपरिक खतरों से निपटने के लिए प्रतिबद्धता व्यक्त की है।
- दोनों देश **राष्ट्रमंडल समूह, इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)** और **बिम्सटेक** के सदस्य हैं।
- संयुक्त अभ्यास – **SLINEX (नौसेना अभ्यास) और मित्र शक्ति (थल सेना अभ्यास); मिलन (MILAN) में भाग लिया।**

श्रीलंका के लिए भारत का आर्थिक महत्व

- **वित्तीय सहायता:** भारत ने 2022 और 2023 में श्रीलंका को सहायता के रूप में लगभग 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान किए; **कांकेसंथुराई बंदरगाह** के जीर्णोद्धार के लिए आर्थिक सहायता प्रदान की है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का बेलआउट पैकेज: भारत ने** पूर्व-आश्वासन शर्त पूरी करके 2023 में IMF द्वारा श्रीलंका के लिए 2.9 बिलियन डॉलर के बेलआउट पैकेज की मंजूरी में सहयोग किया।
- भारत श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार और श्रीलंका में सबसे बड़ा विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक है। साथ ही, श्रीलंका में सबसे अधिक पर्यटक भारत से आते हैं।

भारत-श्रीलंका संबंधों में बाधाएं/ अड़चने

- **चीन का बढ़ता प्रभाव:** चीन हंबनटोटा बंदरगाह जैसी परियोजनाओं में निवेश बढ़ा रहा है। इससे भारत के रणनीतिक हितों पर प्रतिकूल असर पड़ने की आशंका है।
- **मछुआरों के बीच विवाद:** श्रीलंका भारतीय मछुआरों द्वारा बॉटम ट्रॉलर के उपयोग का विरोध करता रहा है। इसके अलावा, **कच्चातिवु द्वीप** को लेकर भी दोनों देशों के बीच समय-समय पर क्षेत्रीय विवाद उत्पन्न हो जाता है।
- **तमिल नृजातीय मुद्दा:** इससे श्रीलंका के संविधान में **13वें संशोधन** {इंडो-लंका समझौते (1987)} को लागू करने में देरी हो रही है। इससे भारत की घरेलू राजनीति भी प्रभावित होती है।

आगे की राह

- **भारत की पाँच "S" की नीति:** भारत को सम्मान (Samman), संवाद (Samvad), सहयोग (Sahyog), शांति (Shanti); तथा सार्वभौमिक समृद्धि (Samriddhi) के लिए अनुकूल परिस्थितियां बनाने की नीति पर चलना चाहिए।
- **रचनात्मक सहयोग:** मछुआरों से जुड़े विवाद को सुलझाने के लिए एक **स्थायी द्विपक्षीय संस्थागत तंत्र** स्थापित करना चाहिए; साथ ही, 13वें संशोधन को प्रभावी तरीके से लागू करना चाहिए।
- **सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति:** तकनीक और प्रवासी सहयोग के माध्यम से दोनों देशों को **बौद्ध सर्किट और रामायण ट्रेल** के तहत धार्मिक पर्यटन को संयुक्त रूप से बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष

भारत के विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने श्रीलंका में हाल के आर्थिक संकट के दौरान भारत के सहयोग संदर्भ में कहा की "अपना सो अपना पराया सो पराया (Blood is thicker than water)"। भारत के लिए यह देखना स्वाभाविक था कि इस कठिन समय में वह श्रीलंका के साथ कैसे खड़ा हो सकता है।

3.5. भारत-अफगानिस्तान संबंधों में बदलाव (Shift in India–Afghanistan Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **भारत के विदेश सचिव और अफगानिस्तान के कार्यवाहक विदेश मंत्री के बीच पहली द्विपक्षीय बैठक** दुबई में संपन्न हुई।

अन्य संबंधित तथ्य

- यह बैठक **भारत की कूटनीति में बदलाव और तालिबान समर्थित अफगान सरकार के साथ बढ़ते संपर्क** का संकेत है।
- यह 2021 में अफगानिस्तान से अमेरिका की वापसी और सत्ता पर तालिबान के नियंत्रण के बाद **भारत और तालिबान के बीच उच्चतम स्तर** की बैठक थी।
- इससे पहले नवंबर, 2024 में **भारतीय राजनयिकों और तालिबान के रक्षा मंत्री के बीच पहली आधिकारिक बैठक** काबुल में संपन्न हुई थी।

तालिबान के सत्ता में लौटने के बाद भारत-अफगान संबंध

भारत ने तालिबान को **आधिकारिक तौर पर मान्यता नहीं** दी है। हालांकि, भारत विभिन्न माध्यमों से अफगानिस्तान की मदद कर रहा है:

- अफगानिस्तान में **गेहूं भेजना, चिकित्सा सहायता** और **भूकंप के दौरान राहत सहायता सहित मानवीय सहायता** पहुंचाई गई है।
- **शिक्षा:** अफगानिस्तान के विद्यार्थियों के लिए **भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR)** ने छात्रवृत्ति योजना को जारी रखा है।
- कृषि के लिए **सलमा बांध,** व्यापार के लिए **जरांज-डेलाराम सड़क मार्ग,** विद्युत के लिए ट्रांसमिशन लाइन, भारतीय **दूतावास परिसर का निर्माण** किया गया।

दोनों देशों के बीच व्यापार और वाणिज्य चाबहार बंदरगाह से भी जारी है।

भारत की तकनीकी टीम **काबुल में** भारत द्वारा निर्मित परियोजनाओं की स्थिति और संचालन की निगरानी कर रही है।

अफगानिस्तान के प्रति भारत की कूटनीतिक नीति में बदलाव क्यों आया है?

- **अफगानिस्तान-पाकिस्तान संबंधों में तनाव:** पूर्वी अफ़गानिस्तान पर पाकिस्तानी हवाई हमला।
- **क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करना** और **अफगानिस्तान की जमीन से आतंकी गतिविधियों को रोकना।**
- **मध्य एशिया तक कनेक्टिविटी** को मजबूत करने में मदद करना।
- अफगानिस्तान में विकास परियोजनाओं को **फिर से शुरू करना** और पहले से किए गए निवेश को सुरक्षित करना।
- **भारत की सॉफ्ट पावर को मजबूत करना** और क्षेत्र में स्थिरता सुनिश्चित करना।

अफगानिस्तान के साथ कूटनीतिक अप्रोच में परिवर्तन क्यों चुनौतीपूर्ण हो सकता है?

- **तालिबान की आंतरिक कार्यप्रणाली:** खासकर **महिलाओं और लड़कियों के प्रति अपनी नीतियों** के मामले में।
- **आतंकवाद और सुरक्षा से संबंधित चिंताएँ** और मादक पदार्थों की तस्करी।
- **चीन का बढ़ता प्रभाव।**

शांतिपूर्ण और स्थिर अफगानिस्तान: भारत और एशियाई क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण क्यों है?

- **रीजनल कनेक्टिविटी:** अफगानिस्तान को **मध्य एशियाई क्षेत्र का प्रवेश द्वार** माना जाता है। इस तरह भारत, अफगानिस्तान से होकर मध्य एशिया तक पहुंच सकता है।
- **सुरक्षा:** उग्रवाद और सीमा-पार आतंकवाद में कमी से भारत की उत्तरी एवं पश्चिमी अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं पर अधिक सुरक्षित स्थिति सुनिश्चित हो सकती है।
- **ऊर्जा और अन्य संसाधन:** अफगानिस्तान में स्थिरता **"तुर्कमेनिस्तान - अफगानिस्तान - पाकिस्तान - भारत" यानी तापी (TAPI) पाइपलाइन** का मार्ग प्रशस्त कर सकती है।

- **मादक पदार्थों की तस्करी पर रोक:** अफगानिस्तान में स्थिर सरकार मादक पदार्थों की तस्करी से बेहतर तरीके से निपट सकती है।
  - गौरतलब है कि **अफगानिस्तान** पाकिस्तान और ईरान के साथ **डेथ क्रिसेंट का हिस्सा** है। ये मादक पदार्थों की तस्करी के केंद्र हैं।
  - भारत में **पंजाब** जैसे राज्य मादक पदार्थों की तस्करी से अत्यधिक प्रभावित हैं।

आगे की राह

- **एक्ट वेस्ट पॉलिसी:** भारत को अपनी **परम्परागत परम्परा का लाभ उठाना** चाहिए।
- **मानवीय सहायता: चीन को प्रतिसंतुलित** करने के लिए
- **विकास परियोजनाओं को फिर से शुरू करना:** विकास परियोजनाओं के माध्यम से निवेश बढ़ाने से अफगान अर्थव्यवस्था में सुधार होगा
- **सांस्कृतिक संबंध:** वीज़ा व्यवस्था को उदार बनाकर लोगों के बीच जुड़ाव को विकसित करना।
- **कूटनीतिक भागीदारी बढ़ाना:** अलग-अलग अंतर्राष्ट्रीय और बहुपक्षीय फ़ोरम पर सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

भारत की अफगानिस्तान के प्रति नीति उसके ऐतिहासिक संबंधों, उसके लोगों से मित्रता और संबंधित संयुक्त राष्ट्र संकल्पों द्वारा मार्गदर्शित होती है। **- एस. जयशंकर**

3.6. भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंध (India-Bangladesh Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत ने बांग्लादेश के निर्यात के लिए 2020 में दी गई ट्रांसशिपमेंट सुविधा को औपचारिक रूप से समाप्त कर दिया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- 2020 के एक समझौते के तहत **बांग्लादेश** को यह सुविधा दी गई थी कि वह अपने देश की वस्तुओं को भारतीय भूमि पर स्थित **सीमा शुल्क स्टेशनों (LCSs)** के माध्यम से यूरोप, पश्चिम एशिया आदि क्षेत्र के अन्य देशों को निर्यात कर सकता है।
- भारत ने इस समझौते को रद्द करने का प्राथमिक कारण **लॉजिस्टिक्स से जुड़ी चुनौतियों** को बताया है। इसमें विशेष रूप से इस बात का उल्लेख किया गया है कि **भारतीय बंदरगाहों और हवाई अड्डों पर अत्यधिक भीड़भाड़** हो रही है, जिससे भारत के **अपने निर्यात कार्यों में बाधा** उत्पन्न हो रही है।
- हालांकि, सरकार ने यह फैसला **तनावपूर्ण द्विपक्षीय संबंधों** और बांग्लादेशी सरकार के मुख्य सलाहकार द्वारा हाल ही में की गई टिप्पणियों के बाद लिया है। गौरतलब है कि बांग्लादेशी सरकार के सलाहकार ने यह कहते हुए हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की नेट सुरक्षा प्रदाता की भूमिका को नकार दिया था कि **'बांग्लादेश ही हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में सभी के लिए एकमात्र सुरक्षा प्रदाता है।'**

भारत के लिए बांग्लादेश का महत्व

- **भारत के लिए महत्वपूर्ण आर्थिक साझेदारी:** 2021-22 में व्यापार 18 अरब डॉलर तक पहुंचा, और बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार बन गया।
- **भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से संपर्क को आसान बनाना:** उदाहरण के लिए, भारत बांग्लादेश के चट्टोग्राम और मोंगला बंदरगाहों का उपयोग पूर्वोत्तर क्षेत्र में वस्तु परिवहन के लिए करता है।
- **क्षेत्रीय संपर्क के लिए भारत के दृष्टिकोण में केंद्रीय भूमिका:** उदाहरण के लिए, बांग्लादेश BBIN (बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल) का हिस्सा है, जो वस्तु परिवहन और लोगों की आवाजाही को सुगम बनाता है।
- **भौगोलिक स्थिति के कारण बांग्लादेश भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति में अहम भूमिका निभाता है:** उदाहरण के लिए, बांग्लादेश की भागीदारी BIMSTEC की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि बंगाल की खाड़ी में इसकी अवस्थिति काफी रणनीतिक है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों के समक्ष चुनौतियाँ

- **तीस्ता नदी जल वितरण पर स्थायी समझौते की कमी:** इस कारण द्विपक्षीय तनाव उत्पन्न हो रहा है।
- **चीन का बढ़ता प्रभाव:** चीन के साथ बांग्लादेश के गहरे होते संबंध:
  - चीन बांग्लादेश के लिए सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता है।
  - संयुक्त सैन्य अभ्यास (जैसे, गोल्डन फ्रेंडशिप 2024), जो भारत के लिए रणनीतिक चिंता का कारण बन रहे हैं।
- **बांग्लादेश और म्यांमार से अवैध सीमा पार करना (रोहिंग्या शरणार्थी):** इससे भारत के पूर्वोत्तर राज्यों पर दबाव बढ़ रहा है।

- **बांग्लादेश में बढ़ता धार्मिक उत्पीड़न:** बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों पर बढ़ते अत्याचार का असर भारत में भी पड़ सकता है, जिससे क्षेत्रीय स्थिरता प्रभावित हो सकती है।
- **भारत की घरेलू नीतियों का प्रभाव:** नागरिकता संशोधन अधिनियम (CAA) और राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (NRC) जैसी नीतियां भारत-बांग्लादेश संबंधों को नुकसान पहुंचा सकती हैं।
- **बांग्लादेश और पाकिस्तान के बीच हाल ही में सुधार:** बांग्लादेश और पाकिस्तान का करीब आना सुरक्षा चिंताएं बढ़ाता है:
    - इससे ढाका में भारत का समग्र प्रभाव कम हो सकता है, और क्षेत्रीय संतुलन में समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं।
    - बांग्लादेश में भारत की स्थिति कमजोर होने से भारत का क्षेत्र में प्रभाव कम हो सकता है।
    - यह सुधार चीन के प्रभाव को और अधिक बढ़ा सकता है।

भारत-बांग्लादेश द्विपक्षीय संबंधों में हालिया घटनाक्रम

क्षेत्रीय सहयोग: बांग्लादेश **इंडो-पैसिफिक महासागर पहल** में शामिल हुआ।

विद्युत और ऊर्जा सहयोग: भारत-बांग्लादेश मैत्री पाइपलाइन (बांग्लादेश को हाई-स्पीड डीजल की आपूर्ति करती है), **मैत्री सुपर थर्मल पावर प्लांट** (बांग्लादेश ग्रिड को बिजली की आपूर्ति करती है)

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना में भागीदारी: सीमा पार UPI आधारित भुगतान की सुविधा के लिए भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (NPCI) और बांग्लादेश बैंक के बीच डिजिटल भुगतान तंत्र में सहयोग के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।

अंतरिक्ष कूटनीति: लघु उपग्रहों का संयुक्त रूप से विकास और भारतीय प्रक्षेपण यान का उपयोग करके बांग्लादेश के उपग्रहों के प्रक्षेपण में सहयोग।

चिकित्सा पर्यटन: भारत ने बांग्लादेश के नागरिकों को ई-मेडिकल वीज़ा सुविधा उपलब्ध कराने की घोषणा की है।

भारत-बांग्लादेश संबंधों को मजबूत करना: प्रमुख सिफारिशें

- **आर्थिक एकीकरण: व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA) के लिए बातचीत को शीघ्र शुरू करना चाहिए।**
    - बांग्लादेश द्वारा भारत को दिए गए विशेष आर्थिक क्षेत्रों (SEZ) का शीघ्र संचालन शुरू करने के लिए निवेश को बढ़ावा देना चाहिए।
- **जल साझाकरण संधि** विशेष रूप से तीस्ता के सीमा पार नदी जल प्रबंधन को हल करने के लिए संपन्न करना चाहिए। अंतरिम जल बंटवारे के लिए रूपरेखा तैयार करने के लिए संयुक्त नदी आयोग का गठन किया जा सकता है।
- **ऊर्जा एवं कनेक्टिविटी:** सीमा पार विद्युत व्यापार और नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं का विस्तार करना।
    - व्यापार बढ़ाने के लिए BBIN मोटर वाहन समझौते को लागू करना (विश्व बैंक की 2021 की एक रिपोर्ट के अनुसार, निर्यात में 172% की वृद्धि हो सकती है)
- **क्षेत्रीय नेतृत्व:** भारत को BIMSTEC, SAARC और IORA के तहत **क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय एकीकरण करने के लिए बांग्लादेश को प्रमुख माध्यम के रूप में देखना चाहिए।**
- **सुरक्षा एवं गवर्नेंस:** संधारणीय सहयोग के लिए विकास साझेदारी हेतु फ्रेमवर्क समझौते को अंतिम रूप देना।
    - अवैध प्रवासन पर अंकुश लगाने के लिए सीमा पार आव्रजन प्रणालियों का डिजिटलीकरण करना।

निष्कर्ष

भारत-बांग्लादेश संबंधों को **कनेक्टिविटी, वाणिज्य और सहयोग के साझा दृष्टिकोण** के आधार पर उच्चतम स्तर पर ले जाना चाहिए। दोनों देश एक-दूसरे को अपरिहार्य साझेदार के रूप में मान्यता प्रदान करके, अपने-अपने राष्ट्रीय विकास के दृष्टिकोण **"विकसित भारत 2047"** और **"स्मार्ट बांग्लादेश विजन 2041"** को साकार कर सकते हैं।

© Vision IAS

3.7. भारत-नेपाल संबंध: एक नज़र में (India-Nepal Relations at a Glance)

भारत-नेपाल संबंध

"भारत और नेपाल के बीच धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंध बहुत पुराने और बहुत मजबूत हैं तथा दोनों देशों को इन संबंधों को और अधिक ऊंचाई तक ले जाने के लिए काम करना चाहिए।" **भारतीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी**

भारत- नेपाल संबंधों का महत्व

- **जल संसाधन:** कोसी संधि (1954), गंडक संधि (1959) तथा महाकाली संधि (1996)
- **ऊर्जा:** विद्युत क्षेत्रक में सहयोग पर संयुक्त विजन वक्तव्य (2022), सीमा-पार पेट्रोलियम उत्पाद पाइपलाइन, जलविद्युत परियोजनाएं आदि।
- **कनेक्टिविटी परियोजनाएं:** रक्सौल-काठमांडू रेलवे परियोजना, BBIN (बांग्लादेश, भूटान, नेपाल और इंडिया) आदि।
- **संस्कृति:** धर्म, भाषा, व्यंजन, फिल्म आदि के संदर्भ में मजबूत ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध (रोटी-बेटी का नाता)।
- **रक्षा:** सैन्य अभ्यास (सूर्य किरण) इंटरऑपरेबिलिटी को बढ़ावा देते हैं।

द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने के लिए हालिया पहलें

- **भारत-नेपाल संयुक्त आयोग की छठी बैठक:** विद्युत, तेल और गैस, जल संसाधन, क्षमता-निर्माण और पर्यटन सहित कई क्षेत्रों में सहयोग पर चर्चा की गई।
- **सीमा-पार रेल लिंक के संचालन की शुरुआत:** जयनगर (बिहार) से कुर्था (नेपाल) तक।
- **नेपाल में भारत की सॉफ्ट पावर को बढ़ावा देना:** उदाहरण के लिए, लुंबिनी में एक **बौद्ध विहार** की आधारशिला रखी गयी।
- नेपाल में **हाई इम्पैक्ट कम्युनिटी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स** (अस्पताल, स्कूल, कॉलेज का निर्माण)।

भारत- नेपाल संबंधों में चुनौतियां

- **चीन का बढ़ता प्रभाव:** नेपाल की अर्थव्यवस्था, राजनीति और समाज में चीन का बढ़ता हस्तक्षेप।
- **कालापानी सीमा विवाद पर** नेपाल का आक्रामक रुख।
- भारत के साथ **द्विपक्षीय व्यापार में भारी व्यापार घाटे** के कारण नेपाल में असंतोष व्याप्त है। यह घाटा GDP का लगभग 18 प्रतिशत है।
- **भारत का 'बड़े भाई' वाला व्यवहार:** वर्ष 1950 की शांति और मित्रता की संधि पर फिर से विचार करने के प्रति नेपाल का उदासीन दृष्टिकोण तथा भारत के प्रति अविश्वास।
- **लोगों की अप्रतिबंधित सीमा पार आवाजाही:** नेपाल के घरेलू उद्योग, स्थानीय आजीविका के अवसरों, कानून और व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित किया है।

आगे की राह

- **आर्थिक सहयोग** को मजबूत करना चाहिए।
- **मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी** पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- **बहुपक्षीय मंचों की उपयोगिता:** जैसे- BBIN, बिम्सटेक, NAM, सार्क आदि का उपयोग साझा हितों की पूर्ति हेतु करना चाहिए।
- दोनों देशों के मध्य स्थिर और पारस्परिक रूप से उपयोगी संबंध सुनिश्चित करने के लिए **लोगों के मध्य संपर्कों का लाभ उठाना चाहिए।**
- **1950 की शांति और मैत्री संधि** की समीक्षा करनी चाहिए।

निष्कर्ष

""भारत के लिए नेपाल 'पुण्य भूमि' है, जिसकी पवित्र भौगोलिक संरचना उपमहाद्वीप की आध्यात्मिक विरासत का जीवित भंडार है। नेपाल के लिए भारत विशाल आर्थिक क्षेत्र है और इसे उसकी 'कर्म भूमि' भी कहा जा सकता है।"" **-सी राजा मोहन**

एथिक्स केस स्टडीज मॉड्यूल
प्रवेश प्रारंभ
Available in English & हिन्दी

3.8. भारत-मालदीव संबंध: एक नज़र में (India-Maldives Relations at a Glance)

भारत-मालदीव संबंध

भारत और मालदीव के बीच द्विपक्षीय संबंधों में **"इंडिया आउट"** अभियान और चीन फैक्टर के कारण तनाव आ गया था, लेकिन अब संबंधों में धीरे धीरे सुधार हो रहे हैं, जिससे आपसी सहयोग का बेहतर मार्ग प्रशस्त हो सकता है।

मालदीव का भू-रणनीतिक महत्व

मालदीव पश्चिमी **हिंद महासागर (अदन की खाड़ी और स्ट्रेट ऑफ होर्मुज) तथा पूर्वी हिंद महासागर (स्ट्रेट ऑफ मलक्का) चोक पॉइंट्स** के मध्य एक **'टोल गेट'** की भांति स्थित है।	**भारत का लगभग 50 प्रतिशत विदेशी व्यापार और उसका 80 प्रतिशत ऊर्जा आयात समुद्री संचार मार्गों (SLOCs)** के माध्यम से ही होता है। इन संचार मार्गों की सुरक्षा के लिए मालदीव की भूमिका महत्वपूर्ण है।	**हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में नौवहन स्वतंत्रता, क्षेत्रीय स्थिरता और सुरक्षित समुद्री मार्ग सुनिश्चित करने में मालदीव की अहम भूमिका है।**	मालदीव की भौगोलिक अवस्थिति इसे हिंद महासागर क्षेत्र में **चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति एक रणनीतिक** संतुलन बनाती है तथा चीन की 'स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स' नीति को रोकने में सहायक है।	**आतंकवाद-रोधी प्रयास:** मालदीव आतंकवाद और समुद्री डकैती के खिलाफ रक्षा की पहली पंक्ति के रूप में कार्य करता है।

भू-राजनीतिक और भू-आर्थिक महत्व

मालदीव **भारत की पड़ोसी नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP)** और **सागर (अब महासागर/MAHASAGAR)** पहल का प्रमुख हितधारक है।	भारत **2023 में मालदीव का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार बनकर उभरा,** साथ ही द्विपक्षीय व्यापार **लगभग 1 बिलियन डॉलर** तक पहुंच गया। मालदीव भारतीयों के लिए एक लोकप्रिय पर्यटन स्थल भी है।	मालदीव में **राजनीतिक रूप से सामान्य स्थिति** लाने में भारत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। **उदाहरण के लिए, ऑपरेशन कैक्टस (1988) के तहत** भारतीय सेना ने मालदीव में तख्तापलट की कोशिश को नाकाम कर दिया।

द्विपक्षीय संबंधों में चुनौतियां

स्ट्रिंग ऑफ़ पर्ल्स के माध्यम से **चीन द्वारा मालदीव के मामले में सामरिक हस्तक्षेप करना (जैसे-सिनामाले ब्रिज का निर्माण)**	मालदीव में बढ़ते कट्टरपंथ से जुड़ी चिंताएँ **(जैसे; इस्लामिक स्टेट की सक्रियता बढ़ना)**	भारत विरोधी भावनाएँ बढ़ना **(जैसे-इंडिया आउट अभियान)**	भारत के साथ समझौतों में पारदर्शिता की कमी का आरोप **(जैसे उथुरु थिला फाल्हू - द्वीप हार्बर परियोजना)**

द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने के लिए आगे की राह

भारत के सहयोग वाली बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के क्रियान्वयन में तेजी लाने की जरूरत है **(जैसे-ग्रेट माले कनेक्टिविटी परियोजना)**	मालदीव में चीन के प्रभाव को कम करने के लिए वित्तीय सहायता बढ़ानी चाहिए **(जैसे, चीन द्वारा ऋण-जाल में फंसाने की कूटनीति)**	सुरक्षा सहयोग को मजबूत करना **(जैसे, खुफिया जानकारी साझा करना)**	सॉफ्ट कूटनीति अपनाना **(जैसे, प्रवासियों का सहयोग, फिल्म कूटनीति, आदि)**

निष्कर्ष

"भारत हमेशा मालदीव के साथ खड़ा रहा है। यह **भारत की 'पड़ोसी पहले नीति की "मजबूत अभिव्यक्ति"** है।"
- **विदेश मंत्री एस. जयशंकर।**

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2026
प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज
DELHI : 7 अगस्त, 2 PM | JAIPUR : 20 जुलाई | JODHPUR : 10 अगस्त
Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.
/visionias.upsc /c/VisionIASdelhi /c/VisionIASdelhi /t.me/s/VisionIAS_UPSC

© Vision IAS

3.9. भारत-भूटान संबंध: एक नज़र में (India-Bhutan relations at a Glance)

भारत-भूटान संबंध

भारत और भूटान के बीच सभी स्तरों पर विश्वास, सद्भावना और आपसी समझ पर आधारित मैत्री और सहयोग के "अनुकरणीय संबंध" हैं।

भारत-भूटान द्विपक्षीय संबंधों का महत्व (दोनों देशों के लिए महत्व)

- **मजबूत राजनीतिक संबंध:** इसका आधार मैत्री और सहयोग संधि है।
- **जल विद्युत सहयोग:** उदाहरण के लिए, भूटान की **बसोछु और निकाछु जलविद्युत संयंत्रों को** भारतीय विद्युत मार्केट्स में व्यापार की अनुमति दी गई है।
- **बौद्ध धर्म आधारित संबंध:** दोनों देश बौद्ध धर्म से जुड़े महत्वपूर्ण स्थलों पर तीर्थयात्रा और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देते हैं।
- **सीमा-पार वन्यजीव संरक्षण: उदाहरण के लिए,** दोनों देश ट्रांसबाउंड्री मानस कंज़र्वेशन एरिया (TraMCA) के माध्यम से भारत के मानस राष्ट्रीय उद्यान और भूटान के रॉयल मानस राष्ट्रीय उद्यान में वन्य-जीवों की रक्षा के लिए सहयोग करते हैं।

भारत का भूटान के लिए महत्व

- **विकास सहायता:** भारत ने भूटान की **13वीं पंचवर्षीय योजना (2024-29)** के लिए सहायता राशि बढ़ाई है और भूटान के **आर्थिक प्रोत्साहन कार्यक्रम** का समर्थन भी किया है।
- **सुरक्षा प्रदाता के रूप में: डोकलाम गतिरोध** (2017) में, भारत ने **स्थायी मैत्री संधि** का इस्तेमाल करके भूटान के नियंत्रण वाली उस ज़मीन पर कदम रखा, जिस पर चीन दावा करता है। भारत का यह कदम भूटान को चीन की आक्रामकता से बचाने के लिए उठाया गया था।
- **अवसंरचना विकास:** भारत के **सीमा सड़क संगठन (BRO) ने परियोजना 'दंतक'** के तहत भूटान में अधिकतर सड़कों का निर्माण किया है।
- भारत **भूटान के कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में 50%** का योगदान देता है।

भारत-भूटान संबंधों में बढ़ती चिंताएं

- **उग्रवादी समूह:** भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के विद्रोही समूह, जैसे **यूनाइटेड लिबरेशन फ्रंट ऑफ असम (ULFA) और नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रंट ऑफ बोडोस (NDFB),** भूटान को अपने छिपने की जगह के रूप में इस्तेमाल करते हैं।
- **रुकी हुई परियोजनाएं:** पर्यावरण संबंधी चिंताओं के कारण भूटान ने **BBIN (बांग्लादेश, भूटान, भारत व नेपाल) मोटर वाहन समझौते** को रोक दिया है।

चीन: एक खतरे के रूप में

- चीन **भूटान के व्यापार में 25%** से अधिक का योगदान करता है। इस तरह वह चीन में अपना प्रभाव बढ़ा रहा है।
- **चीन की क्षेत्रीय आक्रामकता:**
  - चीन भूटान को अपनी **"फाइव फिंगर पॉलिसी"** का हिस्सा मानता है।
  - 2021 में **भूटान-चीन के बीच बॉर्डर रोडमैप समझौता** ने भारत की चिंताओं को बढ़ा दिया।
  - **भारत को डर है कि चीन भूटान के डोकलाम पठार** पर नियंत्रण कर सकता है। इससे **भारत के सामरिक 'सिलीगुड़ी कॉरिडोर' को खतरा** हो सकता है।

आगे की राह

- **आर्थिक गतिविधियों में विविधता लाना:** फिनटेक, अंतरिक्ष तकनीक और बायोटेक में सहयोग को मजबूत करना चाहिए।
- **भूटान के सेवा क्षेत्रक में निवेश:** भूटान के सकल राष्ट्रीय खुशहाली (GNH) सिद्धांत के अनुरूप सतत निवेश करने की आवश्यकता है।
- **भूटान की गेलेफू परियोजना में सहयोग:** इसका उपयोग भूटान के साथ संबंधों को मजबूत करने और चीन के प्रभाव को कम करने के लिए किया जाना चाहिए।
- **लोगों के बीच संबंध:** बौद्ध धर्म के प्रभाव के माध्यम से सॉफ्ट पावर के प्रभाव को बढ़ाना चाहिए और पर्यटन के स्तर पर सहयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- **चीन के साथ त्रिपक्षीय (Trilogue) वार्ता की शुरुआत:** सीमा विवादों से निपटने के लिए भारत, चीन और भूटान के बीच खुले संवाद विकल्प पर विचार करना चाहिए।

निष्कर्ष

"भारत और भूटान केवल भौगोलिक रूप से ही करीब नहीं हैं। हमारा इतिहास, संस्कृति और आध्यात्मिक परंपराएं हमारे लोगों और राष्ट्रों के बीच एक अनूठा और गहरा संबंध बनाती हैं। कोई भी दो देश भारत और भूटान जैसे 'स्वाभाविक साझेदार' नहीं हैं।"
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी।

3.10. हिन्द महासागर क्षेत्र (Indian Ocean Region: IOR)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, रक्षा मंत्री ने नई दिल्ली में नौसेना कमांडरों के दूसरे सम्मेलन में कहा कि भारत को अब हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) में एक पसंदीदा सुरक्षा साझेदार के रूप में देखा जाता है।

हिन्द महासागर क्षेत्र (IOR) का महत्व

- **आर्थिक:** विश्व स्तर पर 1/3 बल्क कार्गो और 2/3 ऑयल शिपमेंट IOR से हो कर गुजरता है।
- **प्राकृतिक संसाधन:** तेल भंडार, पॉलीमेटेलिक नोड्यूल्स, आदि।
- **भू-रणनीतिक:** हिंद महासागर क्षेत्र स्वेज नहर, बाब अल-मंडेब, होर्मुज जलडमरूमध्य और मलक्का जलडमरूमध्य जैसे विश्व के सबसे व्यस्त और रणनीतिक समुद्री मार्गों से जुड़ा है। इन मार्गों पर नियंत्रण वैश्विक व्यापार, ऊर्जा आपूर्ति और समुद्री सुरक्षा की दृष्टि से निर्णायक भूमिका निभाता है।
    - **पश्चिमी हिंद महासागर का बढ़ता महत्व:** भारत के डीप ओशन मिशन और नीली अर्थव्यवस्था 2.0 पहलों में योगदान दे सकता है।
        - हिंद-प्रशांत और मध्य पूर्व के बीच की खाई को पाट सकता है।

भारत हिंद महासागर क्षेत्र में एक पसंदीदा सुरक्षा साझेदार कैसे है

यह क्षेत्र समुद्री व्यापार और संचार मार्गों (SLOCs) के लिए रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की केंद्रीय भौगोलिक स्थिति न केवल उसे इस क्षेत्र की गतिविधियों पर नजर रखने में सक्षम बनाती है, बल्कि हिंद महासागर क्षेत्र की स्थिरता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में भी उसकी भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण बना देती है।

- **नीति:** सागर (सभी के लिए सुरक्षा और संवृद्धि) द्वारा निर्देशित।
- **नौसेना शक्ति:** समुद्री पायरेसी रोधी अभियान (अदन की खाड़ी), मालाबार युद्ध अभ्यास (अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया)।
- **रक्षा कूटनीति:** सित्तवे पत्तन (म्यांमार) का संचालन।
- मॉरीशस, श्रीलंका में **तटीय रडार**
- **मिनीलेटरल: कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन**
- **HADR:** चक्रवत 2023 युद्ध अभ्यास (8 हिंद महासागर क्षेत्र राष्ट्र)

भारत के लिए एक पसंदीदा सुरक्षा साझेदार बनने में बाधाएं

- **संसाधनों का अभाव:** भारत में 130 युद्धपोत बनाम चीन का 350 से अधिक युद्धपोत का बेड़ा (विश्व स्तर पर सबसे बड़ा)।
- **चीन का प्रभाव:** श्रीलंका, मालदीव, पाकिस्तान में पत्तन; जिबूती सैन्य अड्डा।
- **अमेरिकी नीति में बदलाव:** यूक्रेन और मध्य पूर्व संघर्षों के कारण हिंद-प्रशांत पर कम ध्यान।
- **गैर-पारंपरिक खतरे:** पायरेसी की बढ़ती घटनाएं, समुद्री आतंकवाद, मादक पदार्थों की तस्करी।

हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में नेतृत्व प्रदान करने के लिए भारत द्वारा शुरू की गई पहलें

इंडियन ओशन रिम एसोसिएशन (IORA)	यह एक **अंतर-सरकारी** संगठन है। इसकी स्थापना **1997** में हिंद महासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के लिए हुई थी।
इंफॉर्मेशन फ्यूजन सेंटर-इंडियन ओशन रीजन (IFC-IOR)	**इसका संचालन भारतीय नौसेना द्वारा** किया जाता है। इसका उद्देश्य हिंद महासागर क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देना है।
हिंद महासागर नौसेना संगोष्ठी (IONS)	**2008 में भारतीय नौसेना द्वारा शुरू किया गया एक फोरम है। यह फोरम हिंद महासागर क्षेत्र के तटीय देशों की नौसेनाओं के बीच समुद्री क्षेत्र में सहयोग को बढ़ाने का प्रयास करता है।**
हिंद महासागर के तटीय देशों में मूलभूत अवसंरचना का निर्माण	हाल ही में, भारत के प्रधानमंत्री ने मॉरीशस के अगालेगा द्वीप पर **भारत द्वारा सहायता प्राप्त 6 विकास परियोजनाओं का उद्घाटन किया** जिनमें **नई हवाई पट्टी और जेट्टी** भी शामिल हैं।
ग्रेट निकोबार प्रोजेक्ट	इसमें **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के दक्षिणी छोर पर बंदरगाह, हवाई अड्डा, बिजली संयंत्र और टाउनशिप** का विकास शामिल है।

© Vision IAS

आगे की राह

- **क्षमता निर्माण:** तटीय देशों के साथ प्रशिक्षण कार्यक्रमों और सैन्य कूटनीति का विस्तार करना।
- **रणनीतिक द्वीप विकास:** क्षेत्रीय स्थिरता के लिए अंडमान एवं निकोबार और लक्षद्वीप का बेहतर उपयोग करना।
- **सुसंगत हिंद महासागर रणनीति:** समन्वित राजनयिक और सैन्य कार्रवाइयों के साथ एकीकृत नीति विकसित करना।
- **नौसेना विस्तार:** अमेरिका, फ्रांस और क्षेत्रीय साझेदारों के साथ संबंधों को मजबूत करते हुए नौसेना आधुनिकीकरण में निवेश को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

"भारत का भविष्य हिंद महासागर से गहराई से जुड़ा है - यही समुद्र हमारे अतीत को आकार देता रहा है, और यही आगे भी हमारी आर्थिक प्रगति, सुरक्षा तथा क्षेत्रीय और अन्य देशों के साथ संबंधों को दिशा देता रहेगा।" — पूर्व प्रधान मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह

> "हिंद महासागर की नीति परामर्शात्मक है, और दीर्घकाल में वही पहलें और परियोजनाएं अधिक सतत सिद्ध होंगी जो जन-केंद्रित होंगी।"
> **– एस. जयशंकर**

3.11. मुख्य शब्दावलियाँ (Keywords)

ड्रैगन-एलिफैंट टैंगो	रणनीतिक टकराव	चीन-पाकिस्तान गठजोड़	स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स	विश्वास निर्माण उपाय (CBMs)
"नेकलेस डायमंड" रणनीति	ऋण-जाल नीति	चीन-केंद्रवाद (Sinocentrism)	स्थायी सिंधु आयोग (PIC)	शांतिपूर्ण सह - अस्तित्व
ब्रदर एनेमी	द्विपक्षवाद	मेडिकल टूरिज्म	समुद्री संचार मार्ग (SLOC)	नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी (NFP)
बुद्धिस्ट कनेक्ट	फाइव-फिंगर पॉलिसी	डेथ क्रिसेंट	वेट एंड वाच नीति	प्राकृतिक साझेदार

उत्तर लेखन प्रारूप

Q. भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी को एक दशक पूरा हो गया है। इस संदर्भ में भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी की सफलता, उपलब्धियों और चुनौतियों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए।

परिचय	मुख्य भाग: 1	मुख्य भाग: 2	आगे की राह	निष्कर्ष
भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए।	नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी के प्रमुख पहलुओं और भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी की उपलब्धियों का उल्लेख कीजिए।	भारत की नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी में चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।	5 S दृष्टिकोण, पंचशील सिद्धांत, गुजराल डॉक्ट्रिन का उल्लेख कीजिए।	भारत के समग्र विकास के लिए भारत के पड़ोस का महत्व बताते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
✓ सामान्य अध्ययन ✓ निबंध ✓ दर्शनशास्त्र
2025 | ENGLISH MEDIUM 27 JULY | हिन्दी माध्यम 27 जुलाई
2026 | ENGLISH MEDIUM 27 JULY | हिन्दी माध्यम 27 जुलाई

4. भारत से जुड़े और/या भारत को प्रभावित करने वाले द्विपक्षीय समूह और समझौते (Bilateral Grouping and Agreements Involving India And/Or Affecting India)

4.1. भारत-पश्चिम एशिया: एक नज़र में (India-West Asia)

भारत और पश्चिम एशियाई देश

पश्चिम एशिया के प्रति भारत की विदेश नीति

भारत **खाड़ी क्षेत्र को अपने 'विस्तारित पड़ोस' का हिस्सा** मानता है। इसके अलावा, भारत **ईरान** को अपना **'निकटतम पड़ोस'** (Proximate Neighbourhood) मानता है।	**लुक वेस्ट नीति:** यह नीति **पश्चिम एशियाई देशों के साथ सहयोग** बढ़ाने के लिए **2005** में अपनाई गई थी।	भारत ने **इजरायल और फिलिस्तीन के साथ अपने संबंधों में डी-हाइफनेशन की नीति** अपनाई है।	**उच्च-स्तरीय संपर्क और रणनीतिक साझेदारी:** UAE, सऊदी अरब, मिस्र, ओमान, ईरान जैसे देशों की यात्रा करना।	**पाकिस्तान कारक को विफल करना:** पुलवामा, बालाकोट और अनुच्छेद 370 के बाद भारत को UAE का समर्थन प्राप्त हुआ।

भारत के लिए महत्व

संयुक्त अरब अमीरात (UAE)	ईरान	सऊदी अरब	इजरायल	कुवैत
› **प्रमुख ऊर्जा भागीदार:** कच्चे तेल में चौथा सबसे बड़ा, LNG और LPG में दूसरा सबसे बड़ा प्रदाता। › **मजबूत व्यापारिक संबंध: द्विपक्षीय व्यापार 85 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2022-23);** UAE भारत का **तीसरा सबसे बड़ा** व्यापारिक भागीदार है। › **जन-सांस्कृतिक संबंध:** UAE में **35 लाख भारतीय; भारत के कुल प्रेषण का** 19.2% (FY24) है।	› भारत **ईरान से तेल** का आयात करता है। **(हालांकि अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण यह सीमित है)** › **चाबहार बंदरगाह समझौता:** अफगानिस्तान और मध्य एशिया के साथ व्यापार करने के लिए पाकिस्तान को बाईपास करने हेतु समझौता। › **कनेक्टिविटी: INSTC (अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा)।**	› **ऊर्जा सुरक्षा: कच्चे तेल, पेट्रोलियम व LPG** का तीसरा सबसे बड़ा स्रोत। **(2023-24)** › **व्यापार:** लगभग 43 बिलियन डॉलर के साथ **भारत का पांचवां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार।** › **सुरक्षा सहयोग: ज़बीउद्दीन अंसारी** की गिरफ्तारी में मदद की। (2008 का मुंबई हमला)	› **रक्षा:** भारत द्वारा फाल्कन AWACS, BARAK-8 आदि की खरीद। › **कृषि और जल:** इजरायल की ड्रिप सिंचाई तकनीक से जल संरक्षण। › **बहुपक्षीय सहयोग:** 2021 में **भारत, इजरायल, यूएई और अमेरिका ने I2U2** की स्थापना की।	› 43 वर्षों में **पहली बार किसी भारतीय प्रधान मंत्री की यात्रा।** › **GCC अध्यक्ष कुवैत:** भारत के साथ मजबूत संबंधों का वादा किया। › **ऊर्जा सुरक्षा:** भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं का 3.5% कुवैत से आता है।

भारत के पश्चिम एशियाई देशों के साथ संबंधों में चुनौतियां

व्यापार घाटा: सऊदी अरब (31.3 बिलियन डॉलर) व **UAE** (16 बिलियन डॉलर) के साथ व्यापार घाटा। (वित्त वर्ष 2022-23)	**प्रवासन और श्रमिक संबंधी मुद्दे:** कफाला प्रणाली श्रमिकों के शोषण को सक्षम बनाती है।	**लाल सागर संकट:** हूती विद्रोहियों ने लाल सागर में अंतरराष्ट्रीय पोत परिवहन को निशाना बनाया।	**नवीन रणनीतिक समूह की संभावित उभरती संरचना** (CRIPTAQ - चीन, रूस, ईरान, पाकिस्तान, तुर्किये, अफगानिस्तान और कतर)।	**तेल मूल्य निर्धारण में भेदभाव:** "एशियन प्रीमियम" भारत के लिए उच्च तेल मूल्य का कारण बनता है।	**निवेश के लिए खतरा:** जैसे ईरान में भारतीय निवेश को खतरा।

आगे की राह

भारत क्षेत्रीय संघर्ष की स्थिति में अपने **तटस्थ संबंधों** का लाभ उठा सकता है।	**मुक्त व्यापार समझौते (FTA) की प्रक्रिया** को तेज और सरल बनाकर संचालित परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जा सकता है।	**श्रम प्रवासन और मानवाधिकार समस्याओं का समाधान खोजने के लिए इन देशों के साथ** एक तंत्र स्थापित करना चाहिए।	**सांस्कृतिक संबंध:** साझी विरासत को बढ़ावा देना चाहिए।	**पर्यटन को प्रोत्साहन:** लोगों के बीच संबंधों को बेहतर बनाने के लिए जरूरी है।

निष्कर्ष

वैश्विक अनिश्चितता और क्षेत्रीय संघर्ष के बावजूद, **सऊदी अरब/ UAE/ कतर/ इजरायल के साथ भारत के संबंध** आत्मविश्वास से पूर्ण व बहुध्रुवीय विदेश नीति को दर्शाते हैं। ये संबंध दोनों पक्षों के राष्ट्रीय हितों की पूर्ति करने वाली रणनीतिक स्वायत्तता पर आधारित हैं।

शिवशंकर मेनन- "एशिया अब अवसंरचना, व्यापार और निवेश से भौतिक रूप से एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है। यहां वैश्वीकरण का अर्थ है कि पूर्वी एशिया की समृद्धि पश्चिम एशिया में होने वाली घटनाओं पर निर्भर करती है और उससे खतरा भी हो सकता है।"

© Vision IAS

4.1.1. पश्चिम एशिया में भारत की संतुलित विदेश नीति (India's Foreign Policy Balancing in West Asia)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **ईरान और इजरायल के बीच बढ़ते तनाव ने अमेरिका एवं अन्य क्षेत्रीय शक्तियों को पश्चिम एशिया में पूर्ण युद्ध को रोकने के लिए कूटनीति बढ़ाने** के लिए बाध्य किया है।

पश्चिम एशिया में संकट

- **ईरान-इजरायल-USA संघर्ष:** ईरान ने इजरायल के **'ऑपरेशन राइजिंग लायन'** के जवाब में **'ऑपरेशन ट्रू प्रॉमिस 3'** शुरू किया है। ज्ञातव्य है कि 'ऑपरेशन राइजिंग लायन' के तहत इजरायल ने **ईरान के मुख्य सैन्य और परमाणु ठिकानों पर हमले** किए थे, जबकि संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपने **'ऑपरेशन मिडनाइट हैमर'** के तहत ईरान के प्रमुख परमाणु ठिकानों **(नतांज, इस्फ़हान और फोर्डो)** को निशाना बनाया है।
- **इज़रायल-फ़िलिस्तीन संघर्ष:** हाल ही में **चौथे अरब-इजरायल** युद्ध (1973) **योम किप्पुर युद्ध की 50वीं वर्षगांठ पर** हमास द्वारा इजरायल पर हमले ने युद्ध को और **अधिक तीव्र** कर दिया।
- **यमन में हूती:** इजरायल-हमास युद्ध (अक्टूबर 2023) के बाद से, हूतियों ने इजरायल पर हमले शुरू कर दिए और फिलिस्तीनियों के साथ एकजुटता का दावा करते हुए लाल सागर में अंतर्राष्ट्रीय जहाजों पर हमले किए।
- **सीरिया में अस्थिरता:** दिसंबर 2024 में, बशर अल-असद का शासन ध्वस्त हो गया, जहां प्रमुख शक्तियों ने सीरिया को एक छद्म युद्ध के क्षेत्र में बदल दिया।

भारत पर प्रभाव

- **ऊर्जा सुरक्षा: खाड़ी-पश्चिम एशिया-उत्तरी अफ्रीका क्षेत्र** भारत के कुल कच्चे तेल आयात में दो-तिहाई से अधिक का योगदान देता है।
- **प्रवासी और विप्रेषण (Remittances):** पश्चिम एशिया में लगभग 8 से 9 मिलियन भारतीय हैं, जिनमें **संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कुवैत, ओमान** आदि देश भारत को विप्रेषण के शीर्ष स्रोतों में से हैं।
- **रणनीतिक:** भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा, चाबहार बंदरगाह (ईरान) जैसी परियोजनाओं का कार्यान्वयन बाधित होगा।
- **आर्थिक संबंध: GCC (खाड़ी सहयोग परिषद) भारत का सबसे बड़ा क्षेत्रीय व्यापारिक साझेदार** गुट है। भारत के कुल व्यापार में इसकी 15.8% की हिस्सेदारी है।
- **समुद्री मार्ग:** भारत का 80% बाहरी व्यापार प्रमुख जलमार्गों से होकर गुजरता है।

वैश्विक स्तर पर प्रभाव

- **कूटनीतिक उपलब्धियों के समक्ष खतरा:** कूटनीतिक उपलब्धियां (उदाहरण के लिए- अब्राहम एकॉर्ड्स, इजरायल-सऊदी अरब समझौता आदि) खतरे में पड़ सकती हैं।
- **समुद्री सुरक्षा का तीव्र होना:** संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम आदि देशों के जहाजों पर हमलों के मामले में हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा संबंधी चुनौतियां बढ़ सकती हैं।
- **राष्ट्रों के बीच हथियारों की होड़:** हथियारों या परमाणु हथियारों की होड़ से वैश्विक अस्थिरता उत्पन्न हो सकती है।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था पर प्रभाव:** कच्चे तेल की उच्च कीमतें खाद्य कीमतों में वृद्धि कर सकती हैं, जिससे खाद्य असुरक्षा और बढ़ सकती है। साथ ही, अर्थव्यवस्थाओं की रेटिंग भी कम हो सकती है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी संकट:** जानमाल के नुकसान, जबरन विस्थापन, युद्ध अपराधों (उदाहरण के लिए- इजरायल का रफाह आक्रमण) के कारण अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी संकट पैदा हो सकता है।
- **अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका पर प्रश्न:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं की भूमिका पर सवाल उठ सकते हैं।

पश्चिम एशिया में स्थिरता लाने के उपाय

- **तत्काल उपाय:**
  - **इजरायल और फिलिस्तीन** दोनों को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) द्वारा पारित **संकल्प 2728** की मांगों को पूरा करना चाहिए। इस प्रस्ताव में **गाजा में "तत्काल" युद्धविराम** का आह्वान किया गया है।

- यह संकल्प तीन मुख्य मांगें करता है: **स्थायी और टिकाऊ युद्धविराम; सभी बंधकों की तत्काल रिहाई; और गाजा पट्टी में मानवीय सहायता के प्रवाह को बढ़ाने की तत्काल आवश्यकता।**

- **दीर्घकालिक उपाय:**
    - **मानक ढांचा एवं प्रक्रिया:** हथियार नियंत्रण और सुरक्षा वार्ताओं के माध्यम से एक **मानक ढांचा एवं प्रक्रिया** का निर्माण करना चाहिए, जिसमें क्षेत्रीय **"सामूहिक विनाश के हथियारों से मुक्त क्षेत्र"** की घोषणा शामिल हो।
    - **दीर्घकालिक शांति और सुरक्षा के लिए द्वि-राष्ट्र सिद्धांत के आधार पर इजरायल-फिलिस्तीन मुद्दों का समाधान:** संयुक्त राष्ट्र महासचिव ने टिप्पणी की कि, "इजरायलियों को अपनी सुरक्षा की वैध ज़रूरतों को पूरा होते देखना चाहिए, और फिलिस्तीनियों को एक स्वतंत्र राज्य के लिए अपनी वैध आकांक्षाओं को साकार होते देखना चाहिए।"
    - **खाड़ी सहयोग परिषद (GCC):** भारत इस गुट के साथ अपने संबंधों को और बेहतर कर सकता है।

निष्कर्ष

पश्चिम एशिया में बढ़ते संघर्षों के कारण भारत एक रणनीतिक कसौटी का सामना करने लगा है, जैसे- ऊर्जा प्रवाह (66% तेल आयात) की रक्षा करना; भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (IMEC) को सुरक्षित करना, और क्षेत्रीय संघर्ष को रोकना। नई दिल्ली को UNSC 2728 को लागू करने के लिए अपनी अनूठी साझेदारियों का लाभ उठाना चाहिए, जबकि एक अनिवार्य संतुलनकर्ता के रूप में GCC-मध्यस्थता वाली शांति को आगे बढ़ाना चाहिए।

4.2. भारत- जापान संबंध (India-Japan Relation)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत और जापान के प्रधान मंत्रियों ने **इटली के अपुलिया में G-7 शिखर सम्मेलन के दौरान द्विपक्षीय बैठक** की।

भारत-जापान द्विपक्षीय संबंधों का महत्व

- **द्विपक्षीय व्यापार:** दोनों देशों ने यह भी ध्यान दिया कि **भारत-जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी ने 10वें वर्ष** में प्रवेश किया है।
- **साझा सामरिक हित:** जापान की **'फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक' (FOIP) रणनीति और भारत की हिंद-प्रशांत महासागरीय पहल (IPOI)** दोनों ही हिंद-प्रशांत क्षेत्र में (विशेष रूप से **दक्षिण चीन सागर** में) चीन के सैन्य एवं राजनीतिक हस्तक्षेप के संदर्भ में समान चिंताओं को साझा करती हैं।
    - भारत और जापान हिंद-प्रशांत क्षेत्र में आपूर्ति श्रृंखलाओं पर चीन के नियंत्रण को प्रतिसंतुलित करने के लिए **आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन पहल** में भी शामिल हैं।
- **रणनीतिक कनेक्टिविटी:** भारत की **"एक्ट ईस्ट" और जापान की "गुणवत्तापूर्ण अवसंरचना हेतु साझेदारी"** नीति के माध्यम से **दक्षिण एशिया को दक्षिण-पूर्व एशिया से जोड़ना।**
    - **एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)** का लक्ष्य **पूर्वी एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और दक्षिण एशिया को अफ्रीका के करीब लाना** है।
- **रक्षा संबंध: ऐक्वज़िशन एंड क्रॉस-सर्विसिंग एग्रीमेंट (ACSA)** भारत और जापान के सशस्त्र बलों के बीच घनिष्ठ सहयोग को बढ़ावा देता है।
    - उदाहरण- **सैन्य अभ्यास:** धर्म गार्डियन, शिन्यू मैत्री, जिमेक्स (JIMEX) आदि।
- **महत्वपूर्ण व्यापारिक साझेदार:** वित्त वर्ष 2022-23 में दोनों देशों के बीच **21.96 बिलियन अमेरिकी डॉलर** का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था।
    - वर्ष 2011 में, भारत और जापान ने ऐतिहासिक द्विपक्षीय मुक्त व्यापार समझौते **'व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA)'** पर सफलतापूर्वक हस्ताक्षर किए थे।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी मिशन में सहयोग:** उदाहरण के लिए, इसरो और JAXA एक संयुक्त **लूनर पोलर एक्सप्लोरेशन मिशन (LUPEX)** पर काम कर रहे हैं।

भारत के लिए महत्त्व

- **अवसंरचना विकास:** उदाहरण के लिए, **मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना जैसी परियोजनाओं पर सहयोग।**

- **विदेशी निवेश:** 2022 से 2027 तक **भारत में 5 ट्रिलियन येन** के निवेश का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
- **भारत के विनिर्माण में परिवर्तन:** इसे **भारत-जापान औद्योगिक प्रतिस्पर्धात्मकता भागीदारी** जैसे मंचों के माध्यम से सुगम बनाया जाएगा।
- **आधिकारिक विकास सहायता:** जापान भारत का **सबसे बड़ा द्विपक्षीय दाता** है।

भारत-जापान संबंधों में चुनौतियां

- **द्विपक्षीय व्यापार:** भारत-जापान द्विपक्षीय व्यापार सीमित बना हुआ है, CEPA के बाद भी भारत जितना निर्यात करता है, उससे कहीं ज्यादा आयात करता है।
- **चीन से निपटने में अलग-अलग दृष्टिकोण:** भारत वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर चीन की कार्रवाइयों को लेकर मुखर रहा है, लेकिन दक्षिण चीन सागर, ताइवान जलडमरुद्ध आदि में चीन की गतिविधियों की प्रत्यक्ष आलोचना करने से बचता रहा है।
  - **रूस-यूक्रेन युद्ध पर रुख:** जापान, रूस के खिलाफ प्रतिबंधों में शामिल हो गया है, जबकि भारत ने ऐसा करने से इनकार कर दिया है।
- **भारत ने 2019 में हुए G-20 शिखर सम्मेलन में जापान द्वारा सुझाए गए 'ओसाका ट्रैक' का बहिष्कार किया था।**
  - ओसाका ट्रैक डिजिटल व्यापार को लेकर बहुपक्षीय वार्ता पर केंद्रित था। इसके पीछे उद्देश्य सीमा-पार डेटा प्रवाह पर नियमों का मानकीकरण, डेटा स्थानीयकरण पर प्रतिबंधों को हटाना आदि था।
- **परियोजनाओं के कार्यान्वयन में देरी:** इसमें **एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर और अहमदाबाद-मुंबई के बीच बुलेट ट्रेन** परियोजना शामिल है।

आगे की राह

- **व्यापार और निवेश में तेजी लाने** के लिए CEPA के कार्यान्वयन की समीक्षा करनी चाहिए। साथ ही, उत्पत्ति के नियमों (Rules of origin) पर पुनर्विचार करके एक स्थिर एवं सुसंगत व्यापार नीति निर्मित करनी चाहिए।
- साझा सुरक्षा बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए **रक्षा सहयोग में वृद्धि** करनी चाहिए।
- विशेष रूप से **QUAD जैसे विविध मंचों पर हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण** अपनाना चाहिए।
- आधुनिक जीव विज्ञान, जैव प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य देखभाल, कृषि, नैनो-विज्ञान, सूचना और संचार प्रौद्योगिकी, रोबोटिक्स जैसे **नए एवं उभरते क्षेत्रकों में सहयोग को गहरा** करना चाहिए।
- बिजनेस-टू-बिजनेस (B2B) तथा लोगों के बीच सहयोग को मजबूत करने के लिए **संवाद एवं आदान-प्रदान को बढ़ावा** देना चाहिए।

निष्कर्ष

"भारत और जापान क्षेत्रीय आर्थिक एवं सुरक्षा मंचों को मजबूत करने तथा खाद्य एवं ऊर्जा सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन व सुदृढ़ आपूर्ति श्रृंखलाओं सहित वैश्विक चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने कार्यों का समन्वय करेंगे।" — **भारत-जापान विज़न 2025**

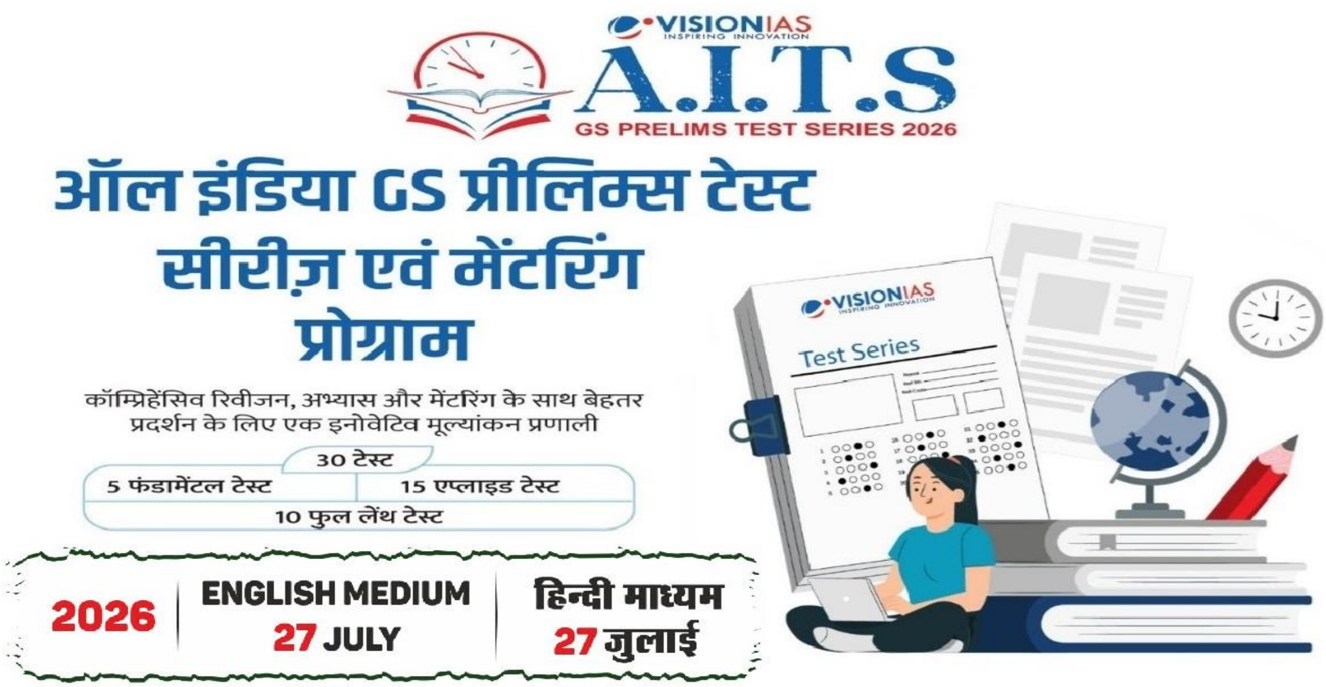

4.3. भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया (India and South East Asia)

भारत और दक्षिण-पूर्वी एशियाई देश

मलेशिया

- **एनहैंस्ड स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप** से **कॉम्प्रिहेंसिव स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप** में अपग्रेड।
- **इंटरनेशनल बिग कैट अलायंस (IBCA)** में इसके संस्थापक सदस्य के रूप में शामिल हुआ।
- **समुद्री संचार मार्गों (SLOC) को सुरक्षित करना:** सामरिक रूप से महत्वपूर्ण मलक्का जलडमरूमध्य से इसकी निकटता।
- **ऑयल पाम कूटनीति:** भारत कुल ऑयल पाम आयात का एक-तिहाई आयात करता है।
- **प्रवासी समुदाय:** USA और UAE के बाद तीसरा सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय मलेशिया में है।

इंडोनेशिया

- दोनों देश रामायण और महाभारत के साथ प्राचीन **सांस्कृतिक एवं व्यावसायिक संबंध साझा** करते है।
- दोनों **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM)** के संस्थापक देश हैं।
- **सुरक्षा एवं रक्षा:** द्विपक्षीय सैन्य अभ्यास **गरुड़ शक्ति।**
- **अवसंरचना और कनेक्टिविटी:** इंडोनेशिया-मलेशिया-थाईलैंड ग्रोथ ट्राएंगल (IMT-GT)

वियतनाम

- **कार्य योजना (2024-2028):** व्यापक रणनीतिक साझेदारी को लागू करने के लिए।
- **भारत** ने वियतनाम की समुद्री सुरक्षा को बढ़ाने के लिए क्रेडिट लाइन को बढ़ाकर **300 मिलियन अमेरिकी डॉलर** कर दिया है।
- **सांस्कृतिक सहयोग:** यूनेस्को विश्व विरासत स्थल **"माय सन"** मंदिर परिसर का संरक्षण और पुनरुद्धार करना।
- **रक्षा सहयोग: अभ्यास** (PASSEX, VINBAX और MILAN)।

सिंगापुर

- **रणनीतिक और आर्थिक सहयोग:** व्यापक रणनीतिक साझेदारी (2015)।
- **व्यापार: आसियान** समूह में भारत का **सबसे बड़ा व्यापारिक** साझेदार।
- **फिनटेक और नवाचार:** RuPay-PayNow लिंकेज।
- **लोगों के बीच संबंध: डायस्पोरा:** सिंगापुर की आबादी में लगभग 9.1% भारतीय मूल के लोग हैं।
- **सेमीकंडक्टर आपूर्ति:** विश्व आपूर्ति का 10% तक।
- **रक्षा एवं सुरक्षा:** सिम्बेक्स जैसे **संयुक्त युद्ध अभ्यास।**

थाईलैंड

- **दोनों देशों के बीच** रणनीतिक साझेदारी स्थापित हुई।
- **पारस्परिक रूप से लाभकारी लक्ष्य:** दोनों देश एक स्वतंत्र, खुले, पारदर्शी, नियम आधारित, समावेशी और लचीले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को महत्त्व देते हैं।
- **अपने क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय समूहों में भूमिका: बिम्सटेक** जैसे मंचों में भारत का एक महत्वपूर्ण साझेदार है।

निष्कर्ष

भारत और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच ऐतिहासिक संबंध बहुत पुराने व गहरे हैं, जो उनके समकालीन संबंधों को भी प्रभावित करते हैं। **धर्म, संस्कृति, स्थापत्य और आध्यात्मिक क्षेत्रों** को समेटे हुए **अतीत के संबंधों के समृद्ध संदर्भ** ही वे पहलू हैं, जो समकालीन विश्व व्यवस्था में दोनों पक्षों के बीच संबंधों को अद्वितीय एवं विशिष्ट बनाते हैं।

4.3.1. भारत की एक्ट ईस्ट नीति के 10 वर्ष (10 Years of India's Act East Policy)

भारत की एक्ट ईस्ट नीति (AEP) के 10 वर्ष

भारत के प्रधान मंत्री की सिंगापुर यात्रा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि 2024 में भारत की एक्ट ईस्ट नीति का एक दशक पूरा हो गया है, जिसकी घोषणा प्रधान मंत्री ने 2014 में 9वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन में की थी।

एक्ट ईस्ट नीति (AEP) की प्रभावशीलता

- **पूर्वी एशिया से लेकर हिंद-प्रशांत तक AEP का विस्तार:** लुक ईस्ट नीति पूरी तरह से **आसियान** पर केंद्रित थी। वहीं एक्ट ईस्ट नीति में **आसियान को केंद्र में रखते हुए हिंद-प्रशांत क्षेत्र तक नीति के दायरे** का विस्तार किया गया है।
- **बहुपक्षीय और क्षेत्रीय जुड़ाव को मजबूत करना:** आसियान, बिम्सटेक, एशिया सहयोग वार्ता (ACD), हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA) आदि के साथ गहन साझेदारी। **उदाहरण के लिए-** बिम्सटेक चार्टर को अपनाया जाना।
- **संस्थागत सहयोग में वृद्धि:** संयुक्त राज्य अमेरिका एवं उसके सहयोगियों के साथ संस्थागत सहयोग। **उदाहरण के लिए-** भारत IPEF, SCRI आदि में शामिल हुआ।
- **रक्षा कूटनीति और निर्यात में भारत की सक्रिय भूमिका:** 2022 में **फिलीपींस को ब्रह्मोस का निर्यात** और **भारत-वियतनाम मिलिट्री लॉजिस्टिक्स पैक्ट।**
- **कनेक्टिविटी कार्यक्रमों की सक्रियता:** कलादान मल्टी-मॉडल परियोजना, भारत-म्यांमार-थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग, मेकांग-भारत आर्थिक गलियारा आदि।

रणनीतिक हितों में कन्वर्जेंस या तालमेल

- भारत ने **इंडोनेशिया, वियतनाम, मलेशिया, जापान, दक्षिण कोरिया और ऑस्ट्रेलिया** के साथ रणनीतिक साझेदारी स्थापित की है।
- **भारत और ताइवान** ने अपने अनौपचारिक संबंधों के विस्तार में महत्वपूर्ण प्रगति की है।
- **भारत की एक्ट ईस्ट नीति** जापान की **फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक,** दक्षिण कोरिया की **न्यू सदर्न पॉलिसी** और **इंडो-पैसिफिक पर आसियान आउटलुक (AOIP)** के अनुरूप है।
- भारत ने दक्षिण चीन सागर के मोर्चे पर **फिलीपींस के साथ एकजुटता** प्रदर्शित की है।
- चीन के वर्चस्व से निपटने के लिए **रणनीतिक और सुरक्षा आर्किटेक्चर का निर्माण** किया गया है। उदाहरण के लिए- **भारत एक खुले, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत** का समर्थन करता है।

एक्ट ईस्ट एशिया नीति के कार्यान्वयन के समक्ष मौजूद प्रमुख चुनौतियां

- **अवसंरचनात्मक परियोजनाओं में देरी:** कलादान मल्टी-मॉडल परियोजना में देरी के कारण इसका बजट अपनी प्रारंभिक लागत से छह गुना बढ़ गया था।
- **शरणार्थियों का आगमन:** इससे **पूर्वोत्तर** सीमाओं पर अस्थिरता पैदा हुई है **उदाहरण के लिए-** मणिपुर में शरणार्थियों के आने से सीमावर्ती क्षेत्रों में अस्थिरता पैदा हो गई है।
- **चीन की समुद्री उपस्थिति:** चीन के बढ़ते प्रभाव के कारण बांग्लादेश के मोंगला बंदरगाह के माध्यम से सामरिक समुद्री व्यापार मार्गों तक भारत की पहुंच प्रभावित हो सकती है।
- **चीन- आसियान संबंध:** चीन का आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव, भारत के लिए पूर्वी एशिया क्षेत्र में बढ़त हासिल करने में प्रमुख रुकावट है। **(जैसे- 2023 में, चीन और आसियान के बीच 911.7 बिलियन अमरीकी डॉलर का व्यापार)**
- **व्यापार घाटे में वृद्धि:** आसियान के साथ भारत का व्यापार घाटा 2011 के 7.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर 2023 में 44 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया था।

आगे की राह

- **व्यापार:** आसियान के साथ भारत के बढ़ते व्यापार घाटे को कम करने के लिए आसियान-भारत वस्तु व्यापार समझौता (AITIGA) में सुधार पर जल्द-से-जल्द वार्ता शुरू करनी चाहिए।
- **अवसंरचना:** लंबित अवसंरचनात्मक परियोजनाओं को जल्द-से-जल्द पूरा करके कनेक्टिविटी को बेहतर बनाना चाहिए।
- **सुरक्षा सहयोग:** हिंद महासागर और दक्षिण चीन सागर में समुद्री सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
- **सांस्कृतिक कूटनीति:** विशेष रूप से बौद्ध-बहुल देशों के साथ साझा सांस्कृतिक विरासत का लाभ उठाना चाहिए।
- **बहुपक्षीय सहभागिता:** जापान, ऑस्ट्रेलिया और ताइवान जैसी अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के साथ संबंधों को मजबूत करना चाहिए।

निष्कर्ष

AEP के 10 वर्षों ने व्यापार, सुरक्षा और जलवायु कूटनीति के क्षेत्र में भारत-आसियान संबंधों को और मजबूत किया है। **दक्षिण कोरिया, वियतनाम और न्यूजीलैंड** जैसे देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी का विस्तार भविष्य में सहयोग के लिए महत्वपूर्ण है।

4.4. भारत-प्रशांत द्वीपीय देश संबंध (India-Pacific Islands Nations Relations)

भारत-प्रशांत द्वीपीय देश संबंध

हाल ही में, भारत ने आपदा-प्रभावित **प्रशांत द्वीपीय देशों** को सहायता प्रदान की। भारत का यह कदम 2023 में आयोजित FIPIC शिखर सम्मेलन के बाद **भारत-प्रशांत द्वीपीय सहयोग मंच (FIPIC)** साझेदारी के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

FIPIC के बारे में
- इसे **भारत और प्रशांत महासागर के 14 द्वीपीय देशों** के बीच आपसी सहयोग के लिए **2014 में गठित** किया गया था।
- **आयोजित शिखर सम्मेलन:** पहला (2014, फिजी), दूसरा (2015, जयपुर) तथा तीसरा (2023, पापुआ न्यू गिनी)।

भारत के लिए प्रशांत द्वीपीय देशों का महत्त्व

प्रशांत द्वीपीय देश एक **स्वतंत्र, खुला और समावेशी हिंद-प्रशांत क्षेत्र** सुनिश्चित करने के लिए काफी महत्वपूर्ण हैं।	**भू-सामरिक अवस्थिति:** ये भारत की व्यापक समुद्री रणनीतियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।	**भारत की आर्थिक क्षमता को मजबूत करते हैं:** प्रशांत द्वीपीय देशों के विशाल अनन्य आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में संसाधनों की सुरक्षा।	दक्षिण चीन सागर के मुद्दे पर **फिलीपींस के प्रति** भारत का **दृढ़ पक्ष समर्थन।**	**जलवायु परिवर्तन के लिए भारत की अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धता:** उदाहरण के लिए- इनमें से कुछ राष्ट्र ISA और CDRI **में शामिल** हो गए हैं।	**मजबूत भारतीय प्रवासी उपस्थिति** और ऐतिहासिक संबंध।

भारत की प्रशांत द्वीपीय देशों के साथ भागीदारी

2019 में **इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI)** लॉन्च किया गया।	**अनुदान सहायता और रियायती लाइन- ऑफ़ क्रेडिट:** नवीकरणीय ऊर्जा और जलवायु से संबंधित परियोजनाओं के लिए अनुदान सहायता।	**मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR):** उदाहरण के लिए- कोविड-19 के दौरान वैक्सीन की आपूर्ति।	**चुनाव प्रक्रियाओं को आसान बनाने में मदद:** उदाहरण के लिए- पापुआ न्यू गिनी को अमिट स्याही (indelible ink) की आपूर्ति।	**भारत-संयुक्त राष्ट्र विकास भागीदारी कोष (2017):** इसे अल्प विकसित देशों (LDCs) और लघु द्वीपीय विकासशील देशों (SIDS) को सहायता प्रदान करने के लिए स्थापित किया गया है।	**सामुदायिक विकास:** भारत और मार्शल द्वीप के बीच।

सहयोग में चुनौतियां

भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा: चीन की बढ़ती सामरिक उपस्थिति। उदाहरण के लिए- 2022 में चीन ने सोलोमन द्वीप समूह के साथ सुरक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।	**संसाधन संबंधी सीमाएं:** घरेलू आवश्यकताओं के लिए भारत के संसाधन, बाह्य व्यापार में बाधा बनते हैं।	**विशाल भौगोलिक दूरी:** भारत और प्रशांत द्वीपीय देशों के बीच यह दूरी संयुक्त परियोजनाओं के कार्यान्वयन को कठिन बना देती है।	**बढ़ती सुभेद्यता:** प्रशांत द्वीपीय देशों को प्राकृतिक आपदाओं, आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों आदि के कारण असमान प्रभाव का सामना करना पड़ता है।	**वैश्विक स्तर पर नीतिगत चर्चाओं से बाहर:** उदाहरण के लिए- क्वाड (QUAD), ऑकस (AUKUS) आदि।

आगे की राह

राजनयिक संलग्नता को मजबूत करना: नियमित उच्च-स्तरीय वार्ताओं को अपनाना।	अवैध मत्स्यन, समुद्री डकैती (पायरेसी) और समुद्री प्रदूषण जैसे **मुद्दों पर सहयोग** करना।	भारत **सूचना प्रौद्योगिकी, साइबर सुरक्षा, विलवणीकरण** जैसे क्षेत्रकों में मांग-आधारित परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।	नियमित समीक्षा तंत्र द्वारा मूलभूत अवसंरचना में **रणनीतिक संसाधनों का आवंटन** करना चाहिए।	**लोगों के बीच संपर्क** को बढ़ावा देने से ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध घनिष्ठ होंगे। इससे दीर्घकालिक संबंधों का निर्माण होगा।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, FIPIC शिखर सम्मेलन- "भारत और प्रशांत द्वीप समूह इस सदी की साझेदारी का एक महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कर रहे हैं। यह साझेदारी साझा आकांक्षाओं और चुनौतियों से निर्मित हुई है और इस विश्वास पर आधारित है कि इस दुनिया में सभी छोटे और बड़े देशों की समान हिस्सेदारी है।"

© Vision IAS

4.5. भारत और मध्य एशियाई गणराज्यों के संबंध (India and Central Asian Republics Relations)

भारत और पांच मध्य एशियाई गणराज्यों (CARs) के बीच संबंध

भारत को अपने राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंधों का लाभ उठाते हुए यूरेशिया में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए **मध्य एशिया (भारत के विस्तारित पड़ोस का एक हिस्सा)** एक सही मंच प्रदान करता है।

पांच CARs: कजाकिस्तान, किर्गिस्तान, ताजिकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान और उज्बेकिस्तान। सभी पांचों देश चारों ओर से **स्थल-रुद्ध** हैं।

भारत के CARs के साथ बेहतर संबंधों का महत्त्व

ऊर्जा और सुरक्षा: उदाहरण के लिए- तुर्कमेनिस्तान के पास चौथा सबसे बड़ा गैस भंडार है; तापी (तुर्कमेनिस्तान-अफगानिस्तान-पाकिस्तान-भारत: TAPI) गैस पाइपलाइन, कजाकिस्तान और उज्बेकिस्तान के साथ यूरेनियम आपूर्ति समझौता।	**समन्वय के क्षेत्र:** कनेक्टिविटी उदाहरण के लिए- INSTC और अश्गाबात समझौता। एक पूर्ण कार्यशील INSTC चीन के BRI का जवाब हो सकता है।	CARs में **शांति और सुरक्षा** अफगानिस्तान में शांति से जुड़ी हुई है।	**बहुपक्षीय संगठन:** SCO और कॉन्फ्रेंस ऑन इंटरेक्शन एंड कॉन्फिडेंस-बिल्डिंग मेजर्स इन इंडिया (CICA) आदि।

चुनौतियां

व्यापार: लगभग 2 बिलियन डॉलर, जबकि चीन का व्यापार लगभग 100 बिलियन डॉलर है।	**भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा:** रूस और चीन की मौजूदगी के कारण।	**कमजोर कनेक्टिविटी:** सीधे जमीनी संपर्क का अभाव और INSTC की धीमी गति।	विकासात्मक और आर्थिक परियोजनाओं का **मंद क्रियान्वयन।**

आगे की राह

30 साल के लिए रोडमैप तैयार करना: यह संबंधों से मध्य और दीर्घकालिक आकांक्षाओं को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर सकता है।	**अपनी क्षमताओं का लाभ उठाना:** ऐसी परियोजनाओं को पूरा करना जिनके स्थायित्व और इष्टतम लागत, दोनों के संदर्भ में दीर्घकालिक लाभ हो।	**पर्यटन को प्रोत्साहित करना:** लोगों के मध्य बेहतर संपर्क के लिए।	**सांस्कृतिक संबंध:** साझी विरासत को प्रोत्साहित करना चाहिए।	**बहुपक्षीय लिंक्स:** CAR देशों के साथ संलग्नता को गहन करना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रधानमंत्री मोदी- "भारत-मध्य एशिया के बीच मजबूत भागीदारी साझा क्षेत्रीय और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में शक्ति गुणक के रूप में कार्य करती है।"

4.6. भारत-अफ्रीका संबंध (India-Africa Relationship)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने **घाना और नामीबिया सहित कई अफ्रीकी देशों** की यात्रा की।

भारत-अफ्रीका संबंधों का महत्व

- **साझा अतीत: उपनिवेशवाद के खिलाफ साझा संघर्ष** (दक्षिण अफ्रीका में गांधीजी का सत्याग्रह) और गुटनिरपेक्ष आंदोलन के माध्यम से घनिष्ठ संबंध। ज्ञातव्य है कि **मिस्र** गुटनिरपेक्ष आंदोलन का संस्थापक सदस्य है।
- **व्यापार सहयोग:** भारत अफ्रीका का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** है।

- **खनिज:** विश्व के खनिज भंडार का **30% अफ्रीका** में है।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** कच्चे तेल के आयात में विविधता लाने के लिए अफ्रीका के साथ मजबूत संबंध जरूरी हैं। भारत अपने **कच्चे तेल का लगभग 4% अफ्रीका से आयात** करता है।
- **सतत विकास:** भारत ने अफ्रीका को $12 बिलियन का रियायती ऋण प्रदान किया है। प्रमुख पहलों में **ITEC (भारतीय तकनीकी व आर्थिक सहयोग) कार्यक्रम, पैन-अफ्रीकन ई-नेटवर्क, और ई-विद्याभारती व ई-आरोग्यभारती** शामिल हैं।
- **रणनीतिक और भू-राजनीतिक प्रभाव:** नियम-आधारित वैश्विक गवर्नेंस के भारत के दृष्टिकोण के साथ-साथ UNSC की स्थायी सदस्यता की भारत की आकांक्षा को साकार करने के लिए भी वैश्विक मंचों में अफ्रीका की उपस्थिति महत्वपूर्ण है।
    - इसी तरह, भारत ने भी **अफ्रीकी संघ की G-20 की स्थायी सदस्यता** का समर्थन किया है।
    - **बहुपक्षीय सहयोग: जापान** के साथ **एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)** विकास और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देता है। **भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन** सहयोग को बढ़ाता है।
- **रक्षा सहयोग:** संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों में भारत के 80% शांति रक्षक सैनिक अफ्रीका में सेवारत हैं। भारत **पश्चिमी हिंद महासागर, अदन की खाड़ी और लाल सागर में समुद्री डकैती के खिलाफ जिबूती आचार संहिता/ जेद्दा संशोधन (2020) में पर्यवेक्षक** के रूप में शामिल हुआ है।
- **प्रवासी:** अफ्रीका में **3 मिलियन भारतीय प्रवासी** सांस्कृतिक कूटनीति का समर्थन करते हैं।

भारत-अफ्रीका संबंधों में चुनौतियां:

- **परियोजना वितरण में धीमी गति:** भारत की विकास प्रतिबद्धताओं में देरी होती है, जिससे वह चीन की तुलना में कम प्रतिस्पर्धी हो जाता है। कृषि-व्यवसाय फर्मों पर **भूमि हड़पने और स्थानीय आबादी को विस्थापित** करने का आरोप लगाया गया है।
- **चीनी प्रभाव:** IMF के अनुसार **अफ्रीका के 20% निर्यात चीन को जाते हैं, और 16% आयात चीन से** आते हैं। चीन की पहली सैन्य सुविधा चीन के बाहर **जिबूती** में खोली गई है।
- **जोखिम धारणा:** भारतीय व्यवसाय **अफ्रीकी निवेशों को अवास्तविक जोखिम प्रीमियम** देते हैं, क्योंकि उन्हें विविध आर्थिक परिदृश्य की पर्याप्त जानकारी नहीं है।
- **नस्लवाद संबंधी चिंताएं:** भारत में अफ्रीकी छात्रों के खिलाफ हुई घटनाएं लोगों के बीच संबंधों को नुकसान पहुंचाती हैं। इससे **सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंध बाधित** होते हैं।
- **प्रतिष्ठा संबंधी मुद्दे: गैम्बिया में 'मेड इन इंडिया' कफ सिरप की घटना** से भारत की छवि और भारतीय उत्पादों पर विश्वास को ठेस पहुंची है।

अफ्रीका के साथ भारतीय और चीनी मॉडल की भागीदारी में अंतर

पहलू	भारत	चीन
दर्शन संबंधी जुड़ाव	**"बराबरी के आधार पर साथ मिलकर विकास"** (कम्पाला सिद्धांत, 2018)	**संसाधन निष्कर्षण पर केंद्रित** (उदाहरण के लिए- BRI परियोजनाएं)
निवेश पर फोकस	**सतत विकास** (उदाहरण के लिए- सोलर एलायंस, ई-विद्याभारती, ई-आरोग्य भारती आदि)	**जटिल भौतिक अवसंरचना और संसाधन समझौते (उदाहरण के लिए- DRC में 7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का खनिज-समझौता)**
वित्तीय दृष्टिकोण	**अनुदान + पारदर्शी ऋण** (उदाहरण के लिए- भारत-अफ्रीका मंच के माध्यम से $10 बिलियन लाइन ऑफ क्रेडिट)	**ऋण का स्पष्ट रूप से प्रकट न होना (अपारदर्शी ऋण); ऋण संकट (उदाहरण के लिए-** जाम्बिया व अंगोला की संकटग्रस्त स्थिति)
श्रम प्रथाएं	स्थानीय नौकरियां + कौशल हस्तांतरण (उदाहरण के लिए- ITEC ने 40,000 अफ्रीकियों को प्रशिक्षित किया)	**चीनी श्रमिकों का वर्चस्व;** खराब कार्य स्थिति
राजनयिक दृष्टिकोण	**शिक्षा के माध्यम से सॉफ्ट पावर** (भारत में 23,000 अफ्रीकी छात्र)	**राजनीतिक प्रभाव के लिए आर्थिक लाभ** ("गो आउट" नीति)

© Vision IAS

आगे की राह

- **नियमित उच्च-स्तरीय शिखर सम्मेलन:** आपसी हितों से संबंधित मुद्दों के लिए **भारत-अफ्रीकी संघ ट्रैक 1.5 संवाद** स्थापित करना चाहिए।
- **प्रौद्योगिकी हस्तांतरण: 'ट्रिपल ए' (किफायती/ Affordable, उपयुक्त/ Appropriate व अनुकूलनीय/ Adaptable)** प्रौद्योगिकियों को बढ़ावा देना चाहिए।
- **अभिनव वित्त-पोषण:** मिश्रित वित्त, सार्वजनिक निजी भागीदारी, पेंशन फंड आदि का पता लगाना चाहिए।
- **डिजिटल कनेक्टिविटी:** अफ्रीका के लाभ के लिए **UPI, कोविन, वन नेशन वन राशन कार्ड (ONORC), ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC)** आदि में सहयोग करना चाहिए।
- **मुद्रा तटस्थता (Currency Neutrality):** डॉलर-आधारित लाइन ऑफ क्रेडिट को रुपये-आधारित लाइन ऑफ क्रेडिट से बदलकर विदेशी मुद्रा जोखिम को कम करना चाहिए।

निष्कर्ष

"अफ्रीका के साथ हमारी साझेदारी रणनीतिक चिंताओं और आर्थिक लाभों से परे है। यह हमारे साझा भावनात्मक बंधनों और हमारी एकजुटता की भावना पर आधारित है।" **- एस. जयशंकर।**

4.7. भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध (India-U.S.A Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने **संयुक्त राज्य अमेरिका की आधिकारिक यात्रा** की।

भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका के मजबूत संबंधों का महत्त्व

- **आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देना:** संयुक्त राज्य अमेरिका भारत के लिए सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य है। भारत इंडो-पैसिफिक इकोनॉमिक फ्रेमवर्क फॉर प्रोस्पेरिटी (IPEF) के तीन स्तंभों में शामिल हो गया है।
- **वैश्विक रणनीतिक प्रभाव को मजबूत करना:** क्वाड से हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने में मदद मिलेगी।
- **रक्षा आधुनिकीकरण:** मूलभूत रक्षा समझौते: जनरल सिक्योरिटी ऑफ मिलिट्री इन्फॉर्मेशन एग्रीमेंट (GSOMIA), 2002; लॉजिस्टिक्स एक्सचेंज मेमोरेंडम ऑफ एग्रीमेंट (LEMOA), 2016; कम्युनिकेशंस कंपैटिबिलिटी एंड सिक्योरिटी एग्रीमेंट (COMCASA), 2018; बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट (BECA), 2020; अमेरिका ने भारत को **स्ट्रेटेजिक ट्रेड ऑथराइजेशन-1 (STA-1)** का दर्जा देकर एक प्रमुख रक्षा साझेदार के तौर पर स्वीकार किया है।
    - **इसके अलावा सिक्योरिटी ऑफ सप्लाई अरेंजमेंट यानी आपूर्ति सुरक्षा व्यवस्था (SOSA) समझौते पर भी हस्ताक्षर किए:** इस व्यवस्था से संयुक्त राज्य अमेरिका और इसके भागीदार देश कुछ प्रकार की रक्षा वस्तुओं की प्राथमिकता के आधार पर आपूर्ति के लिए एक-दूसरे से अनुरोध कर सकेंगे।
    - **एडवांस अमेरिकी रक्षा प्रौद्योगिकी तक पहुंच:** उदाहरण के लिए, भारत, अमेरिका का पहला गैर-संधि भागीदार बन गया, जिसे MTCR श्रेणी-1 मानव रहित हवाई प्रणाली-सी गार्जियन UAS की पेशकश की गई।
    - **सैन्य साझेदारी और आपसी सहयोग को मजबूत करना: उदाहरण के लिए, युद्ध अभ्यास,** मालाबार अभ्यास (भारत ने 2024 में **ऑस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिकी सेनाओं** की मेजबानी की थी)।
    - **रक्षा औद्योगिक विकास:** उदाहरण के लिए- **इंडस-एक्स AI, अंतरिक्ष और गहन समुद्री तकनीक में स्टार्ट-अप्स एवं संयुक्त अनुसंधान व विकास** को बढ़ावा देता है।
- **विज्ञान और प्रौद्योगिकी**
    - **उभरती प्रौद्यगिकियां:** iCET (2023) शुरू किया गया।
    - **अंतरिक्ष क्षेत्रक:** NISAR मिशन; भारत स्पेस गवर्नेंस के लिए **आर्टेमिस समझौते** में शामिल हुआ।

- **ऊर्जा सुरक्षा:** अमेरिका एक प्रमुख LNG आपूर्तिकर्ता है।
  - संयुक्त राज्य अमेरिका ने **प्रतिबंधित कंपनियों की सूची वाली अपनी 'एंटिटी लिस्ट' से तीन भारतीय संस्थाओं** (BARC, IGCAR, and IREL) **को हटा** दिया है। भारत ने **परमाणु ऊर्जा अधिनियम और परमाणु क्षति के लिए नागरिक दायित्व अधिनियम में संशोधनों** की घोषणा की है। इस कदम से निष्क्रिय **भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते को पुनर्जीवित** किया जा सकता है।
- **आतंकवाद से निपटना:** हाल ही में, अमेरिका ने तहव्वुर राणा (26/11 आतंकी हमलों से जुड़ा आतंकी) के भारत को प्रत्यर्पण को मंजूरी प्रदान की।
- **बहुपक्षीय मंचों पर समर्थन:** उदाहरण के लिए- UNSC में भारत की स्थायी सदस्यता, परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) की सदस्यता और अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) में पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल होने के लिए अमेरिका का समर्थन।
- **जलवायु और नवीकरणीय ऊर्जा:** संयुक्त राज्य अमेरिका-भारत रणनीतिक स्वच्छ ऊर्जा भागीदारी (SCEP) को 2021 में लॉन्च किया गया।
  - **SCEP के तहत शुरू की गई प्रमुख पहलें:** नवीकरणीय ऊर्जा प्रौद्योगिकी कार्रवाई मंच, सार्वजनिक-निजी ऊर्जा भंडारण टास्क फोर्स, यू.एस.-इंडिया कोलैबोरेटिव फॉर स्मार्ट डिस्ट्रीब्यूशन सिस्टम विद स्टोरेज (UI-ASSIST) कार्यक्रम।
- **उद्योग:** भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन प्लांट स्थापित करने हेतु समझौता किया।
  - यह **भारत के साथ-साथ विश्व का भी पहला मल्टी-मटेरियल फैब्रिकेशन (Fab) प्लांट** होगा, जो राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए काम करेगा। यह क्वाड समूह के भीतर अपनी तरह का पहला फैब भी है।
  - **ऑटोनॉमस सिस्टम इंडस्ट्री एलायंस(ASIA)**: हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने संयुक्त राज्य अमेरिका की आधिकारिक यात्रा के दौरान इसकी घोषणा की। इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत क्षेत्र में औद्योगिक साझेदारी और उत्पादन को बढ़ाना है।
  - भारत पहला देश है, जिसके साथ अमेरिका ने **अंडरवाटर डोमेन अवेयरनेस (UDA) प्रौद्योगिकियों के साथ काम करने** की पेशकश की है।
- **सांस्कृतिक:** भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र के अवसर पर अपने पहले 'सांस्कृतिक संपदा समझौते' पर हस्ताक्षर किए। इसका उद्देश्य भारत से संयुक्त राज्य अमेरिका को पुरावशेषों की अवैध तस्करी को रोकना और उस पर अंकुश लगाना है।

भारत-अमेरिका साझेदारी में तनाव पैदा करने वाले हालिया मुद्दे

- **व्यापार और आर्थिक चुनौतियां: पारस्परिक प्रशुल्कों (Reciprocal tariffs) का आरोपण** और अन्य संरक्षणवादी नीतियां भारतीय उत्पादों की **प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता को कम** कर सकती हैं।
  - वर्ष 2024 में, भारत को अमेरिका की **"स्पेशल 301" रिपोर्ट** में **प्रायोरिटी वॉच लिस्ट** में शामिल किया गया था। यह रिपोर्ट वैश्विक स्तर पर **बौद्धिक संपदा अधिकारों (IPR)** के संरक्षण और प्रवर्तन की वार्षिक समीक्षा प्रस्तुत करती है।
  - अमेरिका ने भारत को **जेनरलाइज्ड सिस्टम ऑफ प्रिफ्रेंसेज (GSP)सूची से बाहर** किया: इससे भारत के कुछ उत्पादों के शुल्क-मुक्त निर्यात पर प्रभाव पड़ा है।
- **भू-राजनीतिक मतभेद: उदाहरण के लिए-** भारत क्वाड का हिस्सा है, लेकिन रूस-यूक्रेन युद्ध पर भारत का संतुलित दृष्टिकोण अमेरिका की नीति से अलग है।
- **वीज़ा और आव्रजन संबंधी चुनौतियां:** हाल ही में अमेरिका अपने वीज़ा नियमों को सख्त कर रहा है, जैसे कि H-1B वीज़ा पर सख्त प्रतिबंध लगाया जाना। इसके अलावा, अवैध भारतीय आप्रवासियों को निर्वासित किया जा रहा है।
- **मानव एवं धार्मिक अधिकारों से संबंधित चिंताएं: संयुक्त राज्य अमेरिका के अंतर्राष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता आयोग (USCIRF)** ने **CAA** पर चिंता जताई थी। इसे भारत ने अपने आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप के रूप में देखा है।
- **प्रतिबंध:** CAATSA के तहत अमेरिका ने भारत द्वारा रूस से **S-400 वायु रक्षा प्रणाली** जैसे उन्नत हथियारों की खरीद पर चिंता व्यक्त की है।
- **नागरिकता मानदंडों में बदलाव:** जन्मसिद्ध नागरिकता पर प्रतिबंध तथा माता-पिता की आव्रजन स्थिति चाहे जो भी हो, **H-1B वीज़ा धारकों के बच्चों पर इसका असर** पड़ सकता है।
- **सीमित तकनीकी हस्तांतरण:** अमेरिकी कंपनियां संयुक्त उत्पादन की बजाय बिक्री को प्राथमिकता देती हैं (उदाहरण के लिए- GE F-414 इंजन का रुका हुआ सौदा)।

 © Vision IAS

भारत-अमेरिका साझेदारी को और मजबूत करने के उपाय

- **द्विपक्षीय व्यापार समझौते (BTA):** बाजार तक पहुंच बढ़ेगी, प्रशुल्क कम होंगे, बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) आदि से संबंधित मुद्दों के समाधान में मदद मिलेगी।
- **रक्षा फ्रेमवर्क:** दोनों देश 2025 से 2035 तक 10-वर्षीय रक्षा फ्रेमवर्क को शीघ्र अंतिम रूप देने के लिए मिलकर कार्य कर सकते हैं।
- **H-1B वीज़ा प्रतिबंधों में ढील देना:** अमेरिका भारतीय IT पेशेवरों, शोधकर्ताओं आदि के लिए वीज़ा प्रक्रियाओं को सरल बना सकता है।
- **CAATSA के तहत छूट:** भारतीय-अमेरिकी समुदाय के प्रभाव का भारत को CAATSA के तहत दीर्घकालिक छूट दिलाने में उपयोग किया जा सकता है।
- **मानवाधिकार और धार्मिक स्वतंत्रता से जुड़े अधिकार:** अमेरिका को भारत के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप से बचना चाहिए।
- **उभरती प्रौद्योगिकियां और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI): आपसी सहयोग को मजबूत बनाना;** उदाहरण के लिए, यू.एस.-इंडिया ट्रस्ट पहल के तहत **यू.एस.-इंडिया रोडमैप** तैयार किया जाएगा।

निष्कर्ष

"हम अपने अविश्वसनीय लोगों की नवीन भावना से जुड़े हुए और सशक्त हैं और साथ मिलकर, हम जो कार्य करेंगे, उनके माध्यम से हम 21वीं सदी को आकार देंगे।" **- एरिक गार्सेटी, पूर्व अमेरिकी राजदूत।**

4.7.1. संयुक्त राज्य अमेरिका के संरक्षणवादी उपाय (USA'S Protectionist Measures)

सुर्ख़ियों में क्यों?

संयुक्त राज्य अमेरिका ने अपनी **'अमेरिका फर्स्ट पॉलिसी'** का हवाला देते हुए विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO), पेरिस समझौता और अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)[5] जैसी **प्रमुख वैश्विक संस्थाओं/ व्यवस्थाओं से अलग होने** का फैसला किया है।

अन्य संबंधित तथ्य

- संयुक्त राज्य अमेरिका ने संयुक्त राष्ट्र की सांस्कृतिक संस्था **यूनेस्को (UNESCO) से बाहर निकलने** का फैसला किया है। इस संस्था से बाहर होने की घोषणा यह कहते हुए की गई कि यह संस्था तथाकथित **"उत्तेजक" और विभाजनकारी मुद्दों का समर्थन** करती है। अमेरिका ने इस संस्था पर **'इजरायल विरोधी रुख'** अपनाने का भी आरोप लगाया है।
- इससे पहले संयुक्त राज्य अमेरिका **2017 में भी पेरिस समझौते से बाहर हो गया** था, लेकिन **2021** में फिर से इसमें शामिल हो गया। इसी तरह इसने **2020 में WHO की सदस्यता त्यागने की प्रक्रिया शुरू कर दी थी।**
- अमेरिका की ओर से **टैरिफ वॉर (प्रशुल्क युद्ध)** भी जारी है।

संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा पहले किए गए संरक्षणवादी उपाय

- **वैश्विक संस्थाओं से अलग होना:** अमेरिका 2017 में TPP से बाहर हो गया था।
- अमेरिका ने **विश्व व्यापार संगठन (WTO)** के **विवाद निपटान निकाय** के **अपीलीय निकाय** में नियुक्तियों को बाधित करके उसे निष्क्रिय बना दिया है।
- **NAFTA** 2020 में समाप्त हो गया था। इसकी जगह **संयुक्त राज्य अमेरिका-मेक्सिको-कनाडा समझौते (USMCA)** ने ले ली है।

संयुक्त राज्य अमेरिका के नए कदम के संभावित प्रभाव

- **बहुपक्षवाद/ बहुपक्षीय संस्थाओं पर प्रभाव**
  - **वैश्विक अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था कमजोर हो सकती है:** अमेरिका के 'अंतर्राष्ट्रीय कानून के प्रति संप्रभुतावादी विचार कारण। (prioritizing national over global rules).
  - **वैश्विक अनुसंधान के लिए खतरा:** संयुक्त राज्य अमेरिका ने **WHO महामारी समझौता** और **अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विनियमों** में संशोधन पर वार्ता रोक दी है।
  - **विकास और आपातकालीन कार्य प्रभावित होंगे।** उदाहरण के लिए- अमेरिका शुरू से ही WHO में सबसे अधिक अंशदान करता रहा है। 2022-2023 में WHO के कुल राजस्व का 15.6% अमेरिकी अंशदान से आया था।

[5] International Criminal Court

- **इसके अलावा यू.एस. ने इंटरनेशनल क्लाइमेट फाइनेंस प्लान"** को समाप्त कर दिया, जो **साझा परंतु विभेदित उत्तरदायित्व (CBDR)** के सिद्धांत के खिलाफ है। ऐतिहासिक उत्सर्जन के बावजूद जलवायु परिवर्तन से निपटने में विकासशील देशों को समर्थन देने के अपने कर्तव्य को त्याग दिया है।
  - **वैश्विक व्यापार और आपूर्ति श्रृंखला में बाधा:** वैश्वीकरण का उलटाव।
- **भारत के हितों पर अमेरिकी संरक्षणवादी नीतियों के निहितार्थ**

सकारात्मक प्रभाव	नकारात्मक प्रभाव
• **अमेरिका और चीन के बीच व्यापार तनाव** की वजह से सूचना-प्रौद्योगिकी **(IT) सेवाएँ, इलेक्ट्रॉनिक्स, फार्मास्यूटिकल्स,** आदि क्षेत्रों के लिए भारत एक निवेश हब के रूप में उभर सकता है . **उदाहरण के लिए,** अमेरिकी **एंटिटी लिस्ट** से 3 भारतीय संगठनों को हटाना। • **हिंद-प्रशांत में रणनीतिक साझेदारी: क्वाड (QUAD), IMEC, IPEF** जैसी पहलों के तहत चीन के बढ़ते भू-राजनीतिक प्रभाव को प्रतिसंतुलित करने के लिए **"एशिया की धुरी (Pivot to Asia)"** रणनीति के आधार पर भारत के साथ रणनीतिक साझेदारी को बढ़ावा दिया गया है। • **प्रौद्योगिकीय सहयोग: iCET** और असैन्य परमाणु ऊर्जा साझेदारी जैसी पहलों के माध्यम से प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा मिलेगा।	• **व्यापार प्रतिस्पर्धा का बढ़ना:** भारतीय निर्यातकों को चीन की सस्ती वस्तुओं का अन्य देशों के बाजार में प्रवेश करने से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है। (**उदाहरण के लिए,** वस्त्र-परिधान निर्यातकों को दक्षिण-पूर्व एशिया में) • **भारतीय निर्यात पर उच्च शुल्क: उदाहरण के लिए,** इस्पात, ऑटोमोबाइल **(भारत के साथ लगभग 45.7 बिलियन डॉलर का व्यापार घाटा है।)** • **आव्रजन पर** प्रतिबंध (Immigration Restrictions): H1-B वीजा को सीमित करना और सख्त आव्रजन नीतियां संयुक्त राज्य अमेरिका में भारतीय तकनीकी कर्मचारियों और प्रवासियों के आगमन को प्रभावित कर सकती हैं। (अमेरिका में प्रतिवर्ष लगभग 70% H1-B वीजा भारतीयों को प्राप्त होता है) • **'बाय अमेरिकन' नीति:** भारतीय बाजार तक **पहुंच को प्रतिबंधित** करता है। इससे **मेक इन इंडिया पहल** और **PLI योजना** आदि पर भी असर पड़ सकता है।

निष्कर्ष

अमेरिका का बहुपक्षवाद से पीछे हटना **वैश्विक संस्थाओं को कमजोर** करता है, लेकिन भारत के लिए **रणनीतिक अवसर** भी पैदा करता है, जैसे **तकनीकी साझेदारियों (iCET) से लेकर आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण तक।** नई दिल्ली को **क्वाड और IPEF** का लाभ उठाना चाहिए, जबकि अपने निर्यात एवं H1-B पर निर्भर कार्यबल पर **संरक्षणवादी वार का विरोध** करना चाहिए।

4.8. भारत-कनाडा संबंध (India-Canada Relationship)

भारत–कनाडा संबंध

द्विपक्षीय कूटनीति में महत्वपूर्ण प्रगति के तहत, भारत और कनाडा ने एक-दूसरे की राजधानियों में उच्चायुक्तों की पुनः नियुक्ति करने का निर्णय लिया है। यह लगभग दो वर्षों के तनावपूर्ण संबंधों के बाद सामान्यीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- भारत ने छह कनाडाई राजनयिकों को निष्कासित किया और अपने उच्चायुक्त को कनाडा से वापस बुलाया।
- इससे पहले, कनाडा ने भारत से भारतीय अधिकारियों की **राजनयिक उन्मुक्ति (diplomatic immunity)** हटाने का अनुरोध किया था।

हालिया टकराव के लिए जिम्मेदार कारण

खालिस्तानी अतिवादी गतिविधियों को कनाडा द्वारा समर्थन।	**सुरक्षा मामलों में सहयोग की कमी** (उदाहरण के लिए- प्रत्यर्पण अनुरोधों की उपेक्षा)।	**आर्थिक समझौतों में गतिरोध** (उदाहरण के लिए- CEPA – व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता)।	**वोट बैंक की राजनीति** – कनाडा में सिख समुदाय का राजनीतिक इस्तेमाल।

भारत–कनाडा संबंधों का महत्व

रणनीतिक सहयोग: इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में नियम आधारित व्यवस्था (चीन कारक)।	**आर्थिक:** 2023 में द्विपक्षीय व्यापार 9.36 बिलियन डॉलर (वस्तुएं) और 9.99 बिलियन डॉलर (सेवाएं) हुआ।	**निवेश के अवसर:** उदाहरण के लिए- कनाडाई पेंशन फंड्स ने भारत में 75 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक का निवेश किया है।	**भारतीय प्रवासी समुदाय:** कनाडा में लगभग 18 लाख भारतीय रहते हैं।	**रक्षा सहयोग:** DRDO और कनाडाई वाणिज्यिक निगम के बीच रक्षा तकनीक हेतु समझौता हुआ है।

राजनयिक तनाव के संभावित प्रभाव

व्यापार और निवेश में रुकावट। (उदाहरण के लिए- CEPA)	**भारतीय प्रवासियों की चिंता,** विशेषकर छात्र (कनाडा में अनुमानित संख्या: 2.3 लाख)।	**वीजा प्रक्रिया में जटिलताएं।**

संबंधों को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम

उच्च-स्तरीय राजनयिक चर्चा शुरू करनी चाहिए।	**आतंकवाद और उग्रवाद के खिलाफ सहयोग के लिए फ्रेमवर्क के तहत** (2018) आतंकवाद के खिलाफ सुरक्षा सहयोग में वृद्धि करनी चाहिए।	CEPA **के अंतर्गत व्यापार समझौता वार्ता पुनः शुरू** करनी चाहिए।	प्रवासी समुदाय को **ट्रैक-II डिप्लोमेसी** के माध्यम से जोड़ना चाहिए।	**हिंद-प्रशांत क्षेत्र में साझा रणनीतिक हितों को मजबूत** करना (नौवहन की स्वतंत्रता) चाहिए।

निष्कर्ष

भारत–कनाडा संबंध साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, मजबूत जनसंपर्क और बढ़ते आर्थिक सहयोग पर आधारित हैं।

Lakshya
लक्ष्य प्रीलिम्स और मेन्स इंटीग्रेटेड मेंटरिंग प्रोग्राम 2026
UPSC प्रारंभिक और मुख्य परीक्षा 2026 के लिए रणनीतिक रिवीजन, प्रैक्टिस और परामर्श हेतु 13 माह का कार्यक्रम)
WWW.VISIONIAS.IN
8468022022
प्रारंभ: 31 जुलाई

4.9. भारत-यूरोप संबंध (India-Europe)

4.9.1. भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध (India-United Kingdom Relations)

भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध

भारत के प्रधान मंत्री की हालिया यूनाइटेड किंगडम यात्रा के दौरान भारत और यूनाइटेड किंगडम ने मुक्त व्यापार समझौते (FTA) पर हस्ताक्षर किए।

भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंधों के बीच बढ़ती घनिष्ठता

- **भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंध:** 2021 में **'व्यापक रणनीतिक साझेदारी'** तक बढ़ा दिए गए।
- **सैन्य अभ्यास:** दोनों देशों के बीच **अजेय वारियर, कोंकण, कोबरा वारियर** आदि।
- **स्वास्थ्य:** एस्ट्राजेनेका कोविड-19 वैक्सीन सहयोग।
- भारत **यूनाइटेड किंगडम का 12वां** सबसे बड़ा व्यापार भागीदार रहा है। यूनाइटेड किंगडम भारत में **छठा सबसे बड़ा निवेशक** है।
- **भारत और यूनाइटेड किंगडम ने 2024 में प्रौद्योगिकी सुरक्षा पहल (TSI)** शुरू की थी।

भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंधों का बढ़ता महत्त्व

- **बहु-स्तरीय संबंधों का गहन होना:** दोनों पक्षों ने अपने संबंधों को और बेहतर बनाने के लिए **'रोडमैप 2030' के स्थान पर विस्तारित फ्रेमवर्क** जारी किया। इसमें **'भारत-यू.के. विज़न 2035' फ्रेमवर्क** को शामिल किया गया है।
- भारत और यूनाइटेड किंगडम हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **'समग्र सुरक्षा प्रदाता'** की भूमिका निभा रहे हैं।
- **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) पर ध्यान केंद्रित करना:** इस क्षेत्र में यूनाइटेड किंगडम के कम-से-कम **7 स्थायी सैन्य अड्डे हैं।**
- **भारत-यूनाइटेड किंगडम के बीच मौजूद आर्थिक** विषमता भारत की प्रति व्यक्ति GDP में सुधार के लिए एक अवसर प्रदान करती है।
- **ब्रेक्जिट के बाद यूनाइटेड किंगडम-भारत व्यापार भागीदारी में तेजी आई है।**

भारत-यूनाइटेड किंगडम संबंधों में चुनौतियां

- **औपनिवेशिक प्रभाव:** "भारत में उपनिवेशवाद-विरोधी रुख भारत को यूनाइटेड किंगडम के साथ संभावनाओं की पूरी श्रृंखला का लाभ उठाने से रोकता है"- **सी. राजा मोहन।**
- यूनाइटेड किंगडम में आप्रवासियों के खिलाफ प्रदर्शनकारियों द्वारा भारतीय ध्वज के साथ किए गए अपमानजनक व्यवहार से **निपटने में यूनाइटेड किंगडम की विफलता।**
- **यूनाइटेड किंगडम की भारत-पाकिस्तान को एक समान साथ रखने की नीति** भारत के हितों के खिलाफ है। उदाहरण के लिए- संयुक्त राष्ट्र में कश्मीर को एक मुद्दे के रूप में उठाना।

आगे की राह

- **लोगों के बीच संबंधों को बढ़ावा देना: उदाहरण के लिए-** जनरेशन यू.के.-इंडिया पहल, इंडिया-यू.के. यंग प्रोफेशनल्स योजना आदि।
- यूनाइटेड किंगडम को **भारत और पाकिस्तान के साथ अलग-अलग संबंध** रखने चाहिए।
- हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **आतंकवाद-रोधी, मानवीय सहायता और आपदा राहत (HADR) तथा समुद्री सुरक्षा में सहयोग** को प्राथमिकता देनी चाहिए। उदाहरण के लिए- विशेष रूप से **लाल सागर और स्वेज नहर** में सहयोग को प्राथमिकता देनी चाहिए, जो भारत-यूनाइटेड किंगडम के मुख्य व्यापार मार्ग हैं।

निष्कर्ष

यूनाइटेड किंगडम के साथ भारत के संबंध फ्रांस और संयुक्त राज्य अमेरिका जैसे अन्य पश्चिमी देशों के साथ संबंधों की तुलना में लगातार पिछड़ते जा रहे हैं। हालांकि, हाल के वर्षों में यूनाइटेड किंगडम में तीव्र राजनीतिक उथल-पुथल के बावजूद, भारत के साथ संबंधों में लगातार सुधार हुआ है।

अभ्यास
ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा
(GS + निबंध + वैकल्पिक विषय)
मॉक टेस्ट (ऑफ़लाइन)
मेन्स 2025

पेपर	GS - I & II	GS - III & IV	निबंध	वैकल्पिक विषय I & II
तिथि	26 जुलाई	27 जुलाई	2 अगस्त	3 अगस्त

वैकल्पिक विषय: नृविज्ञान । भूगोल । हिंदी । इतिहास । गणित । दर्शनशास्त्र । भौतिकी । राजनीति विज्ञान और अंतर्राष्ट्रीय संबंध । लोक प्रशासन । समाजशास्त्र

4.9.1.1. भारत-यूनाइटेड किंगडम विज़न 2035 तथा व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौता (CETA) {India-UK Vision 2035 and Comprehensive Economic and Trade Agreement (CETA)}

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारतीय प्रधान मंत्री की यूनाइटेड किंगडम की यात्रा के दौरान **भारत और यूनाइटेड किंगडम ने CETA पर हस्ताक्षर किए और 'भारत-यूनाइटेड किंगडम विज़न 2035'** फ्रेमवर्क जारी किया।

भारत-यूनाइटेड किंगडम विज़न 2035 के बारे में

- **भारत-यूनाइटेड किंगडम विज़न 2035** फ्रेमवर्क 'रोडमैप 2030' की जगह लेगा। इसके **सहयोग के स्तंभ है:**
  - **व्यापार एवं आर्थिक विकास: भारत-यूनाइटेड किंगडम व्यापक आर्थिक एवं व्यापार समझौते (CETA)** पर हस्ताक्षर तथा **द्विपक्षीय निवेश संधि (BIT)** की दिशा में कार्य।
  - **प्रौद्योगिकी और नवाचार: यूनाइटेड किंगडम-भारत अनुसंधान और नवाचार कॉरिडोर** की स्थापना।
  - **रक्षा एवं सुरक्षा: जेट इंजन एडवांस्ड कोर टेक्नोलॉजीज (JEACT) और इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन** का संयुक्त विकास।
    - **हिंद-प्रशांत व हिंद महासागर क्षेत्र** पर रणनीतिक सहयोग।
  - **जलवायु और स्वच्छ ऊर्जा: ऊर्जा भंडारण, ग्रिड रूपांतरण और अपतटीय पवन** पर सहयोग।
  - **शिक्षा और लोगों के बीच जुड़ाव: भारत में यूनाइटेड किंगडम के विश्वविद्यालय परिसरों** की स्थापना हेतु प्रयास।
  - **बहुपक्षीय सहयोग:** संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद, विश्व व्यापार संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक में सुधार के लिए संयुक्त प्रयास।

व्यापक आर्थिक और व्यापार समझौते (CETA) की प्रमुख विशेषताओं पर एक नजर

अनुमान है कि CETA से **द्विपक्षीय व्यापार 2030 तक दोगुना होकर 120 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो जाएगा। (वर्तमान में **60 बिलियन अमेरिकी डॉलर**)

- **टैरिफ हटाना:** यह **99% भारतीय टैरिफ लाइनों पर टैरिफ को समाप्त** करता है तथा **90% यूनाइटेड किंगडम की टैरिफ लाइनों पर टैरिफ को कम** करता है।
  - **भारत के विभिन्न क्षेत्रकों के लिए लाभ:** श्रम-प्रधान क्षेत्रक (वस्त्र, चमड़ा, खिलौने, रत्न एवं आभूषण) तथा इंजीनियरिंग वस्तुएं, रसायन, समुद्री उत्पाद, खेल के सामान, ऑटो पार्ट्स आदि।
  - **यूनाइटेड किंगडम के क्षेत्रकों के लिए लाभ: व्हिस्की, सैल्मन, चॉकलेट और एडवांसड मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर** की भारतीय बाजारों तक अधिक पहुंच सुनिश्चित होगी।
  - इसमें **गैर-टैरिफ बाधाओं में कमी और सीमा शुल्क को सरल** करना शामिल है।
- **MSMEs:** भारतीय MSMEs अब **यूनाइटेड किंगडम सरकार की खरीद प्रक्रिया में भाग** ले सकते हैं।
- **किसानों के लिए:** किसानों को UK के **37.5 अरब डॉलर के कृषि बाज़ार और प्रीमियम खरीदारों** तक पहुँच मिलेगी।
  - **संवेदनशील क्षेत्र (डेयरी, सेब और खाद्य तेल) बिना किसी टैरिफ कटौती** के सुरक्षित हैं।
  - सुरक्षा शुल्क न होने से **स्थिर और बिना किस पेनाल्टी के बाज़ार पहुंच** सुनिश्चित होगी।
  - पारंपरिक कृषि ज्ञान को **पेटेंट संरक्षण** प्राप्त होगा।
- **पेशेवर लोगों के आवागमन को आसान बनाना:** उदाहरण: IT, वित्त, इंजीनियरिंग, वास्तुकला, शिक्षा और योग में भारतीय पेशेवरों के लिए **वीजा मानदंडों को आसान** बनाना शामिल है।
- **दोहरा अंशदान अभिसमय (DCC)[6]:** यह भारतीय कामगारों और उनके नियोक्ताओं को यूनाइटेड किंगडम में **तीन वर्षों तक सामाजिक सुरक्षा अंशदान से छूट प्रदान** करता है।
- **भारतीय सेवा और IT क्षेत्रक को बढ़ावा:** इसमें **डिजिटल रूप से प्रदान की जाने वाली सेवाओं** (जैसे वास्तुकला और इंजीनियरिंग) में वृद्धि को सुगम बनाना शामिल है। इससे भारत की वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि होगी।
- **अन्य:** इसमें प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुगम बनाना; भारतीय उद्योगों में यूनाइटेड किंगडम के निवेश को बढ़ाना; आपूर्ति श्रृंखला विविधीकरण को बढ़ावा देना और एकल व्यापार गलियारों पर अत्यधिक निर्भरता को कम करना शामिल है।

[6] Double Contribution Convention

निष्कर्ष

दो अग्रणी लोकतंत्रों और वैश्विक नवाचार केंद्रों के रूप में, भारत-यूनाइटेड किंगडम CETA दुनिया भर में निष्पक्ष, महत्वाकांक्षी और आधुनिक व्यापार समझौतों के लिए एक नया मानदंड स्थापित करता है।

4.9.2. भारत-यूरोपीय संघ संबंध {India-European Union (EU) Relations}

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **यूरोपीय संघ के व्यापार आयुक्त और भारत के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री** के बीच एक उच्च स्तरीय बैठक आयोजित की गई।

अन्य संबंधित तथ्य

- इस बैठक में **भारत और यूरोपीय संघ (EU) के बीच एक दीर्घकालिक साझेदारी** के लिए **छह प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित एक रोडमैप** तैयार किया गया।
- **भारत-यूरोपीय संघ सहयोग के लिए 6-सूत्री रोडमैप**
  - **साझे मूल्य:** बाजार एकीकरण और आर्थिक विकास के लिए लोकतंत्र एवं कानून के शासन के क्षेत्र में सहयोग।
  - **गुणवत्तापूर्ण उत्पादन:** भारत में उच्च गुणवत्ता युक्त उत्पादन के लिए मानकों में सामंजस्य (जीरो इफ़ेक्ट जीरो डिफेक्ट सिद्धांत) स्थापित करना।
  - **संधारणीय विकास:** निष्पक्ष व्यापार और संधारणीयता संबंधी सिद्धांतों को बढ़ावा देना। (CBDR सिद्धांत)
  - **व्यापार एजेंडा:** प्रशुल्क और गैर-प्रशुल्क बाधाओं पर ध्यान देते हुए एक निष्पक्ष एवं न्यायसंगत व्यापार फ्रेमवर्क का निर्माण करना।
  - **प्रौद्योगिकी और आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन**
  - **जनसंपर्क:** शिक्षा और अनुसंधान को बढ़ावा देकर कुशल युवाओं के सहयोग से संबंधों को मजबूत करना।

भारत-यूरोपीय संघ (EU) संबंधों का महत्व

- **पारस्परिक संबंध**
  - **ऐतिहासिक संबंध**: 1962 में भारत ने यूरोपीय आर्थिक समुदाय (EEC) के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए थे।
    - **2004 में हेग में आयोजित 5वें भारत-EU शिखर सम्मेलन** के दौरान, दोनों पक्षों के बीच संबंधों को अपग्रेड कर **रणनीतिक साझेदारी** में परिवर्तित किया गया।
  - **व्यापार साझेदारी:**
    - **यूरोपीय संघ (EU):** भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है।
    - **भारत:** यूरोपीय संघ का 9वां सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार है। 2023 में यूरोपीय संघ के साथ भारत का व्यापार अधिशेष (ट्रेड सरप्लस) था।
  - **रणनीतिक सहयोग:** सुरक्षा, नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन और बहुपक्षवाद जैसे क्षेत्रों में दोनों पक्षों के हित समान हैं।
    - **भारत-EU द्विपक्षीय संवाद** आतंकवाद-रोधी, साइबर सुरक्षा, आदि पर केंद्रित है।
    - **भारत-EU स्वच्छ ऊर्जा और जलवायु साझेदारी** 2016 लांच हुई।
  - **कनेक्टिविटी:** 021 में शुरू की गई कनेक्टिविटी साझेदारी का उद्देश्य डिजिटल, ऊर्जा और परिवहन क्षेत्रों को मजबूत करना है।
- **भारत के लिए लाभ**
  - **निवेश:** EU से भारत में **107.27 बिलियन डॉलर** का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश हुआ। (अप्रैल 2000 से दिसंबर 2023 के बीच)
  - **निर्यात को बढ़ावा:** भारत से यूरोपीय संघ को **सूचना प्रौद्योगिकी (IT), फार्मास्यूटिकल्स, वस्त्र और कृषि क्षेत्रक के उत्पादों के निर्यात को बढ़ाया जा सकता** है।
  - **सुरक्षा और रक्षा (सिक्योरिटी और डिफेंस):** उदाहरण के लिए, **भारत में एयरबस C-295 विमानों का विनिर्माण** शुरू किया जा रहा है।
  - **प्रौद्योगिकी और इनोवेशन:** उदाहरण के लिए, 2022 में स्थापित **"भारत-EU व्यापार और प्रौद्योगिकी परिषद** एक **रणनीतिक समन्वय तंत्र है।**
- **यूरोपीय संघ (EU) के लिए भारत का महत्त्व**
  - विशाल बाजार मिलना: भारत यूरोपीय संघ का एक महत्वपूर्ण व्यापारिक भागीदार बन सकता है।

© Vision IAS

- सांस्कृतिक और शैक्षिक संबंध और भू-राजनीतिक सहयोग: यूरोपीय संघ, इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में भारत की केंद्रीय भूमिका और विकास क्षमता का लाभ उठाकर ग्लोबल साउथ में अपनी भू-राजनीतिक स्थिति को मजबूत कर सकता है।
- **सुरक्षा और स्थिरता:** भारत, हिंद महासागर क्षेत्र में सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित कर सकता है।

चुनौतियां

- **व्यापार में विविधता की कमी:** व्यापार के समक्ष तकनीकी बाधा जैसी गैर-शुल्क बाधाएं द्विपक्षीय व्यापार के विस्तार में बाधा बनती हैं।
- **चीन के आयात पर यूरोपीय संघ की निर्भरता**
- **मुक्त व्यापार समझौता (FTA) वार्ताओं में देरी: डिजिटल क्षेत्रक पर नियम,** दोनों पक्षों के बीच मतभेद के कारण FTA वार्ताएं लंबित हैं।
- **कार्बन बॉर्डर एडजस्टमेंट मेकेनिज्म (CBAM)**
- **सहमति की कमी: श्रम कानूनों, मानवाधिकारों, पर्यावरण मानकों** जैसे विषयों पर मतभेद है।

आगे की राह

- **मुक्त व्यापार समझौता (FTA) को संपन्न करने में तेजी लाना और व्यापार प्रक्रिया में सुधार:** पूर्वानुमानित टैरिफ और सुसंगत नियम आदि।
- **हरित क्षेत्र में सहयोग और श्रम नीति, आदि।**

निष्कर्ष

"भारत और यूरोपीय संघ, दोनों ही 'विविधता के संघ' हैं तथा लोकतंत्र, कानून के शासन और मानवाधिकारों जैसे साझा मूल्यों में विश्वास रखते हैं। दोनों नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था और प्रभावी बहुपक्षवाद को बनाए रखने की आवश्यकता को लेकर समान रूप से प्रतिबद्ध हैं।" — **भारत-यूरोपीय संघ संयुक्त शिखर सम्मेलन घोषणा-पत्र, 2020**

4.9.3. भारत-फ्रांस संबंध (India-France Relationship)

सुर्खियों में क्यों?

प्रधान मंत्री ने **G-7 शिखर सम्मेलन** के दौरान फ्रांस के राष्ट्रपति से भेंट की, तथा **'होराइजन 2047' रोडमैप और हिंद-प्रशांत रोडमैप** पर ध्यान केंद्रित किया।

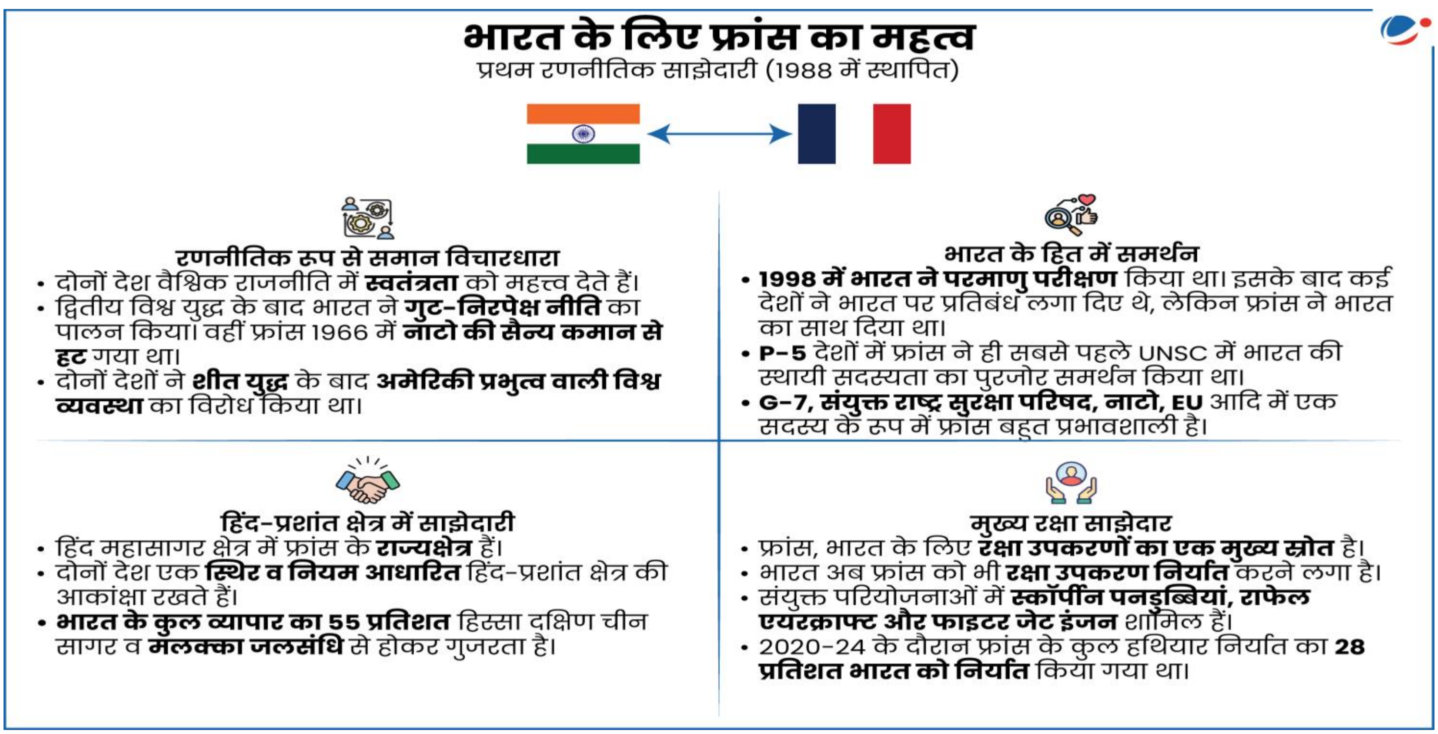

सम्मेलन के मुख्य परिणाम

- **'होराइजन 2047' रोडमैप तीन स्तंभों पर आधारित है-**
  - **सुरक्षा और संप्रभुता के लिए साझेदारी:** इसका उद्देश्य हिंद-प्रशांत को स्थिरता वाला क्षेत्र बनाना है। साथ ही, नो मनी फॉर टेरर (NMFT) जैसी पहलों के माध्यम से ऑनलाइन कट्टरपंथ और आतंकवाद से निपटना है।
  - **ग्रह के लिए साझेदारी:** इसके लिए इंडो-पैसिफिक पार्क्स पार्टनरशिप; अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और इंडो-पैसिफिक ओशन्स इनिशिएटिव (IPOI) आदि पहलें चलाई जा रही हैं।
  - **लोगों के लिए साझेदारी:** प्रवासन और आवागमन पर साझेदारी समझौता (2021) छात्रों व स्नातकों की गतिशीलता को बढ़ाएगा।
- **रक्षा और 'मेक इन इंडिया':** रक्षा तकनीक के सह-विकास को बढ़ावा देना (जैसे, राफेल *MRO*, LEAP इंजन आदि)।

भारत-फ्रांस संबंधों के बीच बढ़ती घनिष्ठता

- **रक्षा सहयोग:**
  - **फ्रांस भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता** है। (कुल आपूर्ति का 33%, SIPRI)
  - प्रमुख परियोजनाओं यथा- **राफेल इंजन, स्कॉर्पीन सबमरीन, और सह-उत्पादन हेतु नई रक्षा औद्योगिक रोडमैप**
  - **संयुक्त सैन्य अभ्यास:** वरुण (नौसेना) एवं फ्रिनजेक्स (थल सेना) तथा बहुपक्षीय अभ्यास (ला पेरोस एवं ओरियन) आयोजित किए जाते है।
  - **FRIND-X (फ्रांस-भारत रक्षा स्टार्ट-अप उत्कृष्टता)** का शुभारंभ किया गया।
- **हिंद-प्रशांत रणनीति:** 2023 में **इंडिया-फ्रांस इंडो-पैसिफिक रोडमैप** जारी किया गया था। इसने द्विपक्षीय सहयोग के दायरे को **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) से संपूर्ण हिंद-प्रशांत क्षेत्र** तक विस्तारित कर दिया है।
- **अंतरिक्ष एवं प्रौद्योगिकी**
  - फ्रांस भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए उपकरणों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता बना हुआ है; संयुक्त मिशन जैसे **तृष्णा/ TRISHNA** (सेटेलाइट)
  - **सुपर कंप्यूटिंग**: फ्रांसीसी कंपनी ने भारत के **सबसे तेज सुपर कंप्यूटर परम सिद्धि को विकसित किया है जो 4.6 पेटाफ्लॉप्स/सेकंड** पर काम करता है।
  - **भारत-फ्रांस AI रोडमैप**
    - भारत और फ्रांस ने **फ्रांस में आयोजित आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) एक्शन शिखर** सम्मेलन की सह-अध्यक्षता की।
    - **इंडो-फ्रेंच लाइफ साइंसेज सिस्टर इनोवेशन हब** का निर्माण किया जाएगा।
    - **फ्रांस और यूरोप में यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (UPI)** सुविधा शुरू होगी।
- **आर्थिक एवं डिजिटल संबंध**
  - **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** फ्रांस ने 2022-23 में $660 मिलियन का निवेश किया था। एयरबस-टाटा हेलीकॉप्टर निर्माण करेंगे; अकासा एयर-CFM ने 300 से अधिक LEAP इंजनों के लिए समझौता किया आदि।
  - **फ्रांस में UPI:** इस सुविधा को **एफिल टॉवर** पर लॉन्च किया गया, ताकि भारतीयों के लिए निर्बाध लेन-देन संभव हो सके।
- **बहुपक्षीय समर्थन**
  - फ्रांस कश्मीर के साथ आतंकवाद के मुद्दे पर भी भारत के रुख का समर्थन करता है।
  - भारत के MTCR, वासेनार अरेंजमेंट, और ऑस्ट्रेलिया ग्रुप में प्रवेश को सुगम बनाया।
- **असैन्य परमाणु सहयोग**
  - भारत और फ्रांस ने **2008** में एक असैन्य परमाणु समझौते पर हस्ताक्षर किए थे।
  - भारत अंतर्राष्ट्रीय **थर्मोन्यूक्लियर एक्सपेरिमेंटल रिएक्टर (ITER)** का भी सदस्य है।
  - दोनों देश अब **स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMRs)** के लिए साझेदारी पर काम कर रहे हैं।
- **अन्य क्षेत्र**
  - **जलवायु परिवर्तन:** दोनों देश **2015 के पेरिस जलवायु समझौते** के कार्यान्वयन को सक्रिय रूप से बढ़ावा देते हैं। दोनों देशों ने **2018 में अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन** का सह-शुभारंभ किया।
  - **त्रिपक्षीय सहयोग:** भारत-फ्रांस-ऑस्ट्रेलिया: एक **स्वतंत्र, खुले और नियम-आधारित हिंद-प्रशांत** को बढ़ावा देते हैं।

भारत और फ्रांस संबंधों में चुनौतियां

- **द्विपक्षीय व्यापार:** 2022 में, भारत और फ्रांस के बीच 15.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार हुआ था, जो अन्य साझेदारियों की तुलना में अभी भी कम है।
- **वीज़ा प्रतिबंध:** हाल ही में, भारत के कुछ पत्रकार एवं संवाददाता वीज़ा प्रतिबंधों से जूझ रहे हैं"।
- **परमाणु समझौते में अत्यधिक देरी:** जैतापुर परमाणु ऊर्जा रिएक्टरों को लेकर तकनीकी, वित्तीय और नागरिक परमाणु दायित्व संबंधी मुद्दे विद्यमान हैं, जिनका दोनों पक्षों द्वारा समाधान किया जाना अभी शेष है।
- **सामरिक स्वायत्तता को लेकर अलग-अलग मत:** भारत की गुटनिरपेक्षता फ्रांस के व्यावहारिक गठबंधनों के विपरीत है। इससे हिंद-प्रशांत रणनीतियों में (विशेषकर चीन के संदर्भ में) टकराव उत्पन्न हो रहा है।

आगे की राह

- **सामरिक स्वायत्तता के अंतरालों को खत्म करना:** भारत के संप्रभुता संबंधी फोकस को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में फ्रांस के संतुलनकारी कार्यों के साथ संरेखित करने के लिए लचीले दृष्टिकोण अपनाना।
- **सुरक्षा समन्वय को गहराना:** भारत-फ्रांस आतंकवाद-रोधी संयुक्त कार्य समूह जैसे मौजूदा तंत्रों का लाभ उठाना और संयुक्त गश्त/ अभ्यासों (वरुण, फ्रिंजेक्स आदि) का विस्तार करना।
- **रक्षा सहयोग में तेजी लाना:** रक्षा औद्योगिक रोडमैप के तहत संयुक्त उत्पादन को बढ़ावा देना (जैसे: राफेल MRO, पनडुब्बी तकनीक आदि)।
- **रुकी हुई परियोजनाओं को पुनर्जीवित करना:** जैतापुर परमाणु संयंत्र को चालू करने के लिए उत्तरदायित्व संबंधी मुद्दों का समाधान करना, जिससे स्वच्छ ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा मिलेगा।
- **बहुपक्षीय और सांस्कृतिक समन्वय:** क्वाड, I2U2 और हिंद-प्रशांत पहलों में सहयोग करना चाहिए, साथ ही, छात्रों द्वारा एक-दूसरे के देशों में आकर शिक्षा प्राप्त करना और UPI जैसी डिजिटल साझेदारियों को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

फ्रांस के राजदूत ने 19वीं सदी के फ्रांसीसी इतिहासकार जूल्स माइकलेट के उद्धरण का उल्लेख करते हुए कहा कि **"भारत-फ्रांस साझेदारी "सार्वभौमिक" है, क्योंकि यह "समुद्र से अंतरिक्ष तक" और उससे आगे तक जाती है।"** ज्ञातव्य है कि जूल्स माइकलेट ने भारत को **"विश्व का मैट्रिक्स"** बताया था।

4.9.4. भारत-रूस संबंध (India-Russia Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

भारत के प्रधान मंत्री ने जुलाई 2024 में रूस की आधिकारिक यात्रा की, जहां उन्होंने **22वें भारत-रूस वार्षिक शिखर सम्मेलन** में भाग लिया।

मुख्य परिणामों पर एक नज़र

- **2030 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार** लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
- **राष्ट्रीय मुद्राओं** का उपयोग करके द्विपक्षीय लेन-देन निपटान प्रणाली को बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया है।
- **2024-2029** तक की अवधि के लिए **रूसी सुदूर पूर्व** में व्यापार, आर्थिक और निवेश क्षेत्रों में **भारत-रूस सहयोग कार्यक्रम** समझौते पर हस्ताक्षर किए गए। साथ ही, **रूसी संघ के आर्कटिक क्षेत्र में सहयोग सिद्धांतों से संबंधित समझौते** पर भी हस्ताक्षर किए गए।
- भारत **कज़ान और येकातेरिनबर्ग में दो नए वाणिज्य दूतावास** खोलेगा।

भारत-रूस संबंधों का समकालीन महत्त्व

- **दोनों देश बहु-ध्रुवीय विश्व व्यवस्था की वकालत करते हैं:** किसी भी एक देश द्वारा एकतरफा कार्रवाई का विरोध करते हैं।
  - **रूस** ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता का **समर्थन** किया है।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** दोनों देश संयुक्त राष्ट्र, ब्रिक्स, NSG और SCO जैसे बहुपक्षीय मंचों पर सक्रिय रूप से सहयोग करते हैं।

- **रक्षा:** रूस भारतीय सशस्त्र बलों के लिए **रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता** है। देश के कुल रक्षा आयात का **36% हिस्सा** रूस से ही आता है। **उदाहरण के लिए,** रूस भारत को **S400 एयर डिफेंस सिस्टम** जैसे प्लेटफॉर्म की आपूर्ति कर रहा है और **'तुशील' फ्रिगेट** जैसे आधुनिक फ्रिगेट की भी आपूर्ति करेगा।
- **क्रेता-विक्रेता गतिशीलता से बदलाव:** यह संयुक्त अनुसंधान एवं विकास और उत्पादन में बदल गया है। उदाहरण के लिए- **ब्रह्मोस क्रूज मिसाइल और कलाश्निकोव AK203 असॉल्ट राइफल**
- **सामरिक:** दोनों देशों को क्रमशः **अमेरिका एवं चीन पर उनकी बढ़ती निर्भरता को संतुलित करने में मदद** करते हैं।
- **कनेक्टिविटी:** रूस विविध परियोजनाओं के माध्यम से **मध्य एशिया एवं यूरेशिया के साथ भारत की कनेक्टिविटी को बेहतर बनाने** का प्रयास कर रहा है। ये परियोजनाएं हैं- अंतर्राष्ट्रीय उत्तर-दक्षिण परिवहन गलियारा (INSTC), उत्तरी समुद्री मार्ग और चेन्नई-व्लादिवोस्तोक पूर्वी समुद्री गलियारा।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** रूस भारत को **कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता** बन गया है। रियायती कीमतों पर रूसी तेल और उर्वरकों की खरीद ने भारत की मुद्रास्फीति को नियंत्रण में रखा है।
- **तकनीकी सहयोग:** उदाहरण के लिए- **कुडनकुलम परमाणु ऊर्जा संयंत्र** (2000 मेगावाट ऊर्जा की आपूर्ति कर रहा है। अब संयंत्र 4000 मेगावाट की ऊर्जा आपूर्ति पर काम कर रहा है)**, गगनयान मिशन** आदि।
- **क्षेत्रीय स्थिरता के लिए साझेदारी:** उदाहरण के लिए- रूस अफगानिस्तान में शांति और स्थिरता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

भारत-रूस संबंधों के समक्ष चुनौतियां

- **भू-राजनीतिक चुनौतियां:**
    - रणनीतिक स्वायत्तता को संतुलित करना (उदाहरण के लिए- रूस से तेल आयात करने के लिए भारत पर संभावित द्वितीयक प्रतिबंधों के मद्देनजर रूस और अमेरिका के साथ संबंधों को संतुलित करना)।
    - **भारत-अमेरिका के बीच बढ़ता सहयोग (उदाहरण के लिए-** क्वाड);
    - **रूस-चीन के बीच बढ़ते संबंध (240 बिलियन डॉलर** से अधिक का द्विपक्षीय व्यापार);
    - रूस पाकिस्तान के साथ द्विपक्षीय संबंधों को बढ़ाने और गहरा करने का इच्छुक है। (उदाहरण के लिए, **रूस ने पाकिस्तान को INSTC में शामिल होने के लिए भी आमंत्रित** किया है)
- **बढ़ता व्यापार घाटा:** रूस बहुत ज्यादा व्यापार अधिशेष में है। 2023-24 में भारत ने रूस को 4.3 बिलियन डॉलर का निर्यात किया था, जबकि रूस से 61.4 बिलियन डॉलर का आयात किया गया था। इसने रुपया-रूबल सौदे को भी जटिल बना दिया है
- **अंतर-संचालनीयता के स्तर में कमी:** भारतीय और रूसी सशस्त्र बलों के बीच अंतर-संचालनीयता का स्तर काफी कम है। इसका प्रमाण **2022 और 2023 में भारत-रूस के बीच सैन्य अभ्यास इंद्र** का स्थगित होना है।
- **कोई भी बड़ा सैन्य सौदा नहीं: CAATSA के तहत अमेरिकी प्रतिबंधों के कारण** S-400 सैन्य सौदे के बाद कोई सैन्य सौदा नहीं हुआ
- **रूसी सुदूर पूर्व:** चेन्नई-व्लादिवोस्तोक समुद्री गलियारे को पुनर्जीवित करने से व्यापार में सीमित लाभ ही मिल सकेगा। ऐसा इस कारण क्योंकि **जापान और दक्षिण कोरिया के प्रतिबंधों की वजह से विदेशी बाजारों तक रूस की पहुंच सीमित** हो गई है, जिससे व्यापार बाधित हो रहा है।

आगे की राह

- **व्यापार में विविधता लाना:** भारत-रूस व्यापार को क्रूड ऑयल व्यापार से आगे भी बढ़ाना चाहिए। दोनों देशों के बीच व्यापार में धातुकर्म, रासायनिक उद्योग और अंतरिक्ष जैसे क्षेत्रकों के उत्पादों को शामिल किया जाना चाहिए।
- भारत को रूस के नेतृत्व वाले **यूरेशियन इकोनॉमिक यूनियन** के साथ मुक्त व्यापार समझौते पर वार्ता को तेजी से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।
- **रेसिप्रोकल एक्सचेंज ऑफ लॉजिस्टिक्स एग्रीमेंट (RELOS):** यह समझौता सैन्य अभ्यास, प्रशिक्षण, आदि के लिए **परस्पर सैन्य विनिमय** को सरल बनाएगा।
- **द्विपक्षीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर सहयोग को व्यापक बनाना:** उदाहरण के लिए, बांग्लादेश में परमाणु ऊर्जा संयंत्र पर सहयोग
- **टियर II कूटनीति को मजबूत करना:** नई पीढ़ी के साथ-साथ शिक्षाविदों के साथ भी संपर्क को मजबूत करना और रूस में भारतीय कॉरेस्पोंडेंट्स को तैनात करना।

निष्कर्ष

प्रत्येक बदलाव एवं पुनर्संरेखण के माध्यम से, भारत और रूस ने पारस्परिक लाभ के लिए तथा क्षेत्रीय व वैश्विक स्थिरता एवं समृद्धि में योगदान देने के लिए नए अवसरों को अपनाने और खोजने की असाधारण क्षमता का प्रदर्शन किया है। **— एस. जयशंकर।**

4.9.5. भारत-यूरेशिया संबंध (India-Eurasia Relations)

भारत- यूरेशिया संबंध

भारत के प्रधान मंत्री ने **पोलैंड** की यात्रा की, जो मध्य एवं पूर्वी यूरोप (CEE) के साथ राजनयिक संबंधों में एक महत्वपूर्ण बदलाव का प्रतीक है।

अन्य संबंधित तथ्य
- भारत के प्रधान मंत्री ने 23 साल बाद साइप्रस की यात्रा की।
- प्रधान मंत्री ने क्रोएशिया, ग्रीस, ऑस्ट्रिया और यूक्रेन का भी दौरा किया।

यूरेशिया की बदलती भू-राजनीति को उजागर करने वाले कारक

संघर्ष का केंद्र: रूस-यूक्रेन युद्ध, आर्मेनिया-अजरबैजान युद्ध।	**चीनी प्रभाव में वृद्धि:** चीन की बेल्ट एंड रोड पहल।	**पूर्व-पश्चिम रणनीतिक जुड़ाव:** AUKUS जैसी साझेदारियां हिंद-प्रशांत में आपसी संपर्क बढ़ा रही हैं।	**अमेरिका की बदलती रणनीति:** मध्य-पूर्व से ध्यान हटाकर यूरेशिया व हिंद-प्रशांत क्षेत्र पर केंद्रित।	चीन-रूस की **'नो-लिमिट' साझेदारी;** रूस-ईरान-चीन का ध्रुवीकरण; चीन-ईरान-रूस-तुर्किये-पाकिस्तान रणनीतिक गठबंधन।

भारत की मध्य और पूर्वी यूरोप (CEE) के साथ सक्रियता

CEE देशों के साथ **भारत की कूटनीतिक भागीदारी बढ़ी** है।	**पोलैंड CEE देशों में भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक** और निवेश साझेदार है। (2023 में द्विपक्षीय व्यापार 6 बिलियन अमेरिकी डॉलर)	**IMEEC:** जी-20 शिखर सम्मेलन के दौरान इस समझौते की घोषणा की गई थी। इसका उद्देश्य एशिया, यूरोप और मध्य पूर्व को एकीकृत करना है।	**पोलैंड में इंडोलॉजी अध्ययन की मजबूत परंपरा:** योग, महाराजा से अच्छे संबंध (महाराजा जाम साहेब दिग्विजयसिंहजी) आदि।	**रणनीतिक स्वायत्तता का प्रदर्शन:** उदाहरण के लिए- भारत के प्रधान मंत्री की यूक्रेन यात्रा से यह संकेत मिलता है कि यूक्रेन के प्रति भारत का दृष्टिकोण रूस के प्रति दृष्टिकोण से स्वतंत्र है।

द्विपक्षीय संबंधों में सामान्य स्थिति बहाल करने के हालिया प्रयास

रणनीतिक: रूस के साथ संबंध मजबूत करना, चीन को प्रतिसंतुलित करना; आर्मेनिया के साथ रक्षा साझेदारी आदि।	**आर्थिक:** भारत-यूरेशिया का द्विपक्षीय व्यापार लगभग 20 बिलियन अमेरिकी डॉलर से 170 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।	**क्षेत्रीय सुरक्षा:** आतंकवाद, उग्रवाद और मादक पदार्थों की तस्करी से निपटने में सहायता करना।	**ऊर्जा सुरक्षा:** यूरेशियाई क्षेत्र, विशेष रूप से मध्य एशिया, ऊर्जा के क्षेत्र में भारत का संभावित दीर्घकालिक साझेदार है।

भारत के लिए उभरते यूरेशियाई परिदृश्य में चुनौतियां

भौगोलिक संपर्क का अभाव और INSTC, IMEC आदि की **धीमी प्रगति।**	**पाकिस्तान कारक:** पाकिस्तान के प्रतिनिधित्व वाली भौगोलिक सीमाओं को पार करना।	**BRI** भारत की रणनीतिक विस्तारित पड़ोस पहल, जैसे कि **कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति** को चुनौती देता है।	**रूस की चीन से बढ़ती निकटता और भारत का अमेरिका या क्वाड की ओर झुकाव।**	**रणनीतिक साझेदारियों को संतुलित** करने में समुद्री (QUAD) और महाद्वीपीय (SCO) गठबंधनों, दोनों के साथ भारत की स्वायत्तता बनाए रखना शामिल है।

आगे की राह

कनेक्टिविटी को बढ़ाना: सुदूर-पूर्व और जापान से संपर्क स्थापित करने के लिए रूस के ग्रेटर यूरेशिया कॉरिडोर और नॉर्थ-ईस्ट पैसेज से जुड़ना आवश्यक है।	**यूरोपीय संघ के साथ संबंधों को मजबूत बनाना:** भारत की यूरेशिया नीति में यूरोपीय संघ के साथ बेहतर जुड़ाव शामिल होना चाहिए।	**भारत-मध्य एशिया शिखर सम्मेलन,** इसे भारत-आसियान शिखर सम्मेलन की तरह, द्विवार्षिक की बजाय वार्षिक रूप से आयोजित किया जा सकता है।	भारत को अपनी **कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति** को अपनी एक्ट ईस्ट नीति और इंडो-पैसिफिक रणनीति के साथ **संतुलित** करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

श्याम सरन- "यूरेशिया भी भारत के विस्तारित पड़ोस का हिस्सा है, जिसके साथ लंबे समय से ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यापारिक संबंध रहे हैं। हालांकि, पाकिस्तान के बनने और तिब्बत पर चीन के कब्जे के कारण ये संबंध कमजोर पड़ गए। इसलिए, हिंद महासागर के पूर्वी और पश्चिमी दोनों छोर पर भारत का समुद्री संपर्क और भी महत्वपूर्ण साबित होगा।"

4.9.6. भारत-नॉर्डिक संबंध (India-Nordic Relations)

भारत-नॉर्डिक संबंध

- **सामाजिक लोकतंत्र का नॉर्डिक मॉडल भारत जैसे विविधताओं से परिपूर्ण देशों जैसे विकासशील देशों के लिए अनेक उदाहरण प्रस्तुत करता है।**

अवलोकन

भारत-नॉर्डिक रणनीतिक संबंध लोकतांत्रिक मूल्यों, संस्थागत समानताओं, लोगों के बीच संपर्क, बहुलवादी समाज, निरंतर सुरक्षा और व्यापार सहयोग, नवाचार तथा जलवायु न्याय की मजबूत नींव पर आधारित हैं।	**नॉर्डिक देश: वस्तुतः** नॉर्डिक क्षेत्र के पांच देश हैं- डेनमार्क, नॉर्वे, स्वीडन, फिनलैंड और आइसलैंड।	**फिनलैंड और नॉर्वे को किए जाने वाले निर्यात:** क्रमशः 100% और 80% से अधिक की वृद्धि।	**व्यापारिक भागीदार:** पांच नॉर्डिक देशों में से चार यूरोप में भारत के शीर्ष 20 व्यापारिक भागीदारों में से हैं।

सहयोग के क्षेत्र

ब्लू इकोनॉमी: उदाहरण के लिए- भारत-नॉर्वे एकीकृत महासागर प्रबंधन और अनुसंधान पहल।	**भारत-नॉर्डिक शिखर सम्मेलन (2018,2022):** अमेरिका के बाद, भारत के साथ नॉर्डिक देशों का शिखर सम्मेलन स्तर पर विशेष सहयोग है।	**आर्कटिक परिषद:** भारत आर्कटिक परिषद में एक पर्यवेक्षक है, जिसमें सभी नॉर्डिक देश सदस्य हैं।	**बहुपक्षीय मंचों पर समर्थन:** नॉर्डिक देश परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (NSG) जैसे समूहों में भारत की सदस्यता तथा संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में स्थायी सदस्यता का समर्थन करते हैं।

भारत-नॉर्डिक देशों के संबंधों का महत्त्व

नॉर्डिक संधारणीयता परियोजनाएं: उदाहरण के लिए- नॉर्डिक संधारणीय शहर परियोजना भारतीय स्मार्ट सिटीज़ मिशन का समर्थन करती है।	**नॉर्डिक नवाचार उत्कृष्टता:** भारत फिनलैंड द्वारा संचालित पांच वैश्विक नवाचार केंद्रों में से एक की मेजबानी करता है। जिन्हें फ़िननोड (FinNode) के रूप में जाना जाता है।	**सॉवरेन वेल्थ फंड्स:** नॉर्डिक देश भारत में निवेश के स्रोत हैं। उदाहरण के लिए- 1.4 ट्रिलियन डॉलर का नॉर्वे का सॉवरेन वेल्थ फंड।	**संबंधों के बेहतर होने से भारत की आर्कटिक नीति को बढ़ावा मिलना:** यह आर्कटिक क्षेत्र में रणनीतिक उपस्थिति के लिए भारत के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

चुनौतियां

रूस के साथ संबंध: नॉर्डिक-रूस आर्कटिक तनाव रूस के साथ भारत के अनुकूल संबंधों के विपरीत है। इसके अतिरिक्त, फ़िनलैंड (2023) और स्वीडन (2024) नाटो में शामिल हो गए हैं।	**सदस्यों के अलग-अलग हित:** अलग-अलग राष्ट्रीय हितों के कारण समान नीतिगत रुख अपनाना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है।	**व्यापार बाधाएं:** टैरिफ व गैर-टैरिफ बाधाएं और जटिल विनियम जैसे मुद्दे व्यापार एवं निवेश के अवसरों को सीमित करते हैं।

आगे की राह

सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा देना: लोगों के आपसी संबंधों को मजबूत करना।	**सहयोग में सुधार:** सतत विकास, जलवायु परिवर्तन, स्वास्थ्य, ऊर्जा और डिजिटल प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में सर्वोत्तम प्रथाओं, विशेषज्ञता एवं अनुसंधान को साझा करना।	**विभिन्न मोर्चों पर प्रौद्योगिकी का लाभ उठाना:** स्टार्ट-अप, स्वास्थ्य सेवा, खाद्य प्रसंस्करण और संबंधित क्षेत्रक।	**लगातार कूटनीतिक संवाद** की सुविधा प्रदान करना।

निष्कर्ष

भारत-नॉर्डिक साझेदारी पिछले कुछ वर्षों में विकसित हुई है, जिससे महत्वपूर्ण रणनीतिक अभिसरण हुआ है। इसका द्विपक्षीय संबंधों और वैश्विक भू-राजनीति दोनों पर प्रभाव पड़ा है।

4.10. भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध (India-Australia Relations)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, **रियो डी जेनेरियो में आयोजित G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान दूसरा 'भारत-ऑस्ट्रेलिया वार्षिक शिखर सम्मेलन'** आयोजित किया गया।

शिखर सम्मेलन के मुख्य बिंदुओं पर एक नज़र

- **भारत-ऑस्ट्रेलिया नवीकरणीय ऊर्जा साझेदारी (REP) का शुभारंभ**
- **ऑस्ट्रेलिया-भारत बिजनेस एक्सचेंज (AIBX) कार्यक्रम** को अगले **चार और वर्षों के लिए बढ़ा दिया है**
- **रक्षा और सुरक्षा सहयोग पर संयुक्त घोषणा-पत्र** को **2025** में नवीनीकृत और मजबूत करने के लिए समझौता हुआ

भारत-ऑस्ट्रेलिया द्विपक्षीय संबंधों का महत्त्व

- **रणनीतिक साझेदारी:** ऑस्ट्रेलियाई सरकार ने अपनी **राष्ट्रीय रक्षा रणनीति (NDS), 2024** में भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में **'शीर्ष स्तरीय सुरक्षा साझेदार'** के रूप में मान्यता दी है।
- **रक्षा सहयोग: म्यूच्यूअल लॉजिस्टिक सपोर्ट एग्रीमेंट** और रक्षा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी कार्यान्वयन व्यवस्था पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
  - दोनों देश **ऑस्ट्राहिन्द (AUSTRAHIND), ऑसिन्डेक्स (AUSINDEX), पिच ब्लैक (Pitch Black)** जैसे सैन्य अभ्यास आयोजित करते हैं।
- **आर्थिक: आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (ECTA)[7] 2021** ने मुक्त व्यापार को बढ़ावा दिया है। इसके तहत **ऑस्ट्रेलिया का लक्ष्य 2035 तक भारत को अपने शीर्ष तीन निर्यात बाजारों में शामिल** करना है।
  - हाल ही में ऑस्ट्रेलिया ने **भारत के साथ आर्थिक जुड़ाव के लिए एक नया रोडमैप** जारी किया है।
- **महत्वपूर्ण खनिज: क्रिटिकल मिनरल्स इन्वेस्टमेंट पार्टनरशिप** पर हस्ताक्षर किए गए हैं। उल्लेखनीय है कि ऑस्ट्रेलिया दुनिया के लगभग आधे **लिथियम** का उत्पादन करता है।
- **परमाणु सहयोग: असैन्य परमाणु सहयोग समझौता** 2014 में हस्ताक्षरित किया गया था।
- **हरित ऊर्जा सहयोग: ऑस्ट्रेलिया-भारत ग्रीन हाइड्रोजन टास्कफोर्स** का उद्देश्य ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन और उसके उपयोग को बढ़ाना है।
- **मेट्स (MATES) योजना: MATES (मोबिलिटी अरेंजमेंट फॉर टैलेंटेड अर्ली-प्रोफेशनल्स स्कीम) ऑस्ट्रेलिया** द्वारा शुरू की गई एक नई वीज़ा पहल है। यह पहल भारतीय स्नातकों और शुरुआती करियर पेशेवरों को **ऑस्ट्रेलिया में 2 साल तक रहने और काम करने** की अनुमति देती है।

भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों में विद्यमान चुनौतियां

- **व्यापार: व्यापक आर्थिक सहयोग समझौता (CECA)** वार्ता में देरी तथा **गैर-व्यापारिक बाधाएं** ऑस्ट्रेलिया में भारतीय निर्यात को बढ़ावा देने में प्रमुख चुनौतियां बनकर उभरी हैं।
- **परमाणु:** 2014 में दोनों देशों ने **परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण इस्तेमाल के लिए एक समझौता** किया था।
- खालिस्तानी समर्थकों का बढ़ता प्रभाव।
- **वीजा:** हाल ही में ऑस्ट्रेलिया ने वीजा शुल्क में लगभग 125% की वृद्धि की है।

आगे की राह

- **आर्थिक भागीदारी:** ECTA को मजबूत करने और CECA पर वार्ता पूरी करने पर जोर देने की जरूरत है। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ ऊर्जा, खनन, प्रौद्योगिकी जैसे **महत्वपूर्ण क्षेत्रकों में द्विपक्षीय निवेश को बढ़ावा** देना चाहिए।
- **सुरक्षा संबंधों को मजबूत करना:** साइबर सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा तथा आतंकवाद-रोधी सुरक्षा खतरों का मुकाबला करने के लिए मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सहयोग को मजबूत करना:** आसियान (ASEAN) और **पैसिफिक आइलैंड फोरम** जैसे क्षेत्रीय संगठनों के तहत सहयोग बढ़ाना चाहिए।

[7] Economic Cooperation and Trade Agreement

- **उग्रवाद से निपटना:** संयुक्त निगरानी और खुफिया जानकारी साझा करने जैसे द्विपक्षीय तंत्रों को मजबूत करना चाहिए तथा सामुदायिक संवाद को बढ़ावा देना चाहिए।

निष्कर्ष

"भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंध आपसी विश्वास और सम्मान पर आधारित हैं। हमारे संबंध क्रिकेट, करी और राष्ट्रमंडल से कहीं आगे है। यह डेमोक्रेसी, डायस्पोरा, दोस्ती और सबसे महत्वपूर्ण, आपसी विश्वास से परिभाषित होता है।" **— प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी**

4.11. भारत और LAC (लैटिन अमेरिका और कैरिबियन) क्षेत्र संबंध {India and LAC (LATIN AMERICA and Caribbean) Region Relations}

भारत- लैटिन अमेरिका और कैरिबियन क्षेत्र संबंध

औपनिवेशिक काल की समाप्ति के बाद भारत और लैटिन अमेरिकी देशों का साझा इतिहास रहा है। इसके बावजूद, दोनों पक्ष पिछले कई दशकों से न्यूनतम द्विपक्षीय संबंधों को ही बनाए रख पाए हैं। हालांकि, हाल ही में यह क्षेत्र भारत की विदेश नीति में तेजी से प्रमुखता प्राप्त कर रहा है।

"हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि दूरी अब मजबूत संबंधों में बाधा न बने।" –– विदेश मंत्री एस. जयशंकर

भारत के लिए लैटिन अमेरिका का महत्त्व

- **व्यापार: लैटिन अमेरिका (LAC)** भारत के आयात स्रोतों में **8वें स्थान** पर है। मर्कोसुर के साथ **प्रेफरेंशियल ट्रेड एग्रीमेंट (PTA)**। चिली के साथ **व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA)** आदि।
- **दक्षिण-दक्षिण सहयोग:** भारत ने पहला वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ सम्मेलन आयोजित किया था। (इसमें 29 लैटिन अमेरिकी और कैरेबियाई देश सम्मिलित हुए थे)
- **रणनीतिक महत्व:** उदाहरण के लिए- लैटिन अमेरिका **तांबे** के वैश्विक उत्पादन में लगभग 40% का योगदान करता है। साथ ही, विश्व के 35% **लिथियम** की आपूर्ति करता है।
- **रणनीतिक हित:** भारत के लिए अपनी वैश्विक महत्वाकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए यह क्षेत्र महत्वपूर्ण है। उदाहरण के लिए- UNSC, NSG आदि में भारत द्वारा अपनी सदस्यता सुनिश्चित करना।
- **खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा:** उदाहरण के लिए- लैटिन अमेरिका (उपजाऊ भूमि का विशाल क्षेत्र); ब्राजील (अत्याधुनिक खाद्य भंडारण प्रौद्योगिकियां); पर्यावरण के अनुकूल एथेनॉल को लेकर ब्राजील के साथ सहयोग आदि।

भारत के लिए लैटिन अमेरिका में चुनौतियां

- **कूटनीतिक स्तर पर पर्याप्त ध्यान न देना** और पर्याप्त संस्थागत उपस्थिति का अभाव।
- **व्यापार:** उदाहरण के लिए- लैटिन अमेरिकी देशों के कृषि उत्पादों पर भारत द्वारा अधिक प्रशुल्क (चीन की तुलना में 5 गुना) लगाना।
- **कनेक्टिविटी का अभाव:** भारत के पास इस क्षेत्र के लिए कोई सीधी पोत-परिवहन सेवाएं नहीं हैं।
  भाषा संबंधी बाधाएं: भारत के लोकाचार से अपरिचित होना, भाषाओं में अकुशल होना भारतीय कंपनियों के लिए एक बड़ी बाधा है।
- **चीन के साथ प्रतिस्पर्धा:** चीन कई लैटिन अमेरिकी देशों में सबसे बड़ा निवेशक है। पनामा नहर के माध्यम से चीन की सीधी शिपिंग लेन है।

संबंधों को मजबूत बनाने हेतु आगे की राह

- **व्यापार विविधीकरण और प्रगति:** 2027 तक दोतरफा व्यापार को दोगुना करके 100 बिलियन डॉलर करना, PTAs को FTAs में अपग्रेड करना।
- **'फोकस' में सुधार करना:** LAC कार्यक्रम को पुनर्जीवित करना (क्षेत्र में व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए); व्यापार और सामरिक प्रौद्योगिकियों पर मंत्रिस्तरीय परिषद की स्थापना करना आदि।
- **सुरक्षा** और रक्षा उद्योग सहयोग **को बढ़ावा** देना।
- एक उज्जवल भविष्य के लिए घनिष्ठ दक्षिण-दक्षिण सहयोग की दिशा में संयुक्त कदम बढ़ाने हेतु **वित्तीय संस्थानों का विकास** करना।
- समकालीन वास्तविकता को प्रतिबिंबित करने के लिए **धारणाओं का पुनर्निर्धारण** करना।

निष्कर्ष

भारत के वैश्विक शक्ति बनने की महत्वाकांक्षा में लैटिन अमेरिका की भूमिका बनी रहेगी, और यह व्यवसाय के लिए **'गोल्डीलॉक्स ज़ोन' (अर्थात् अमेरिका और यूरोप के अत्यधिक विनियमित एवं प्रतिस्पर्धी बाजार एवं अफ्रीका के कम प्रतिस्पर्धी एवं कम क्रय शक्ति वाले बाजार के बीच का संतुलित क्षेत्र)** का भी हिस्सा है।

© Vision IAS

4.12. मुख्य शब्दावलियां (Keywords)

विस्तारित पड़ोस	निकटवर्ती पड़ोस	कफाला प्रणाली	लाल सागर संकट	एशियाई प्रीमियम
प्रवासी कल्याण	अब्राहम समझौता	एक्ट ईस्ट नीति	ओसाका ट्रैक	ऑयल पाम कूटनीति
रुपया का अंतर्राष्ट्रीयकरण	अनुदान एवं रियायती लाइन ऑफ़ क्रेडिट	अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी संकट	मुक्त और खुला हिन्द-प्रशांत रणनीति	मानवीय सहायता एवं आपदा राहत (HADR)
आसियान एकता और केंद्रीयता	सांस्कृतिक सम्पदा समझौता	द्विपक्षीय व्यापार समझौता (BTA)	"पाइवोट टू एशिया" रणनीति	समुद्री चौकपॉइंटस
'ट्रिपल ए' तकनीक	लॉजिस्टिक्स विनिमय समझौता (RELOS)	यूरेशियाई-केंद्रित वैश्विक व्यवस्था	कनेक्ट सेंट्रल एशिया नीति	विभेदित संधारणीयता
हरित सहयोग	विविधता के संघ	डी-हाइफनेशन	ट्रैक-II कूटनीति	नीली अर्थव्यवस्था
समुद्री संपत्तियां	"गो आउट" नीति	गोल्डीलॉक्स क्षेत्र	'होराइजन 2047' रोडमैप	विकास के सुपरहाईवे

उत्तर लेखन प्रारूप

Q. पश्चिम एशिया के साथ भारत का जुड़ाव ऊर्जा निर्भरता से रणनीतिक साझेदारी तक विकसित हो गया है। इस संदर्भ में, ऊर्जा सुरक्षा से परे भारत के लिए पश्चिम एशिया के महत्व पर विस्तार से चर्चा कीजिए और बताइए कि क्षेत्रीय अस्थिरता भारत के हितों को कैसे प्रभावित कर सकती है।

परिचय	मुख्य भाग: 1	मुख्य भाग: 2	आगे की राह	निष्कर्ष
पश्चिम एशियाई क्षेत्र के बारे में संक्षेप में चर्चा कीजिए।	विभिन्न पहलुओं में भारत के लिए पश्चिम एशिया का महत्व	क्षेत्रीय अस्थिरता और भारत पर प्रभाव	विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़ाव बढ़ाने के लिए अपनाए गए आवश्यक उपाय	भारत के व्यापक हित में संतुलित विदेश नीति की भूमिका के साथ निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
✓ सामान्य अध्ययन ✓ निबंध ✓ दर्शनशास्त्र
2025 ENGLISH MEDIUM 27 JULY हिन्दी माध्यम 27 जुलाई
2026 ENGLISH MEDIUM 27 JULY हिन्दी माध्यम 27 जुलाई

Vision Publication
Igniting Passion for Knowledge..!
Scan the QR code to explore our collection and start your journey towards success.

5. महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच तथा उनकी संरचना व अधिदेश (Important International Institutions, Agencies, and Fora, Their Structure, Mandate)

5.1. अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून (International Humanitarian Law: IHL)

सुर्ख़ियों में क्यों?

वर्ष 2024 में **1949 के जिनेवा कन्वेंशंस की 75वीं वर्षगांठ मनाई** गई। ध्यातव्य है कि जिनेवा कन्वेंशन में ही **अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून (IHL) की आधारशिला** रखी गई थी।

IHL के महत्वपूर्ण सिद्धांत

- **विभेद का सिद्धांत:** यह नागरिकों और नागरिक संपत्ति पर प्रत्यक्ष हमले को प्रतिबंधित करता है।
- **आनुपातिकता का सिद्धांत:** पक्षकारों को आकस्मिक नुकसान का पूर्वानुमान लगाने की आवश्यकता होती है, जो सीधे हमले और अप्रत्यक्ष प्रभाव के कारण हो सकता है, बशर्ते कि वह उचित रूप से पूर्वानुमानित हो।
- **पूर्वोपाय का सिद्धांत (Principle of precaution):** यह सभी मिलिट्री ऑपरेशन के संचालन में नागरिक आबादी की रक्षा करने हेतु सशस्त्र संघर्ष में शामिल पक्षकारों पर सतत देखभाल करने की जिम्मेदारी आरोपित करता है।

IHL के प्रभावी प्रवर्तन में चुनौतियां

- **IHL का चयनात्मक अनुपालन:** ज्य अक्सर मानवतावादी दायित्वों पर राष्ट्रीय सुरक्षा और राजनीतिक हितों को प्राथमिकता देते हैं।
- **गैर-राज्य सशस्त्र समूहों का उदय:** ये समूह अक्सर IHL को मान्यता नहीं देते हैं या उसका पालन नहीं करते हैं।
- **प्रभावी प्रवर्तन तंत्र का अभाव: उदाहरण के लिए-** सीरियाई गृहयुद्ध में अक्सर कार्रवाई युक्तिसंगत नहीं होती।
- **राज्य की संप्रभुता का सिद्धांत अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्राधिकार को सीमित** कर सकता है। इससे उल्लंघनकर्ताओं (विशेष रूप से म्यांमार में रोहिंग्या संघर्ष जैसे गैर-अंतर्राष्ट्रीय सशस्त्र संघर्षों के मामले में) को जवाबदेह ठहराने के प्रयास जटिल हो सकते हैं।
- **पांच स्थायी सदस्यों (P5) द्वारा वीटो शक्ति का प्रयोग करना:** IHL के उल्लंघन के मामलों **के विरुद्ध निर्णायक कार्रवाई को रोकना। उदाहरण के लिए-** सीरियाई गृहयुद्ध के दौरान होने वाले युद्ध और चीन ने बार-बार अपनी वीटो शक्ति का इस्तेमाल करना।
- शांति स्थापना मिशनों का **सीमित समर्थन:** IHL को लागू करने की क्षमता में सीमितता। उदाहरण के लिए- दारफुर में संयुक्त राष्ट्र मिशन (UNAMID)
- **स्वचालित एवं लंबी दूरी तक मारक क्षमता वाले हथियार का उपयोग:** IHL के संदर्भ में जवाबदेही और अनुपालन के संबंध में नैतिक एवं कानूनी सवाल उत्पन्न करता है।
- **साइबरस्पेस में IHL को किस तरह से लागू किया जाएगा:** यह अभी तक स्पष्ट नहीं है।

IHL को लागू करने के लिए भारत द्वारा किए गए प्रयास

- **संविधान:** अनुच्छेद 51 राज्य को अंतर्राष्ट्रीय शांति व सुरक्षा को बढ़ावा देने और अंतर्राष्ट्रीय कानून एवं संधि संबंधी दायित्वों के प्रति सम्मान का निर्देश देता है।

© Vision IAS

- **सैन्य प्रशिक्षण और जागरूकता:** भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा अपने प्रशिक्षण कार्यक्रमों में IHL को शामिल किया जाता है; आदि।
- **शांति अभियान:** भारत संयुक्त राष्ट्र के शांति स्थापना मिशनों में सबसे बड़े सहयोगकर्ता देशों में से एक है।
- **गैर-राज्य अभिकर्ताओं के साथ जुड़ाव:** पूर्वोत्तर तथा जम्मू और कश्मीर जैसे क्षेत्रों में मानवतावादी मानदंडों का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए गैर-राज्य अभिकर्ताओं के साथ वार्ता करना।

आगे की राह

- इसे और अधिक प्रतिनिधिक बनाने के लिए **संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधार और** वीटो शक्ति के उपयोग को प्रतिबंधित करने की आवश्यकता है। इसके अलावा क्षेत्रीय संगठनों को अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। **उदाहरण के लिए,** रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति, आदि।
- गैर-राज्य अभिकर्ताओं द्वारा मानवतावादी मानदंडों के प्रति सम्मान सुनिश्चित करने के लिए **'औपचारिक मानवतावादी प्रतिबद्धता' (Deeds of Commitment)'** पर हस्ताक्षर करने हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए।
- यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि शांति समझौतों में स्पष्ट रूप से IHL का पालन करने की प्रतिबद्धता शामिल हो
- साइबर युद्ध में IHL को लागू करने के लिए विशिष्ट दिशा-निर्देश और प्रोटोकॉल्स विकसित करने चाहिए।
- स्वचालित हथियार प्रणालियों के विकास और उपयोग को **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विनियमित** करने की आवश्यकता है

निष्कर्ष

जिनेवा कन्वेंशन के 75 वर्ष पूरे होने के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून (IHL) भी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है - चाहे वह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो आधारित राजनीति हो या स्वचालित हथियारों की बढ़ती भूमिका। ऐसे समय में भारत को न केवल वीटो प्रणाली में सुधार का समर्थन करना चाहिए, बल्कि एक प्रमुख शांति सैनिक योगदानकर्ता (शीर्ष 3 में से एक) के रूप में अपनी भूमिका का उपयोग करते हुए राज्यों और गैर-राज्य अभिकर्ताओं के बीच प्रवर्तन की खाई को पाटने की दिशा में सक्रिय प्रयास करने चाहिए।

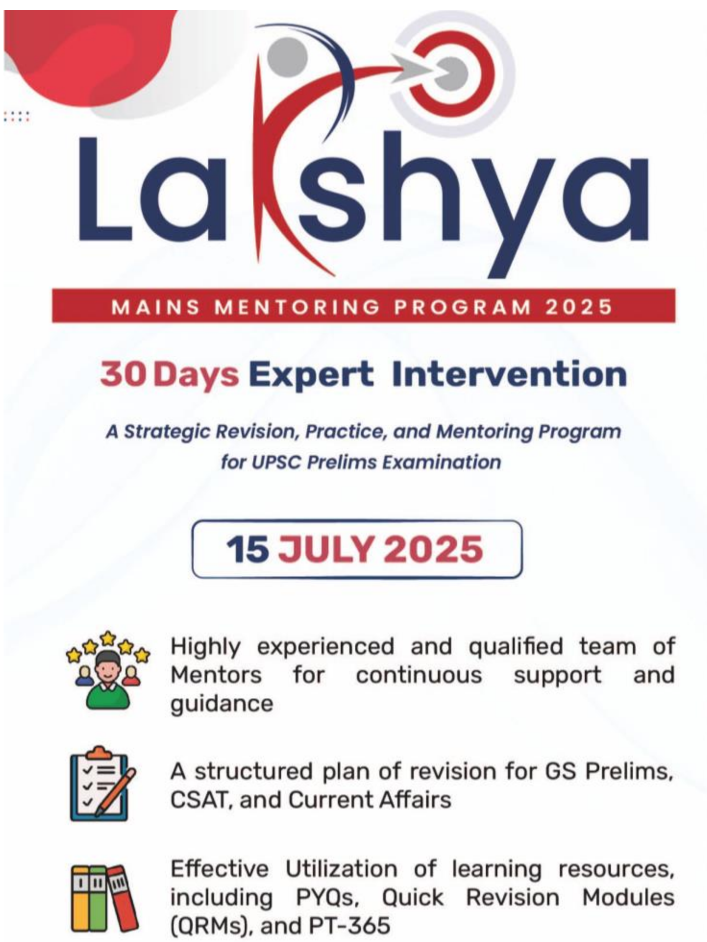

5.2. संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (United Nation Security Council)

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)

- G-4 राष्ट्रों की ओर से भारत ने जोर देकर कहा कि **उग्रवाद, साइबर सुरक्षा खतरे जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC) में सुधार आवश्यक हैं।**

- UNSC की स्थापना **संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा 1945 में संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों में से एक** के रूप में की गई थी। इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी **अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने** के लिए काम करना है।
- परिषद में **5 स्थायी सदस्य** हैं, जबकि **10 अस्थायी सदस्य दो साल के कार्यकाल** के लिए चुने जाते हैं।
- **भारत संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य है और इसने 8 बार UNSC के अस्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है।**

समन्वय के क्षेत्र

UNSC का महत्त्व
- इसका उद्देश्य **अंतर्राष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से हल** करना है।
- **प्रतिबंध लगाना:** शांति और सुरक्षा बनाए रखना।
- **शांति मिशन:** यह 3 महाद्वीपों में 11 ऑपरेशन की देखरेख करता है।

UNSC में भारत का योगदान
- भारत ने अपने कार्यकाल के दौरान **'तालिबान और लीबिया प्रतिबंध समितियों'** तथा UNSC की **'आतंकवाद-रोधी समिति'** की अध्यक्षता की थी।
- **मानवाधिकारों के सार्वभौमिक घोषणा-पत्र (UDHR)** को तैयार करने में योगदान।
- संयुक्त राष्ट्र में रंगभेद का मुद्दा उठाने वाला **पहला** देश।

UNSC सुधारों की आवश्यकता क्यों?

प्रतिनिधित्व का अभाव:
- स्थायी सदस्यों में **अफ्रीका, लैटिन अमेरिका और कैरिबियन का** कोई प्रतिनिधित्व नहीं है।
- **स्थायी सदस्यों में** एशिया-प्रशांत का प्रतिनिधित्व **कम** है।

विश्वसनीयता में गिरावट

संघर्षों को सुलझाने में विफलता, जैसे रूस-यूक्रेन युद्ध।

हित-आधारित निर्णय लेना
- स्थायी सदस्य अपने हितों की पूर्ति के लिए **वीटो शक्ति का दुरुपयोग** करते हैं। **उदाहरण के लिए- चीन** ने निर्धारित व्यक्तियों को वैश्विक आतंकवादी घोषित करने के **भारत के प्रस्ताव को वीटो** कर दिया था।

भारत के लिए लाभ
- **वैश्विक मुद्दों** का अधिक प्रभाव। विशेष रूप से ग्लोबल साऊथ से संबंधित मुद्दे।
- **आतंकवाद** और अन्य महत्वपूर्ण मामलों पर नीति निर्धारण में अधिक प्रभाव।

सुधारों में चुनौतियां

संयुक्त राष्ट्र चार्टर में संशोधन की आवश्यकता है।

समूहों का विरोध
- **G4 और L.69 समूह (विकासशील राष्ट्र)** के प्रस्तावों **को यूनाइटिंग फॉर कंसेंसस (कॉफ़ी क्लब)** से प्रतिरोध का सामना करना पड़ रहा है।
- प्रमुख विरोधी: **इटली, पाकिस्तान, आदि।**

परिषद संबंधी सुधार पर **अंतर-सरकारी वार्ता (IGN) में धीमी प्रगति।**

निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधारों पर गतिरोध की स्थिति बनी हुई है, क्योंकि देशों के बीच प्रतिस्पर्धी हित और प्रतिद्वंद्विता बनी रहती है। जो देश सुधार की ओर अग्रसर होना चाहते हैं, उन्हें उन सदस्यों से विरोध का सामना करना पड़ रहा है, जो उनके उच्च दर्जे को स्वीकार नहीं करना चाहते। इससे वैश्विक गवर्नेंस में पुरानी शक्ति संरचना अभी भी कायम है।

© Vision IAS

5.3. भारत और संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना (India and UN Peacekeeping)

भारत और यू.एन. पीसकीपिंग यानी संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना के सिद्धांत और अधिदेश

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना के सिद्धांत: पक्षकारों की सहमति, निष्पक्षता और आत्मरक्षा तथा जनादेश की रक्षा के अलावा बल का प्रयोग न करना।

सौंपे गए कार्य: नागरिकों की रक्षा करना और मानवाधिकारों को बढ़ावा देना तथा पूर्व लड़ाकों के निरस्त्रीकरण व गुट से पृथक्करण और उन्हें मुख्यधारा में फिर से लाने में सहायता करना।

भारत के लिए संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों की प्रासंगिकता

- **क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों को नियंत्रित करके अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए भारत की प्रतिबद्धता** को दर्शाते हैं।
- उन क्षेत्रों में **रणनीतिक पहुंच प्रदान** करते हैं, जहां भारत **के आर्थिक, ऊर्जा व बहुपक्षीय हित** हैं।
- **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर दावे को मजबूत** करते हैं। जैसे कि UNSC की स्थायी सदस्यता का दावा।
- **भारतीय सैन्य बलों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी क्षमताओं को प्रदर्शित** करने का अवसर प्राप्त होता है।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान

- भारत ने **शांति स्थापना मिशनों में 2,87,000** के आस-पास सैनिकों की सेवाएं प्रदान की हैं।
- भारत **लैंगिक शोषण और दुर्व्यवहार पर ट्रस्ट फंड में योगदान देने वाला पहला देश** था। इसे 2016 में स्थापित किया गया था।
- शांति रक्षक सैनिकों के खिलाफ अपराधों को रोकने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए **"ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स"** शुरू किया गया है।
- कांगो, लाइबेरिया, दक्षिण सूडान और हैती जैसे देशों में **शांति रक्षक सैनिकों, खासकर महिलाओं की भूमिका** को प्रोत्साहन देना।
- भारतीय थल सेना ने प्रति वर्ष **12,000 से अधिक सैनिकों** को प्रशिक्षित करने के लिए **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केंद्र (CUNPK)** की स्थापना की है।

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशनों के सामने आने वाली चुनौतियां

संगठनात्मक चुनौतियां
- निर्णय लेने की प्रक्रिया में सैनिकों और पुलिस की कोई भूमिका नहीं होती।
- संयुक्त राष्ट्र के पास अपर्याप्त शक्ति।
- **अनावश्यक मिशन:** उदाहरण के लिए- भारत और पाकिस्तान में संयुक्त राष्ट्र सैन्य पर्यवेक्षक समूह (UNMOGIP)।

परिचालन में चुनौतियां
- घटता अंतर्राष्ट्रीय समर्थन।
- शांति स्थापित करने में क्षेत्रीय संगठनों की भूमिका: उदाहरण के लिए- अफ्रीकी एकता संगठन (OAU)

संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना मिशन के लिए भारत द्वारा प्रस्तावित सुधार

- **निर्णय लेना:** सैनिकों और पुलिस का योगदान देने वाले देशों की अधिक भूमिका।
- **मिशनों की विवेकपूर्ण तैनाती:** सीमाओं को पूरी तरह पहचानते हुए उनकी विवेकपूर्ण तैनाती।
- **क्षेत्रीय दृष्टिकोण:** मध्यस्थता, युद्ध विराम की निगरानी आदि में क्षेत्रीय और उप-क्षेत्रीय संगठनों का समर्थन करना।
- **निकास रणनीति:** शांति स्थापना मिशनों को "शुरू से ही एग्जिट रणनीति" को ध्यान में रखना चाहिए।
- **शांति रक्षक सैनिकों की सुरक्षा:** यह अपराधियों को न्याय के कटघरे में लाकर सुनिश्चित की जानी चाहिए।

निष्कर्ष

शांति स्थापना, संघर्ष से शांति की ओर कठिन मार्ग पर चलने में देशों की सहायता करने के लिए संयुक्त राष्ट्र के पास उपलब्ध सबसे प्रभावी साधनों में से एक साबित हुई है।

5.4. अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (International Criminal Court: ICC)

सुर्ख़ियों में क्यों?

हाल ही में, अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) ने **यूक्रेन में असैन्य ठिकानों पर हमले के लिए रूस के पूर्व रक्षा मंत्री और उसके सैन्य प्रमुख** के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किए हैं।

मानवता के विरुद्ध गंभीर अपराधों से निपटने में ICC की भूमिका

- **दंड मुक्ति को समाप्त करना और कानून के शासन को बनाए रखना।**
    - यह **नरसंहार, मानवता के विरुद्ध अपराधों और युद्ध अपराधों** के मामलों में अंतिम उपाय के रूप में कार्य करता है।
    - 20वीं शताब्दी में, संघर्षों के कारण लगभग 20 करोड़ लोग मारे गए (हर 27 में से 1 मौत) थे।
- **युद्ध आचरण से संबंधित कानूनों को लागू करता है।**
    - युद्ध के दौरान आचरण संबंधी कानून (jus in bello) के तहत युद्ध अपराधों का निष्पक्ष रूप से न्याय/ अभियोजन करता है।
    - उदाहरण के लिए: ICC के अभियोजक ने इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष में नागरिकों की रक्षा में कानून की भूमिका पर बल दिया।
- **राष्ट्रीय न्यायालयों के पूरक के रूप में कार्य:** जब घरेलू न्यायालय अत्याचारों का अभियोजन करने में विफल रहते हैं, तब ICC हस्तक्षेप करता है।
- **घरेलू कानूनी सुधारों को बढ़ावा देना:** राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय अपराधों के विरुद्ध कानून अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **पीड़ितों को केंद्र में रखते हुए न्याय करना:** पीड़ितों को मुकदमों में भाग लेने की अनुमति देता है।
- **सुभेद्य समूहों की रक्षा करता है**
    - यौन हिंसा और बाल सैनिकों के उपयोग के मामलों में अभियोजन करता है।
    - उदाहरण के लिए- ICC ने बाल सैनिकों के उपयोग के लिए लुबंगा को दोषी ठहराया और सामूहिक बलात्कार के लिए बेम्बा को सजा दी।
- **वैश्विक क्रिमिनल जस्टिस गवर्नेंस:** राज्य पक्षकारों की सभा सामूहिक निर्णय लेने को संभव बनाती है (एक देश, एक वोट)।
- **पीड़ितों के लिए ट्रस्ट फंड (TFV)**
    - मुआवजा और पीड़ितों को सहायता प्रदान करता है।
    - उदाहरण के लिए- 2023 में 26,000 से अधिक लाभार्थी।

ICC के तहत अपराधों की 4 श्रेणियां

नरसंहार
- इसके तरीकों में हत्या, नुकसान पहुंचाना आदि शामिल हैं।
- इसमें बच्चों के जन्म को रोकना या बच्चों को समूहों के बीच जबरन स्थानांतरित करना भी शामिल है।

मानवता के खिलाफ अपराध
- नागरिक आबादी पर बड़े पैमाने पर हमले करके किए गए गंभीर अपराध
- इनमें हत्या, बलात्कार, अवैध कारावास, जबरन गायब करना, दासता, यातना, जैसे अपराध शामिल हैं।

युद्ध अपराध
- सशस्त्र संघर्ष के संदर्भ में जिनेवा कन्वेंशंस का गंभीर उल्लंघन।
- बाल सैनिकों का उपयोग; नागरिकों/ युद्धबंदियों की हत्या या यातना; अस्पतालों व ऐतिहासिक स्मारकों पर जानबूझकर आक्रमण करना आदि।

आक्रामकता का अपराध
- किसी देश द्वारा दूसरे देश की संप्रभुता, अखंडता या स्वतंत्रता के खिलाफ सशस्त्र बल का उपयोग।

आपराधिक न्याय के संदर्भ में ICC की सीमाएं

- **प्रवर्तन का अभाव:** गिरफ्तारियों के लिए सदस्य देशों पर निर्भर; ICC के गिरफ्तारी वारंटों को अक्सर देश अनदेखा कर देते हैं (जैसे सूडान के राष्ट्रपति का मामला)।
- **दोषसिद्धियों में कमी:** संभावित हज़ारों मामलों के बावजूद अब तक 60 से भी कम अभियोग लगाए गए हैं।
- **शक्ति की राजनीति:** UNSC के वीटो रेफरल को अवरुद्ध करते हैं (जैसे सीरिया का मामला रूस और चीन द्वारा रोका गया)।
- **चयनात्मक अभियोजन:** सबसे गंभीर अपराधियों की बजाय केवल व्यावहारिक मामलों पर ध्यान केंद्रित करता है (जैसे केन्या का मामला)।
- **अफ्रीका के प्रति पक्षपात का आरोप:** 54 में से 47 अभियुक्त अफ्रीकी हैं, जिससे उपनिवेशवाद के आरोपों को बल मिलता है।

© Vision IAS

भारत और अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय

भारत ने **अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC) की रोम संविधि ('कानून') पर न तो हस्ताक्षर किए हैं और न ही उसका अनुसमर्थन** किया है।

कारण:

- **सुरक्षा परिषद की भूमिका पर आपत्तियां:** भारत ने रोम संविधि में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के संदर्भ और स्थगन के अधिकार को अस्वीकार कर दिया।
- **परमाणु हथियार:** भारत परमाणु हथियारों के इस्तेमाल को युद्ध अपराधों की सूची में शामिल करने का समर्थन करता रहा है।
- **क्षेत्राधिकार संबंधी मुद्दे:**
  - भारत का मानना था कि इसके लिए **क्षेत्रीय और संरक्षक राज्यों की सहमति** ली जानी चाहिए।
  - भारत ने **आंतरिक संघर्षों पर ICC** के अधिकार-क्षेत्र का विरोध किया।
- **आतंकवाद:** भारत का मानना था कि आतंकवाद को अपराधों की सूची में शामिल किया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

संयुक्त राष्ट्र महासचिव कोफी अन्नान ने कहा था, कि "एक अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय की संभावना **सार्वभौमिक न्याय के वादे में निहित** है। केवल तभी **दूरस्थ युद्धों और संघर्षों के निर्दोष व्यक्ति ये** जान पाएंगे कि वे भी **न्याय की छाया में चैन की नींद सो सकते हैं।"**

5.5. विश्व स्वास्थ्य संगठन (World Health Organization: WHO)

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)

WHO के बारे में

- **यू.एन. एजेंसी:** संयुक्त राष्ट्र की एक विशेष स्वास्थ्य एजेंसी है।
- **उत्पत्ति: 1946** में **न्यूयॉर्क** में आयोजित **अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य सम्मेलन** के दौरान WHO के संविधान को अपनाया गया। बाद में यह 1948 में लागू हुआ।
- **प्रमुख कार्य:** WHO **स्वास्थ्य आपात स्थितियों के प्रति वैश्विक प्रतिक्रिया का समन्वय करता है,** लोगों के कल्याण को बढ़ावा देता है, बीमारियों की रोकथाम करता है एवं स्वास्थ्य देखभाल से संबंधित सेवाओं का विस्तार करता है।

WHO का महत्त्व

- अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य कानूनों को **विनियमित** करना।
- **सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC): उदाहरण के लिए-** WHO की ग्लोबल ड्रग फैसिलिटी।
- **स्वास्थ्य आपात स्थितियों से निपटना:** यह **पब्लिक हेल्थ इमरजेंसी ऑफ इंटरनेशनल कंसर्न (PHEIC)** घोषित करता है।
- **रोगों का उन्मूलन:** WHO ने **चेचक के उन्मूलन में अहम भूमिका निभाई है एवं पोलियो के उन्मूलन** के लिए वैश्विक प्रयासों का नेतृत्व किया है।

WHO की वैश्विक पहलें

- **आपातकालीन प्रतिक्रिया:** त्वरित व जटिल आपात स्थिति में आवश्यक प्रतिक्रिया देने के लिए एक आंतरिक मानकीकृत प्रणाली का उपयोग करता है।
- **स्वास्थ्य कार्य योजनाएं:** इसके तहत प्रत्येक नवजात शिशु व देशज लोगों का स्वास्थ्य एवं पोषण; सर्वाइकल कैंसर उन्मूलन, मेनिनजाइटिस व टीबी को खत्म करना; पोलियो उन्मूलन (2017-2026) पहल आदि शामिल हैं।
- **कल्याण एवं बेहतर स्वास्थ्य को बढ़ावा** हेल्दी एजिंग दशक; MPOWER; आत्महत्या की रोकथाम के लिए 'लाइव लाइफ' पहल (2021-2030) आदि।
- **अनुसंधान और नवाचार:** पारंपरिक चिकित्सा के लिए वैश्विक केंद्र; वैश्विक जीनोमिक निगरानी पहल; वैक्सीन सुरक्षा पहल; mRNA वैक्सीन प्रौद्योगिकी; आदि।

WHO की कमियां

- बड़े पैमाने वाले रोगों के प्रति **अपर्याप्त समन्वित प्रतिक्रिया।**
- **राजनीतिक दबाव:** विशेष रूप से **चीन और अमेरिका** का अनुचित राजनीतिक दबाव।
- **जटिल संगठनात्मक संरचना:** एक से अधिक विभागों के कार्यों में ओवरलैपिंग।
- **वित्तीय स्वतंत्रता और प्रभावी कानूनी शक्तियों का अभाव।**
- **हितों का टकराव:** WHO पर यह आरोप लगा है कि उसके निर्णय फार्मास्यूटिकल क्षेत्रक के हितों से प्रभावित रहे हैं।

WHO द्वारा सुधार

- **ट्रांसफॉर्मेशन एजेंडा (2017):** इसका उद्देश्य स्वास्थ्य के क्षेत्र में सुधार हेतु नेतृत्व का समर्थन करना है।
- **सतत वित्त-पोषण:** WHO ने 2024 में अपना **पहला निवेश दौर शुरू** किया।
- **WHO रिजल्ट्स फ्रेमवर्क:** यह आउटपुट स्कोरकार्ड का उपयोग करके राष्ट्रों के स्तर पर प्रगति को ट्रैक करता है।
- **आपूर्ति श्रृंखला और लॉजिस्टिक्स** तथा गूगल एवं फीफा जैसे संगठनों के साथ **साझेदारी।**
- **दुर्घटना प्रबंधन प्रणाली:** यह आपात स्थितियों के दौरान चिकित्सा टीमों की शीघ्र तैनाती सुनिश्चित करती है।

निष्कर्ष

WHO भारत के लिए एक महत्वपूर्ण भागीदार संगठन है, जो सार्वभौमिक स्वास्थ्य कवरेज (UHC) (आयुष्मान भारत), रोग नियंत्रण (टीबी व पोलियो) और महामारी संबंधी प्रतिक्रिया के लिए तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यह स्वास्थ्य समानता को बढ़ावा देता है, हालांकि इसे निरंतर सुधारों की आवश्यकता है।

5.6. राष्ट्रमंडल (Commonwealth)

राष्ट्रमंडल

- **राष्ट्रमंडल:** यह अधिकांशतः **ब्रिटिश उपनिवेश के अधीन रहे राष्ट्रों का एक स्वैच्छिक संघ** है। ये देश लोकतंत्र, व्यापार, जलवायु परिवर्तन आदि मुद्दों पर आपस में सहयोग करते हैं।

ब्रिटिश राष्ट्रमंडल की शुरुआत 1926 में तब हुई, जब ब्रिटेन और उसके डोमिनियन, ब्रिटिश शासन के बिना, ब्रिटिश क्राउन के अधीन समान सदस्यों के रूप में जुड़ने हेतु सहमत हुए।

1947 में स्वतंत्रता के बाद भारत एक गणतांत्रिक राष्ट्र बन गया, लेकिन वह राष्ट्रमंडल का सदस्य भी बने रहना चाहता था।

राष्ट्रमंडल प्रतिनिधित्व करता है: 14.5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था; विश्व जनसंख्या का 32%; तथा 29 वर्ष या उससे कम आयु की 60% से अधिक जनसंख्या का।

राष्ट्रमंडल के साथ भारत के संबंध

भारत **राष्ट्रमंडल का सबसे बड़ा सदस्य देश** है। राष्ट्रमंडल की कुल आबादी में से लगभग 60 प्रतिशत आबादी भारत में निवास करती है। भारत राष्ट्रमंडल में **चौथा सबसे बड़ा योगदानकर्ता** देश है।

भारत ने **नई दिल्ली में 1983 में राष्ट्रमंडल शिखर सम्मेलन (CHOGM) और 2010** में **राष्ट्रमंडल खेलों** की मेजबानी की थी।

2018 में **इंडिया-यू.एन. डेवलपमेंट फंड** के अधीन भारत ने **50 मिलियन अमेरिकी डॉलर कॉमनवेल्थ सब-विंडो** की स्थापना SDGs और जलवायु कार्रवाई से संबंधित परियोजनाओं के लिए राष्ट्रमंडल सदस्यों को अनुदान-सहायता प्रदान करने के लिए की है।

क्या राष्ट्रमंडल वर्तमान समय में प्रासंगिक है?

पक्ष में तर्क

- **चुनावों पर नज़र रखने के लिए मिशन:** 1967 से अब तक राष्ट्रमंडल ने **लगभग 40 देशों** में चुनावों की निगरानी को बढ़ावा देने हेतु **140 चुनावी मिशन किए,** ताकि लोकतंत्र के प्रति प्रतिबद्धता को बनाए रखा जा सके।
- **सदस्यों की बढ़ती संख्या:** टोगो और गैबॉन (ये दोनों ब्रिटिश उपनिवेश नहीं थे) जैसे नए सदस्यों के जुड़ने से यह कहा जा सकता है कि राष्ट्रमंडल सहयोग और संवाद का एक बेहतर मंच है।
- **व्यापार लाभ:** राष्ट्रमंडल देशों में व्यापारिक भागीदारों के लिए द्विपक्षीय लागत गैर-सदस्य देशों की तुलना में **औसतन 21 प्रतिशत कम** है।
- **SDGs का समर्थन:** राष्ट्रमंडल **सतत विकास लक्ष्यों** को हासिल करने, विशेष रूप से **शांति और विकास पर ध्यान केंद्रित करने वाले लक्ष्य 16** के प्रति प्रतिबद्ध है।

विपक्ष में तर्क

- **उपनिवेशवाद को वैधता प्रदान करना:** आलोचकों का कहना है कि इसका **अस्तित्व ही उपनिवेशवाद को वैधता प्रदान** करता है और सदस्य देशों को संयुक्त राष्ट्र, आसियान, आदि संगठनों से जुड़कर अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर ध्यान देना चाहिए।
- **संकट की स्थिति में सीमित कार्रवाई:** कोरोना महामारी के दौरान, इसके कमजोर समन्वय ने वैश्विक संकटों में इसकी प्रभावशीलता पर संदेह उत्पन्न कर दिया है।
- **मानवाधिकार संबंधी चिंताएं:** CHOGM की मेजबानी के लिए रवांडा के चयन ने उसके मानवाधिकार रिकॉर्ड को लेकर विवाद खड़ा कर दिया।
- **फंडिंग संबंधी रुकावट/ बाधाएं: राष्ट्रमंडल अपने सचिवालयी** काम-काज के लिए **सीमित फंडिंग** का सामना करता है। **यूनाइटेड किंगडम** मुख्य रूप से **द्विपक्षीय आधार** पर इसे फंड उपलब्ध कराता है।

निष्कर्ष

जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने तथा व्यापार और लोगों के बीच संपर्क बढ़ाने के लिए राष्ट्रमंडल नेटवर्क का लाभ उठाना चाहिए। यह दीर्घकालिक विकास एवं समृद्धि के लिए आवश्यक है।

5.7. मुख्य शब्दावलियां (Keywords)

अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून (IHL)	विभेद का सिद्धांत	आनुपातिकता का सिद्धांत	पूर्वोपाय का सिद्धांत	औपचारिक मानवतावादी प्रतिबद्धता
ज्ञानमीमांसा संस्थान को बढ़ावा देना	सर्वाधिक तरजीही राष्ट्र (MFN) सिद्धांत	बहुपक्षीय संरचना	मानवता के खिलाफ अपराध	पीड़ित-केंद्रित न्याय
युद्ध के दौरान आचरण संबंधी कानून सिद्धांत	कस्टोडियल स्टेट्स	सार्वभौमिक न्याय का वादा		

उत्तर लेखन प्रारूप

Q. "UNSC में सुधार केवल प्रतिनिधित्व से संबंधित नहीं है, बल्कि वैश्विक शासन व्यवस्था के लोकतंत्रीकरण की एक अनिवार्य आवश्यकता है।" UNSC में सुधारों की आवश्यकता और इसमें आने वाली राजनीतिक एवं संरचनात्मक बाधाओं की समीक्षा कीजिए।

परिचय	मुख्य भाग: 1	मुख्य भाग: 2	आगे की राह	निष्कर्ष
UNSC (संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद) के बारे में संक्षिप्त परिचय दीजिए।	UNSC में सुधारों की आवश्यकता को स्पष्ट कीजिए।	UNSC सुधारों में आने वाली प्रमुख चुनौतियों का उल्लेख कीजिए।	UNSC सुधारों के लिए उठाये जाने वाले आवश्यक कदम सुझाइए।	नई वैश्विक व्यवस्था को स्थापित करने के लिए समावेशी संयुक्त राष्ट्र संगठनों के महत्व पर प्रकाश डालिए।

6. अंतर्राष्ट्रीय संबंध: विगत वर्षों के प्रश्न 2013-2024 (सिलेबस के अनुसार) {International Relations Previous Year Questions 2013-2024 (Syllabus-Wise)}

भारत और उसके पड़ोसी देश- संबंध (India and its neighborhood- relations)

- वैश्विक व्यापार और ऊर्जा प्रवाह पर ध्यान केंद्रित करते हुए भारत के लिये मालदीव के भू-राजनीतिक और भू-रणनीतिक महत्त्व पर चर्चा कीजिए। आगे यह भी चर्चा करें कि यह संबंध अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के बीच भारत की समुद्री सुरक्षा और क्षेत्रीय स्थिरता को कैसे प्रभावित करता है ?

  (Discuss the geopolitical and geostrategic importance of Maldives for India with a focus on global trade and/energy flows. Further also discuss how this relationship affects India's maritime security and regional stability amidst international competition?) (2024)
- 'भारत श्रीलंका का बरसों पुराना मित्र है।' पूर्ववर्ती कथन के आलोक में श्रीलंका के वर्तमान संकट में भारत की भूमिका की विवेचना कीजिए।

  (Indian is an old-age friend of Sri Lanka. Discuss India's role in the recent crisis in Sri Lanka in the light of the precedent statement.) (2022)
- आपके विचार में क्या बिम्सटेक (BIMSTEC) सार्क (SAARC) की तरह एक समानांतर संगठन है ? इन दोनों के बीच क्या समानताएँ और असमानताएँ हैं? इस नए संगठन के बनाए जाने से भारतीय विदेश नीति के उद्देश्य कैसे प्राप्त हुए हैं?

  (Do you think BIMSTEC is a parallel organization like SAARC? What are the similarities and dissimilarities between the two? How Indian foreign policy objectives realized by forming a new organization?) (2022)
- मध्य एशिया, जो भारत के लिए एक हित क्षेत्र है, में अनेक बाह्य शक्तियों ने अपने-आप को संस्थापित कर लिया है। इस संदर्भ में, भारत द्वारा अश्गाबात करार, 2018 में शामिल होने के निहितार्थों पर चर्चा कीजिए।

  (A number of outside powers have entrenched themselves in Central Asia, which is a zone of interest to India. Discuss the implications, in this context, of India's joining the Ashgabat Agreement, 2018) (2018)
- "चीन अपने आर्थिक संबंधों एवं सकारात्मक व्यापार अधिशेष को, एशिया में संभाव्य सैनिक शक्ति हैसियत को विकसित करने के लिए, उपकरणों के रूप में इस्तेमाल कर रहा है।" इस कथन के प्रकाश में, उसके पड़ोसी के रूप में भारत पर इसके प्रभाव पर चर्चा कीजिए।

  ('China is using its economic relations and positive trade surplus as tools to develop potential military power status in Asia'. In the light of this statement, discuss its impact on India as her neighbour.) (2017)
- भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रश्न भारत की आर्थिक प्रगति का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग है। पश्चिम एशियाई देशों के साथ भारत के ऊर्जा नीति सहयोग का विश्लेषण कीजिए।

  (The question of India's Energy Security Constitutes the most important part of India's economic progress. Analyse India's energy policy cooperation with West Asian countries.) (2017)
- शीत युद्धोत्तर अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य के संदर्भ में, भारत की पूर्वोन्मुखी नीति के आर्थिक और सामरिक आयामों का मूल्यांकन कीजिए।

  (Evaluate the economic and strategic dimensions of India's Look East Policy in the context of the post Cold War international scenario.) (2016)
- "भारत में बढ़ते हुए सीमापारीय आतंकी हमले और अनेक सदस्य राज्यों के आंतरिक मामलों में पाकिस्तान द्वारा बढ़ता हुआ हस्तक्षेप सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन) के भविष्य के लिए सहायक नहीं हैं।" उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।

  ("Increasing cross-border terrorist attacks in India and growing interference in the internal affairs of several member states by Pakistan are not conducive for the future of SAARC (South Asian Association for Regional Cooperation)." Explain with suitable examples.) (2016)

- परियोजना 'मौसम' को भारत सरकार की अपने पड़ोसियों के साथ संबंधों को सुदृढ़ करने की एक अद्वितीय विदेश नीति पहल माना जाता है। क्या इस परियोजना का एक रणनीतिक आयाम है? चर्चा कीजिए।

  (Project 'Mausam' is considered a unique foreign policy initiative of Indian Government to improve relationship with its neighbours. Does the project have a strategic dimension? Discuss.) (2015)
- आतंकवादी गतिविधियों और परस्पर अविश्वास ने भारत-पाकिस्तान संबंधों को धूमिल बना दिया है। खेलों और सांस्कृतिक आदान-प्रदानों जैसी मृदु शक्ति किस सीमा तक दोनों देशों के बीच सद्भाव उत्पन्न करने में सहायक हो सकती है? उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।

  (Terrorist activities and mutual distrust have clouded India – Pakistan relations. To what extent the use of soft power like sports and cultural exchanges could help generate goodwill between the two countries? Discuss with suitable examples.) (2015)
- दक्षिण चीन सागर के मामले 'में, समुद्री भूभागीय विवाद और बढ़ता हुआ तनाव समस्त क्षेत्र में नौपरिवहन की और ऊपरी उड़ान की स्वतंत्रता को सुनिश्चित करने के लिए समुद्री सुरक्षा की आवश्यकता की अभिपुष्टि करते हैं। इस संदर्भ में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा कीजिये।

  (With respect to the South China sea, maritime territorial disputes and rising tension affirm the need for safeguarding maritime security to ensure freedom of navigation and over flight throughout the region. In this context, discuss the bilateral issues between India and China.) (2014)
- भारत श्रीलंका संबंधों के संदर्भ में, विवेचना कीजिए कि किस प्रकार आंतरिक (देशीय) कारक विदेश नीति को प्रभावित करते हैं।

  (In respect of India-Sri Lanka relations, discuss how domestic factors influence foreign policy.) (2013)
- गुजराल सिद्धांत से क्या अभिप्राय है? क्या आज इसकी कोई प्रासंगिकता है? विवेचना कीजिए।

  (What is meant by Gujral doctrine? Does it have any relevance today? Discuss.) (2013)

द्विपक्षीय, क्षेत्रीय और वैश्विक समूह और भारत से जुड़े और/या भारत के हितों को प्रभावित करने वाले समझौते (Bilateral, regional and global groupings and agreements involving India and/ofecting India's interests)

- मध्य एशियाई गणराज्यों (C.A.R.s) के साथ भारत के विकसित होते राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक संबंधों का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए, तथा क्षेत्रीय और वैश्विक भू-राजनीति में उनके बढ़ते महत्त्व पर प्रकाश डालिये।

  (Critically analyse India's evolving diplomatic, economic and strategic relations with the Central Asian Republics (CARs) highlighting their increasing significance in regional and global geopolitics.) (2024)
- 'संघर्ष का विषाणु एस.सी.ओ. के कामकाज को प्रभावित कर रहा है' उपरोक्त कथन के आलोक में समस्याओं को कम करने में भारत की भूमिका बताइये।

  ("Virus of Conflict is affecting the functioning of the SCO'In the light of the above statement point out the role of India in mitigating the problems.) (2023)
- I2U2 (भारत, इजरायल, संयुक्त अरब अमीरात और संयुक्त राज्य अमेरिका) समूहन वैश्विक राजनीति में भारत की स्थिति को किस प्रकार रूपांतरित करेगा?

  {How will I2U2 (India, Israel, UAE and USA) grouping transform India's position in global politics?} (2022)
- "यदि विगत कुछ दशक एशिया के विकास की कहानी के रहे, तो परवर्ती कुछ दशक अफ्रीका के हो सकते हैं।" इस कथन के आलोक में, हाल के वर्षों में अफ्रीका में भारत के प्रभाव का परीक्षण कीजिए।

  ("If the last few decades were of Asia's growth story, the next few are expected to be of Africa's." In the light of this statement, examine India's influence in Africa in recent years.) (2021)

- 'भारत और जापान के लिए लिए समय आ गया है कि एक ऐसे मजबूत समसामयिक संबंध का निर्माण करें, जिसका वैश्विक एवं रणनीतिक साझेदारी को आवेष्टित करते हुए एशिया एवं सम्पूर्ण विश्व के लिए बड़ा महत्व होगा।' टिप्पणी कीजिए।
  (The time has come for India and Japan to build a strong contemporary relationship, one involving global and strategic partnership that will have a great significance for Asia and the world as a whole.' Comment.) (2019)
- 'भारत और यूनाइटेड स्टेट्स के बीच संबंधों में खटास के प्रवेश का कारण वाशिंगटन का अपनी वैश्विक रणनीति में अभी तक भी भारत के लिए किसी ऐसे स्थान की खोज करने में विफलता है, जो भारत के आत्म-समादर और महत्वाकांक्षा को संतुष्ट कर सके।' उपयुक्त उदाहरणों के साथ स्पष्ट कीजिए।
  ("What introduces friction into the ties between India and the United States is that Washington is still unable to find for India a position in its global strategy, which would satisfy India's National self- esteem and ambitions" Explain with suitable examples.) (2019)
- भारत-रूस रक्षा समझौतों की तुलना में भारत-अमेरिका रक्षा समझौतों की क्या महत्ता है ? हिन्द-प्रशान्त महासागरीय क्षेत्र में स्थायित्व के संदर्भ में विवेचना कीजिए।
  (What is the significance of Indo-US defence deals over Indo-Russian defence deals? Discuss with reference to stability in the Indo-Pacific region.) (2020)
- "भारत के इजरायल के साथ संबंधों ने हाल में एक ऐसी गहराई एवं विविधता प्राप्त कर ली है, जिसकी पुनर्वापसी नहीं की जा सकती है।" विवेचना कीजिए।
  ("India's relations with Israel have, of late, acquired a depth and diversity, which cannot be rolled back." Discuss.) (2018)
- इस समय जारी अमेरिका ईरान नाभिकीय समझौता विवाद भारत के राष्ट्रीय हितों को किस प्रकार प्रभावित करेगा? भारत को इस स्थिति के प्रति क्या रवैया अपनाना चाहिए?
  (In what ways would the ongoing U.S-Iran Nuclear Pact Controversy affect the national interest of India? How should India respond to this situation?) (2018)
- अफ्रीका में भारत की बढ़ती हुई रुचि के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष है। समालोचनापूर्वक परीक्षण कीजिए।
  (Increasing interest of India in Africa has its pro and cons. Critically examine.) (2015)
- हाल के कुछ वर्षों में भारत व जापान के मध्य आर्थिक संबंधों में विकास हुआ है पर अब भी वह उनकी संभाविता से बहुत कम है। उन नीतिगत दबावों (व्यवरोधों) को स्पष्ट कीजिए जिनके कारण यह विकास अवरुद्ध है।
  (Economic ties between India and Japan while growing in the recent years are still far below their potential. Elucidate the policy constraints which are inhibiting this growth.) (2013)

भारत के हितों पर विकसित और विकासशील देशों की नीतियों और राजनीति का प्रभाव (Effect of policies and politics of developed and developing countries on India's interests)

- 'पश्चिम भारत को, चीन की आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता कम करने के लिए एक विकल्प के रूप में और चीन के राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व का मुकाबला करने के लिये एक रणनीतिक सहयोगी के रूप में बढ़ावा दे रहा है।' उदाहरणों के साथ इस कथन की व्याख्या कीजिए। (उत्तर 150 शब्दों में लिखिए)
  ('The West is fostering India as an alternative to reduce dependence on China's supply chain and as a strategically to counter China's political and economic dominance." Explain this statement with examples.) (2024)
- 'नाटो का विस्तार एवं सुदृढीकरण, और एक मजबूत अमेरिका-यूरोप रणनीतिक साझेदारी भारत के लिये अच्छा काम करती है।' इस कथन के बारे में आपकी क्या राय है? अपने उत्तर के समर्थन में कारण और उदाहरण दीजिये।

('The expansion and strengthening of NATO and a stronger US-Europe strategic partnership works well for India.' What is your opinion about this statement? Give reasons and examples to support your answer.) (2023)

- भारत-प्रशांत महासागर क्षेत्र में चीन की महत्वाकांक्षाओं का मुकाबला करना नई त्रि-राष्ट्र साझेदारी AUKUS का उद्देश्य है। क्या यह इस क्षेत्र में मौजूदा साझेदारी का स्थान लेने जा रहा है? वर्तमान परिदृश्य में, AUKUS की शक्ति और प्रभाव की विवेचना कीजिए।
  (The newly tri-nation partnership AUKUS is aimed at countering China's ambitions in the Indo-Pacific region. Is it going to supersede the existing partnerships in the region? Discuss the strength and impact of AUKUS in the present scenario.) (2021)
- "संयुक्त राज्य अमेरिका, चीन के रूप में एक ऐसे अस्तित्व के खतरे का सामना कर रहा है जो तत्कालीन सोवियत संघ की तुलना में कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण है।" विवेचना कीजिए।
  ("The USA is facing an existential threat in the form of a China, that is much more challenging than the erstwhile Soviet Union." Explain.) (2021)
- सूचना प्रौद्योगिकी समझौतों (ITA) का उद्देश्य हस्ताक्षरकर्ताओं द्वारा सूचना प्रौद्योगिकी उत्पादों पर सभी करों और प्रशुल्कों को कम करके शून्य पर लाना है। ऐसे समझौतों का भारत के हितों पर क्या प्रभाव होगा?
  (The aim of Information Technology Agreements (ITAs) is to lower all taxes and tariffs on information technology products by signatories to zero. What impact would such agreements have on India's interests?) (2014)
- वर्ष 2014 में अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक बल (ISAF) की अफगानिस्तान से प्रस्तावित वापसी क्षेत्र के देशों के लिए बड़े खतरों (सुरक्षा उलझनों) भरा है। इस तथ्य के आलोक में परीक्षण कीजिए कि भारत के सामने भरपूर चुनौतियां हैं तथा उसे अपने सामरिक महत्त्व के हितों की रक्षा करने की आवश्यकता है।
  (The proposed withdrawal of International Security Assistance Force (ISAF) from Afghanistan in 2014 is fraught with major security implications for the countries of the region. Examine in light of the fact that India is faced with a plethora of challenges and needs to safeguard its own strategic interests.) (2013)
- 'मोतियों के हार' (द स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स) से आप क्या समझते हैं? यह भारत को किस प्रकार प्रभावित करता है ? इसका सामना करने के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदमों की संक्षिप्त रूपरेखा दीजिए।
  (What do you understand by 'The String of Pearls'? How does it impact India? Briefly outline the steps taken by India to counter this.) (2013)
- बांग्लादेश के ढाका में शाहबाग स्क्वायर में हुए विरोध प्रदर्शनों ने समाज में राष्ट्रवादी व इस्लामी शक्तियों के बीच मौलिक मतभेद उजागर किया है। भारत के लिए इसका क्या महत्त्व है?
  (The protests in Shahbag Square in Dhaka in Bangladesh reveal a fundamental split in society between the nationalists and Islamic forces. What is its significance for India?) (2013)
- मालदीव में पिछले दो वर्षों में हुई राजनैतिक घटनाओं की विवेचना कीजिए। यह बताइए कि क्या ये भारत के लिए चिंता का विषय हैं।
  (Discuss the political developments in Maldives in the last two years. Should they be of any cause of concern to India?) (2013)

भारतीय प्रवासी (Indian Diaspora)

- भारतीय प्रवासियों ने पश्चिम में नई ऊंचाइयों को छुआ है। भारत के लिये इसके आर्थिक और राजनीतिक लाभों का वर्णन करें।
  (Indian diaspora has scaled new heights in the West. Describe its economic and political benefits for India.) (2023)
- 'अमेरिका एवं यूरोपीय देशों की राजनीति और अर्थव्यवस्था में भारतीय प्रवासियों को एक निर्णायक भूमिका निभानी है'। उदाहरणों सहित टिप्पणी कीजिए।
  ('Indian diaspora has a decisive role to play in the politics and economy of America and European Countries'. Comment with examples.) (2020)

- दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों की अर्थव्यवस्था एवं समाज में भारतीय प्रवासियों को एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस संदर्भ में, दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय प्रवासियों की भूमिका का मूल्यनिरूपण कीजिए।

  (Indian Diaspora has an important role to play in South East Asian countries economy and society. Appraise the role of Indian Diaspora in South-East Asia in this context.) (2017)

महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्थान, एजेंसियां और मंच- उनकी संरचना और शासनादेश (Important International institutions, agencies and fora- their structure, mandate)

- 'आतंकवाद वैश्विक शांति और सुरक्षा के लिये एक बड़ा खतरा बन गया है।' अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर इस ख़तरे को सम्बोधित करने और कम करने में संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आतंकवाद निरोधी समिति (सी.टी.सी.) और इससे संबंधित निकायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कीजिए।

  ('Terrorism has become a significant threat to global peace and security.' Evaluate the effectiveness of the United Nations Security Council's Counter Terrorism Committee (CTC and its associated bodies in addressing and mitigating this threat at the international level.) (2024)

- 'समुद्र ब्रह्मांड का एक महत्वपूर्ण घटक है' उपरोक्त कथन के आलोक में पर्यावरण रक्षण और समुद्री संरक्षा एवं सुरक्षा को बढ़ाने में आई.एम.ओ. (अंतर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन) की भूमिका पर चर्चा करें।

  ('Sea is an important Component of the Cosmos' Discuss in the light of the above statement the role of the IMO (International Maritime Organisation) in protecting environment and enhancing maritime safety and security.) (2023)

- 'स्वच्छ ऊर्जा आज की ज़रूरत है।' भू-राजनीति के सन्दर्भ में, विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय मंचों में जलवायु परिवर्तन की दिशा में भारत की बदलती नीति का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

  (Clean energy is the order of the day. Describe briefly India's changing policy towards climate change in various international fora in the context of geopolitics.) (2022)

- एस० सी० ओ० के लक्ष्यों और उद्देश्यों का विश्लेषणात्मक परीक्षण कीजिए। भारत के लिए इसका क्या महत्त्व है?

  (Critically examine the aims and objectives of SCO. What importance does it hold for India?) (2021)

- कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने में विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लू.एच.ओ.) की भूमिका का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

  (Critically examine the role of WHO in providing global health security during the COVID-19 pandemic.) (2020)

- 'आवश्यकता से कम नकदी, अत्यधिक राजनीति ने यूनेस्को को जीवन-रक्षण की स्थिति में पहुँचा दिया है।' अमेरिका द्वारा सदस्यता परित्याग करने और सांस्कृतिक संस्था पर 'इजरायल विरोधी पूर्वाग्रह' होने का दोषारोपण करने के प्रकाश में इस कथन की विवेचना कीजिए।

  ('Too little cash, too much politics, leaves UNESCO fighting for life.' Discuss the statement in the light of US' withdrawal and its accusation of the cultural body as being 'anti-Israel bias'.) (2020)

- यदि 'व्यापार युद्ध' के वर्तमान परिदृश्य में विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू० टी० ओ०) को जिन्दा बने रहना है, तो उसके सुधार के कौन-कौन से प्रमुख क्षेत्र हैं, विशेष रूप से भारत के हित को ध्यान में रखते हुए?

  (What are the key areas of reform if the WTO has to survive in the present context of 'Trade War', especially keeping in mind the interest of India?) (2018)

- संयुक्त राष्ट्र आर्थिक व सामाजिक परिषद् (इकोसॉक) के प्रमुख प्रकार्य क्या हैं? इसके साथ संलग्न विभिन्न प्रकार्यात्मक आयोगों को स्पष्ट कीजिए।

  (What are the main functions of the United Nations Economic and Social Council (ECOSOC)? Explain different functional commissions attached to it.) (2017)

- यूनेस्को (संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन) के मैक्ब्राइड आयोग के लक्ष्य और उद्देश्य क्या-क्या हैं? इनमें भारत की क्या स्थिति है?

  (What are the aims and objectives of the McBride Commission of the UNESCO? What is India's position on these?) (2016)

- "विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) के अधिक व्यापक लक्ष्य और उद्देश्य वैश्वीकरण के युग में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार का प्रबंधन और प्रोन्नति करना है। परन्तु (संधि) वार्ताओं की दोहा परिधि मृतोन्मुखी प्रतीत होती है, जिसका कारण विकसित और विकासशील देशों के बीच मतभेद है।" भारतीय परिप्रेक्ष्य में, इस पर चर्चा कीजिए।

  ("The broader aims and objectives of WTO are to manage and promote international trade in the era of globalization. But the Doha round of negotiations seem doomed due to differences between the developed and the developing countries." Discuss in the Indian perspective.) (2016)

- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में स्थायी सीट की खोज में भारत के समक्ष आने वाली बाधाओं पर चर्चा कीजिए।

  (Discuss the impediments India is facing in its pursuit of a permanent seat in UN Security Council.) (2015)

- भारत ने हाल ही में "नव विकास बैंक" (NDB) और साथ ही "एशियाई आधारिक संरचना निवेश बैंक" (AIIB) के संस्थापक सदस्य बनने के लिये हस्ताक्षर किये हैं। इन दो बैंकों की भूमिकाएं एक दूसरे से किस प्रकार भिन्न होंगी ? भारत के लिये इन दो बैंकों के रणनीतिक महत्व पर चर्चा कीजिये।

  (India has recently signed to become founding member of New Development Bank (NDB) and also the Asian Infrastructure Investment Bank (AIIB). How will the role of the two Banks be different? Discuss the strategic significance of these two Banks for India.) (2014)

- विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.) एक महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय संस्था है, जहाँ लिए गए निर्णय देशों को गहराई से प्रभावित करते हैं। डब्ल्यू.टी.ओ. का क्या अधिदेश (मैंडेट) है और उसके निर्णय किस प्रकार बंधनकारी है? खाद्य सुरक्षा पर विचार-विमर्श के पिछले चक्र पर भारत के दृढ़-मत का समालोचनापूर्वक विश्लेषण कीजिये।

  (WTO is an important international institution where decisions taken affect countries in a profound manner. What is the mandate of WTO and how binding are their decisions? Critically analyse India's stand on the latest round of talks on Food security.) (2014)

- अंतर्राष्ट्रीय निधीयन संस्थाओं में से कुछ की आर्थिक भागीदारी के लिए विशेष शर्तें होती हैं, जो शर्त लगाती हैं कि उपस्कर के स्रोतन के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सहायता का एक बड़ा भाग, अग्रणी देशों से उपस्कर स्रोतन के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। ऐसी शर्तों के गुणों-अवगुणों पर चर्चा कीजिए और क्या भारतीय संदर्भ में ऐसी शर्तों को स्वीकार न करने की एक मज़बूत स्थिति विद्यमान है।

  (Some of the International funding agencies have special terms for economic participation stipulating a substantial component of the aid to be used for sourcing equipment from the leading countries. Discuss on merits of such terms and if, there exists a strong case not to accept such conditions in the Indian context.) (2014)

- विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष, संयुक्त रूप से ब्रेटन वुड्स नाम से जानी जाने वाली संस्थाएँ, विश्व की आर्थिक व वित्तीय व्यवस्था की संरचना का संभरण करने वाले दो अंतः सरकारी स्तम्भ हैं। पृष्ठीय रूप में, विश्व बैंक व अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष दोनों की अनेक समान विशेषताएं हैं, तथापि उनकी भूमिका, कार्य तथा अधिदेश स्पष्ट रूप से भिन्न हैं। व्याख्या कीजिए।

  (The World Bank and the IMF, collectively known as the Bretton Woods Institutions, are the two inter-governmental pillars supporting the structure of the world's economic and financial order. Superficially, the World Bank and the IMF exhibit many common characteristics, yet their role, functions and mandate are distinctly different. Elucidate.) (2013)

विविध (Miscellaneous)

- 'उभरती हुई वैश्विक व्यवस्था में, भारत द्वारा प्राप्त नव-भूमिका के कारण, उत्पीड़ित एवं उपेक्षित राष्ट्रों के मुखिया के रूप में दीर्घ काल से संपोषित भारत की पहचान लुप्त हो गई है।' विस्तार से समझाइये।

  ("The long-sustained image of India as a leader of the oppressed and marginalised Nations has disappeared on account of its new found role in the emerging global order" Elaborate.) (2019)

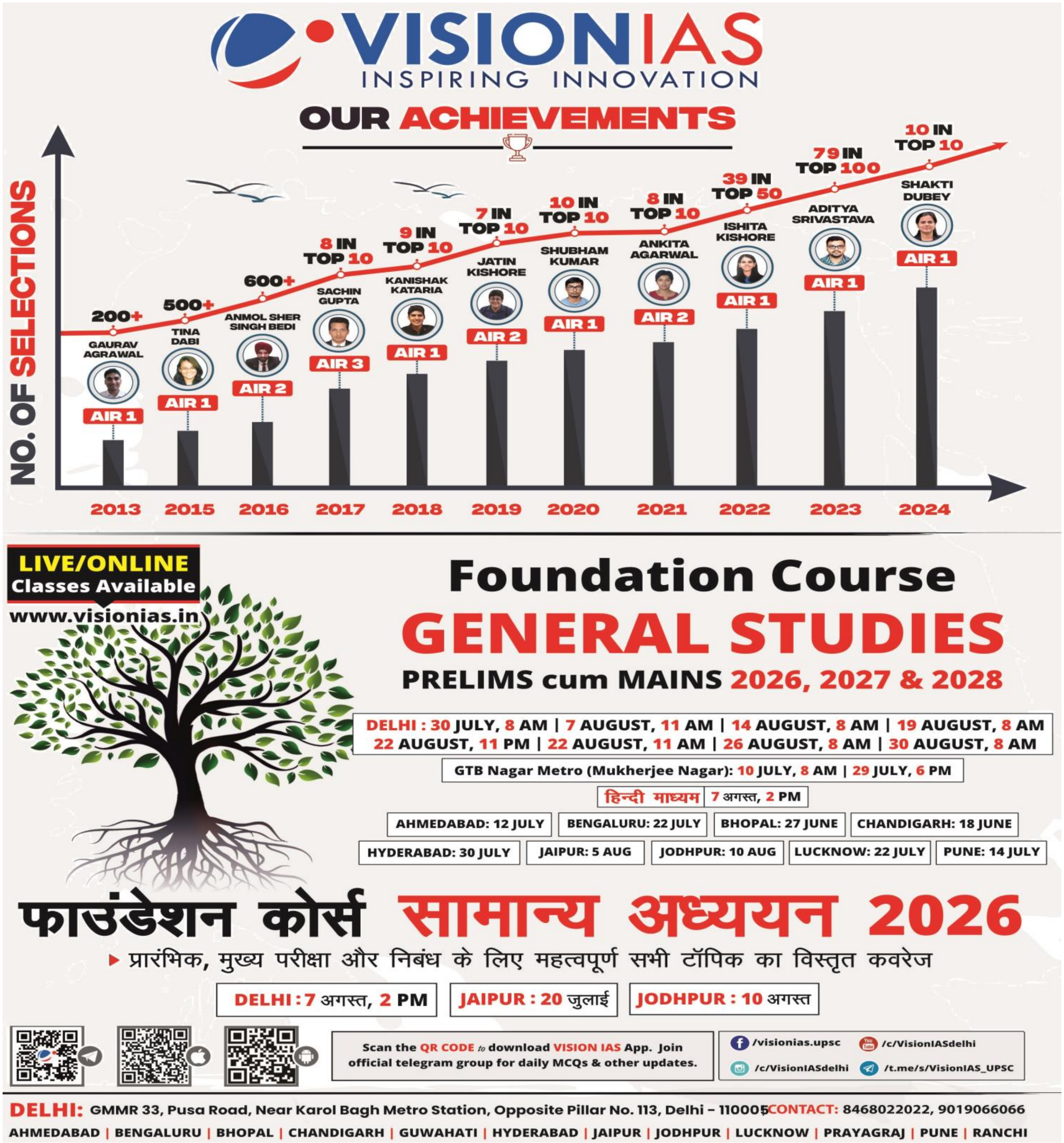

7. परिशिष्ट: मुख्य आंकड़े और तथ्य (Appendix: Key Facts and Data)

उभरती विश्व व्यवस्था	• **विश्व व्यवस्था:** शक्ति और अधिकार की ऐसी व्यवस्था जो वैश्विक स्तर पर कूटनीति और विश्व राजनीति के संचालन के लिए एक फ्रेमवर्क प्रदान करती है। • **नई विश्व व्यवस्था के कारक:** युद्धोत्तर बहुपक्षीय व्यवस्था का पतन; **'वैश्विक बहुसंकट'** और वैश्विक अस्थिरता; क्षेत्रीय और एजेंडा-विशेष भू-राजनीति का उदय; बहुध्रुवीयता की ओर रुख; रणनीतिक स्व-सहायता का उदय।

वैश्विक शांति निर्माता के रूप में भारत की भूमिका	• **अंतर्राष्ट्रीय शांति को बढ़ावा देने में भारत का योगदान: शांति स्थापना में भारत की सक्रिय भागीदारी** उदाहरण के लिए, भारत ने **2,53,000 सैनिकों को तैनात किया जो** अन्य किसी भी देश की तुलना में सबसे अधिक संख्या है; सांस्कृतिक कूटनीति ('वसुधैव कुटुम्बकम'), ITEC, अफ्रीकी संघ (AU) को G-20 में शामिल करना।
	• **शांति स्थापना के लिए आगे की राह**
	  ○ **"5-स" दृष्टिकोण (सम्मान, संवाद, सहयोग, शांति, समृद्धि):** भारत की स्वतंत्र और संवाद-आधारित विदेश नीति का प्रतीक है।
	  ○ **क्षमता निर्माण:** विदेश मंत्रालय (MEA) के भीतर शांति स्थापना समूहों का गठन करना चाहिए **(ओस्लो में नॉर्वे की शांति यूनिट के समान)**

भारत और ग्लोबल साउथ	• **ग्लोबल साउथ, शब्दावली** सामान्यतः तकनीकी और सामाजिक रूप से **अल्पविकसित देशों** को व्यक्त करती है। ये देश मुख्य रूप से **दक्षिणी गोलार्ध** में अवस्थित है। इनमें अधिकतर **अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका** के देश शामिल हैं। • **ग्लोबल साउथ के लिए भारत की पहलें:** सामाजिक प्रभाव कोष, ग्लोबल साउथ यंग डिप्लोमैट फोरम,अफ्रीकी संघ को G20 में शामिल करना, आरोग्य मैत्री का विज़न।
मिनीलैटरल समूहों का उदय	• मिनीलैटरल समूह एक प्रकार के **अनौपचारिक और लक्षित समूह** होते हैं। इनमें शामिल देशों की संख्या **कम (आमतौर पर 3 या 4)** होती है। ये देश समान हितों को साझा करते हैं तथा किसी **विशिष्ट खतरे, आकस्मिक चुनौती अथवा सुरक्षा संबंधी खतरे** को **एक निश्चित समय-सीमा** के भीतर संयुक्त रूप से निपटाने का प्रयास करते हैं। • **मिनीलैटरल समूहों से भारत को मिलने वाले लाभ: रणनीतिक स्वायत्तता और कई फोरम्स के साथ सहयोग (क्वाड); ग्लोबल साउथ के नेतृत्वकर्ता के रूप में भारत (IBSA); साझा हितों वाले देशों के साथ सह-साझेदारी (INSTC), आदि**

परमाणु शस्त्रागार (आयुध) का उदय	• **भारत के परमाणु शस्त्रागार (आयुध) में वृद्धि**
	  ○ **परमाणु हथियारों (वॉरहेड) में वृद्धि:** परमाणु हथियार 164 (2023) से बढ़कर 172 (2024) हो गए। भारत के पास पाकिस्तान से दो परमाणु हथियार अधिक हैं।
	  ○ **आधुनिकीकरण की दिशा में कदम:** यह वैश्विक ट्रेंड के अनुरूप है , जहाँ परमाणु हथियार वाले 9 देश अपने आयुधों को आधुनिक बना रहे हैं (जैसे, परमाणु हमले की नई प्रणालियाँ)।
	• **विश्व में परमाणु हथियारों की स्थिति**
	  ○ **कुल परमाणु हथियार:** विश्व में कुल 12,121 परमाणु हथियार हैं, जिनमें से लगभग **2,100 हाई अलर्ट पर** हैं (लॉन्च के लिए तैयार)।

भारतीय प्रवासी	• भारत सरकार ने 'प्रवासी' समुदाय की कोई सटीक परिभाषा नहीं दी है, लेकिन आमतौर पर इनमें **अप्रवासी भारतीय (NRI) और ओवरसीज सिटीजन ऑफ इंडिया (OCI)** शामिल होते हैं। ○ 2015 में **पीआईओ (PIO) और OCI कार्डधारकों को OCI नामक एकल श्रेणी में विलय** कर दिया गया। • भारत की प्रवासी नीति को **"4C" (केयर, कनेक्ट, सेलिब्रेट & कंट्रीब्यूट)** के रूप में परिभाषित किया जाता है। • **सरकारी पहलें:** उत्प्रवास अधिनियम (1983), ई-माइग्रेट प्रणाली, प्रवासन और गतिशीलता समझौते, आदि।
भारत-हिंद प्रशांत	• **हिंद-प्रशांत की परिभाषा:** "हम हिंद-प्रशांत को एक ऐसा क्षेत्र मानते हैं जो अफ्रीका के पूर्वी तट से लेकर अमेरिका के पश्चिमी तट तक फैला हुआ है।"

	• **व्यापार और ऊर्जा:** ○ **वैश्विक व्यापार का 50% और 40% तेल व्यापार** हिंद-प्रशांत क्षेत्र से गुजरता है। ○ **भारत का 90 प्रतिशत व्यापार** इस क्षेत्र से होता है। इसमें 80 प्रतिशत महत्वपूर्ण वस्तुओं का व्यापार शामिल हैं।
हिंद-प्रशांत महासागर पहल (IPOI)	• यह एक **गैर-संधि आधारित स्वैच्छिक व्यवस्था है, जो स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत तथा नियम-आधारित क्षेत्रीय व्यवस्था** के लिए सहयोग को बढ़ावा देती है। • **सिद्धांत:** यह भारत द्वारा **2015** में शुरू की गई **'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (सागर/ SAGAR)'** पहल की अवधारणा पर आधारित है।
क्वाड/ QUAD	• क्वाड **समुद्री हितधारक लोकतांत्रिक देशों (Maritime democracies)** का एक बहुपक्षीय फ्रेमवर्क है और एक वैश्विक कल्याणकारी शक्ति समूह **(Global Force for Good)** है, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिए वास्तविक, सकारात्मक और स्थायी प्रभाव प्रदान करता है। • **सदस्य: ऑस्ट्रेलिया, भारत, जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका।** (यह एक **कूटनीतिक साझेदारी** है, कोई **सैन्य गठबंधन नहीं** है) • **उद्देश्य: खुले, स्थिर और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र** का समर्थन करना • **महत्वपूर्ण क्षेत्र: स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन, प्रौद्योगिकी, अंतरिक्ष, इन्फ्रास्ट्रक्चर** और **साइबर सुरक्षा** ।
ऑकस/ AUKUS	• यह **ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका** के बीच त्रि-पक्षीय सामरिक रक्षा गठबंधन है। • **AUKUS रक्षा प्रौद्योगिकियों की प्रगति हेतु एक मंच** के रूप में कार्य करता है। • **AUKUS के स्तंभ**: ○ **पिलर I –** यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों ही देश ऑस्ट्रेलिया को परमाणु-संचालित पनडुब्बियां बनाने में मदद कर रहे हैं। ○ **पिलर II –** साइबर सिक्योरिटी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, क्वांटम प्रौद्योगिकियों, आदि **के क्षेत्र में सहयोग में तेजी लाने पर ध्यान** केंद्रित किया गया है।
ब्रिक्स/ BRICS	• **ब्रिक्स की प्रमुख पहलें:** ब्रिक्स देशों ने 2014 में **न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB)** को संस्थागत यानी औपचारिक रूप प्रदान किया; **कंटीजेंसी रिजर्व अरेंजमेंट**; **ब्रिक्स-वैक्सीन अनुसंधान एवं विकास केंद्र**; 2022 में ब्रिक्स देशों के बीच व्यापार कुल 162 बिलियन डॉलर तक पहुंच गया।
शंघाई सहयोग संगठन (SCO)	**वैश्विक बहुपक्षीयता में SCO की भूमिका** • **भू-राजनीतिक पहुंच**: यह यूरेशिया के 80% क्षेत्र और विश्व की 42% जनसंख्या को कवर करता है। • **आर्थिक प्रभाव**: वैश्विक GDP में लगभग 25% योगदान देता है। • **SCO, 2024 के अवसर पर विदेश मंत्री ने तीन परस्पर मूल्यों -** पारस्परिक सम्मान, पारस्परिक संवेदनशीलता और पारस्परिक हितों को दोहराया।
आसियान/ ASEAN	• **भारत के लिए आसियान का महत्व:** ○ भारत का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** (2023-24 के दौरान 122.67 बिलियन डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार) ○ **हिंद-प्रशांत रणनीति: आसियान सेंट्रलिटी** का भारत की **'एक्ट ईस्ट'** नीति और भारत अपने पूर्वी पड़ोसी देशों में (उदाहरण- म्यांमार में) स्थिरता बनाए रखना। ○ **पूर्वोत्तर के साथ कनेक्टिविटी:** उदाहरण के लिए, कलादान मल्टी-मॉडल ट्रांसपोर्ट प्रोजेक्ट। ○ **महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को सुरक्षित करना:** मलक्का जलडमरूमध्य को शामिल करते हुए।
बिम्सटेक/ BIMSTEC	• **उत्पत्ति:** इसकी स्थापना **1997 में बैंकॉक घोषणा-पत्र** पर हस्ताक्षर के साथ हुई थी। प्रारंभ में इसका गठन चार सदस्य राष्ट्रों- **बांग्लादेश, भारत, श्रीलंका और थाईलैंड** के साथ किया गया था। तब इसका संक्षिप्त नाम **BIST-EC** था। • **सचिवालय: ढाका,** बांग्लादेश में स्थित। • **उद्देश्य:** तेजी से **आर्थिक विकास,** सामाजिक प्रगति और बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में शांति व स्थिरता बनाए रखना। • **7 प्राथमिकता वाले क्षेत्र/ स्तंभ (प्रत्येक का नेतृत्व 1 सदस्य देश द्वारा)**: जैसे- भारत सुरक्षा स्तंभ के लिए नेतृत्वकर्ता देश है।

भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा	• **नई दिल्ली में 2023 में आयोजित G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान** इस परियोजना के समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए थे। • **उद्देश्य: मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी परियोजना** जैसी **अवसंरचनाओं का विकास** करना। • **दो अलग-अलग गलियारे शामिल होंगे:** पूर्वी गलियारा (भारत को खाड़ी देशों से जोड़ना) और **उत्तरी गलियारा** (खाड़ी देशों को यूरोप से जोड़ना) • यह परियोजना **वैश्विक अवसंरचना और निवेश के लिए साझेदारी (PGII)** पहल का हिस्सा है, जो चीन की BRI की काउंटर पहल है।

ग्रुप ऑफ ट्वेंटी (G-20)	• इसका गठन **एशियाई वित्तीय संकट** के बाद **1999** में हुआ था।
	• **वार्षिक शिखर सम्मेलन: G-20** शिखर सम्मेलन **प्रतिवर्ष बारी-बारी से सदस्य देशों की अध्यक्षता** में आयोजित किया जाता है।
	• **रियो डी जेनेरियो में आयोजित G-20 के बारे में**
	  ○ अफ्रीकी संघ (AU) ने पहली बार एक पूर्ण सदस्य के रूप में भाग लिया।
	  ○ **G-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने वाला ग्लोबल साउथ का तीसरा देश:** ब्राजील (2024), इसके बाद इंडोनेशिया (2022) और भारत (2023) है।

नाटो/ NATO	• नाटो ने **रक्षा क्षेत्र में सकल घरेलू उत्पाद का 5%** निवेश करने की प्रतिबद्धता जताई है, जो कि 2% की पिछली प्रतिबद्धता से काफी अधिक है।
	  ○ **3.5% निवेश मुख्य (कोर) रक्षा आवश्यकताओं** (जैसे, खरीद) में किया जाएगा।
	  ○ **रक्षा और सुरक्षा संबंधी निवेशों** (जैसे; बुनियादी ढांचा, रक्षा उद्योग) **के लिए 1.5% निर्धारित** किया गया है।

भारत-चीन संबंध	**दक्षिण चीन सागर (SCS) में विवाद**
	• चीन पश्चिमी हान राजवंश के समय के अपने ऐतिहासिक अधिकार का हवाला देकर पूरे दक्षिण चीन सागर पर अपना दावा करता है। **(1992 का दावा; "नौ-डैश लाइन" द्वारा चिह्नित)**
	• **वैश्विक व्यापार:** वैश्विक समुद्री व्यापार का एक-तिहाई हिस्सा (प्रतिवर्ष 3.5 मिलियन वर्ग किमी) SCS से होकर गुजरता है; वैश्विक स्तर पर कारोबार किए जाने वाले **लगभग 40% पेट्रोलियम उत्पाद** इसी समुद्र मार्ग से गुजरते हैं।
	• **भू-रणनीतिक मार्ग**: प्रशांत और हिंद महासागर को मलक्का जलडमरूमध्य के माध्यम से पूर्वी चीन सागर से जोड़ता है। यह वैश्विक व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण जलमार्ग है।
	• **चीन द्वारा सैन्यीकरण:**
	  ○ **कृत्रिम द्वीपों का निर्माण (2013–15 के बीच):** स्प्रैटली द्वीप समूह में कब्जे वाली सात प्रवाल भित्तियों (कोरल रीफ्स) के लगभग 3,000 एकड़ क्षेत्रफल पर।
	  ○ **तीन द्वीपों का पूर्ण सैन्यीकरण**।

चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारा (CPEC)	• CPEC **शिनजियांग उइगर स्वायत्त क्षेत्र और पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में ग्वादर बंदरगाह को जोड़ने वाला 3,000 किलोमीटर लंबा मार्ग** है। इस मार्ग में कई **अवसंरचना परियोजनाओं** का विकास किया जा रहा है। • **यह बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI)** के तहत एक **फ्लैगशिप परियोजना** है। BRI को चीन द्वारा 2015 में शुरू किया गया था। • CPEC भारत की सहमति के बिना पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) से होकर गुजरता है।
सिंधु जल संधि	• **'निलंबन'** शब्द अस्थायी निष्क्रियता या स्थगन की स्थिति को दर्शाता है। हालांकि, यह अंतर्राष्ट्रीय संधि कानून के तहत **कानूनी रूप से मान्यता प्राप्त अवधारणा नहीं** है। • न तो **सिंधु जल संधि (IWT)** और न ही **वियना कन्वेंशन ऑन द लॉ ऑफ ट्रीटीज (VLCT), 1969** किसी संधि के दायित्वों को रोकने या स्थगित करने के लिए 'निलंबन' को एक वैध आधार के रूप में स्वीकार करता है। • **उत्पत्ति:** सिंधु जल संधि पर **1960 में भारत और पाकिस्तान ने हस्ताक्षर** किए थे। इस संधि पर **विश्व बैंक द्वारा मध्यस्थता** की गई थी। • **उद्देश्य:** सिंधु और उसकी सहायक नदियों के जल का **भारत व पाकिस्तान के बीच वितरण** सुनिश्चित करना।

शिमला समझौता	• **पृष्ठभूमि:** भारत-पाकिस्तान ने **1971 के युद्ध के बाद शांति उपाय के रूप में इस समझौते पर 1972 में हस्ताक्षर** किए थे। 1971 के युद्ध के परिणामस्वरूप **पूर्वी पाकिस्तान की जगह बांग्लादेश नामक एक नए राष्ट्र का निर्माण** हुआ। • **शिमला समझौते के मुख्य प्रावधान:** ○ संयुक्त राष्ट्र चार्टर के सिद्धांत और उद्देश्य दोनों देशों के बीच संबंधों को विनियमित करेंगे। ○ सभी विवादों का समाधान आपसी सहमति से शांतिपूर्ण माध्यमों के जरिए करना, जैसे- द्विपक्षीय वार्ता या किसी अन्य शांतिपूर्ण तरीके से। ○ युद्ध के बाद 1971 को जम्मू और कश्मीर में जो संघर्ष विराम रेखा थी, उसे लाइन ऑफ कंट्रोल (LoC) मान लिया गया। ○ दोनों पक्षों ने एक-दूसरे की संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता और राजनीतिक स्वतंत्रता का सम्मान करने तथा आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने का संकल्प लिया।
भारत-श्रीलंका संबंध	• भारत ने श्रीलंका को सहायता के रूप में लगभग 4 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान किए। • **भारत ने** पूर्व-आश्वासन शर्त पूरी करके 2023 में IMF द्वारा श्रीलंका के लिए 2.9 बिलियन डॉलर के बेलआउट पैकेज की मंजूरी में सहयोग किया। • भारत श्रीलंका का सबसे बड़ा व्यापार साझेदार और श्रीलंका में **सबसे बड़ा विदेशी प्रत्यक्ष निवेशक** है।
भारत-अफगानिस्तान संबंध	• भारत ने तालिबान को **आधिकारिक तौर पर मान्यता नहीं** दी है। • दोनों देशों के बीच **व्यापार और वाणिज्य** चाबहार बंदरगाह से भी जारी है। • कृषि के लिए **सलमा बांध**, व्यापार के लिए **जरांज-डेलाराम सड़क मार्ग**, विद्युत के लिए ट्रांसमिशन लाइन, भारतीय **दूतावास परिसर का निर्माण** किया गया।
भारत-बांग्लादेश संबंध	• भारत ने बांग्लादेश से निर्यात के लिए दी गई ट्रांसशिपमेंट सुविधा को औपचारिक रूप से रद्द कर दिया। • **2021-22 में व्यापार 18 अरब डॉलर तक पहुंचा था**, बांग्लादेश भारत के लिए चौथा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य बन गया है और बांग्लादेश दक्षिण एशिया में भारत का **सबसे बड़ा व्यापार साझेदार** बन चुका है। • बांग्लादेश **BBIN (बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल)** का हिस्सा है • 2009 से बांग्लादेश द्वारा भारतीय उग्रवादी समूहों पर की जा रही कार्रवाई से सीमा पार उग्रवाद पर प्रभावी रोक लगी है।
भारत-मालदीव संबंध	• मालदीव पश्चिमी **हिंद महासागर तथा पूर्वी हिंद महासागर चोक पॉइंट्स** के मध्य एक **'टोल गेट'** की भांति स्थित है। • **मालदीव समुद्री संचार मार्गों (SLOCs)** के किनारे स्थित है। • **हिंद महासागर क्षेत्र (IOR) में नौवहन स्वतंत्रता सुनिश्चित करना।** • मालदीव की भौगोलिक अवस्थिति इसे हिंद महासागर क्षेत्र में **चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रति एक रणनीतिक** संतुलन बनाती है।
भारत-भूटान संबंध	• **मजबूत राजनीतिक संबंध:** इसका आधार मैत्री और सहयोग संधि है। • भारत ने भूटान की **13वीं पंचवर्षीय योजना (2024-29)** के लिए सहायता राशि बढ़ाई है। • भारत के **सीमा सड़क संगठन (BRO) ने परियोजना 'दंतक'** के तहत भूटान में अधिकतर सड़कों का निर्माण किया है।
हिंद महासागर क्षेत्र (IOR)	• **आर्थिक:** विश्व स्तर पर 1/3 बल्क कार्गो और 2/3 ऑयल शिपमेंट IOR से हो कर गुजरता है। • **भू-रणनीतिक:** भारत की केंद्रीय स्थिति **समुद्री मार्गों (SLOCs) के चोकपॉइंट्स** पर नियंत्रण प्रदान करती है। • **नौसेना शक्ति:** समुद्री पायरेसी रोधी अभियान (अदन की खाड़ी), मालाबार युद्ध अभ्यास (अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया)। • **रक्षा कूटनीति:** सित्तवे पत्तन (म्यांमार) का संचालन। • मॉरीशस, श्रीलंका में तटीय रडार। • **मिनीलेटरल: कोलंबो सुरक्षा सम्मेलन।**
भारत-पश्चिम एशिया	• कच्चे तेल में **चौथा सबसे बड़ा,** LNG और LPG में **दूसरा सबसे बड़ा प्रदाता।** • **व्यापारिक संबंध:** द्विपक्षीय व्यापार **85 बिलियन अमेरिकी डॉलर (2022–23);** UAE भारत का **तीसरा सबसे बड़ा** व्यापारिक भागीदार है। • **भारत के कुल प्रेषण का** 19.2% (FY24) है।
भारत- जापान संबंध	• जापान की **'फ्री एंड ओपन इंडो-पैसिफिक' (FOIP) रणनीति** • दोनों देश **एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (AAGC)** पहल पर एकमत हैं। • **विज्ञान और प्रौद्योगिकी मिशन में सहयोग: लूनर पोलर एक्सप्लोरेशन मिशन (LUPEX)।** • **अवसंरचना विकास:** उदाहरण के लिए, **मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल परियोजना जैसी परियोजनाओं पर सहयोग।**

	• **विदेशी निवेश:** 2022 से 2027 तक **भारत में 5 ट्रिलियन येन** के निवेश का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
भारत की एक्ट ईस्ट नीति	• लुक ईस्ट नीति पूरी तरह से **आसियान** पर केंद्रित थी। वहीं एक्ट ईस्ट नीति में **आसियान को केंद्र में रखते हुए हिंद-प्रशांत क्षेत्र तक नीति के दायरे** का विस्तार किया गया है। • **एक्ट ईस्ट नीति (AEP) की प्रभावशीलता:** ○ **आसियान, बिम्सटेक, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (IORA)** आदि के साथ गहन साझेदारी। ○ संस्थागत सहयोग में वृद्धि: **भारत IPEF, SCRI आदि में शामिल हुआ।**
भारत-अफ्रीका संबंध	• भारत अफ्रीका का **चौथा सबसे बड़ा व्यापारिक भागीदार** है। **85 बिलियन डॉलर के द्विपक्षीय व्यापार** और **75 बिलियन डॉलर के निवेश** के साथ (भारत 2022 में **पूंजी के हिसाब से अफ्रीका में तीसरा सबसे बड़ा निवेशक** था)। • **अफ्रीका में सतत विकास:** भारत ने अफ्रीका को **$12 बिलियन** का **रियायती ऋण** प्रदान किया है। • भारत की अध्यक्षता के दौरान भारत ने भी **अफ्रीकी संघ की G-20 की स्थायी सदस्यता** का समर्थन किया है।
भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका संबंध	**भारत-संयुक्त राज्य अमेरिका के मजबूत संबंधों का महत्त्व** • **रक्षा:** सिक्योरिटी ऑफ सप्लाई अरेंजमेंट यानी आपूर्ति सुरक्षा व्यवस्था (SOSA) समझौते पर भी हस्ताक्षर किए। • **विज्ञान और प्रौद्योगिकी:** iCET (2023) शुरू किया गया। • **आतंकवाद से निपटना:** अमेरिका ने तहव्वुर राणा (26/11 आतंकी हमलों से जुड़ा आतंकी) के भारत को प्रत्यर्पण को मंजूरी प्रदान की। • **उद्योग:** 2025 में **ऑटोनॉमस सिस्टम इंडस्ट्री एलायंस(ASIA)** की घोषणा की। • **सांस्कृतिक:** भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका ने विश्व धरोहर समिति के 46वें सत्र के अवसर पर अपने पहले 'सांस्कृतिक संपदा समझौते' पर हस्ताक्षर किए।
भारत-फ्रांस संबंध	• **फ्रांस भारत का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आपूर्तिकर्ता** है। (कुल आपूर्ति का 33%, SIPRI) • **संयुक्त सैन्य अभ्यास:** वरुण (नौसेना) एवं फ्रिनजेक्स (थल सेना) तथा बहुपक्षीय अभ्यास (ला पेरोस एवं ओरियन) • **FRIND-X (फ्रांस-भारत रक्षा स्टार्ट-अप उत्कृष्टता)** का शुभारंभ किया गया।
भारत-रूस संबंध	• **2030 तक 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर का द्विपक्षीय व्यापार** लक्ष्य निर्धारित किया गया है। • **राष्ट्रीय मुद्राओं** का उपयोग करके द्विपक्षीय लेन-देन निपटान प्रणाली को बढ़ावा देने का निर्णय लिया गया है। • रूस भारतीय सशस्त्र बलों के लिए **रक्षा उपकरणों का एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता** है। देश के कुल रक्षा आयात का **36% हिस्सा** रूस से ही आता है। • रूस भारत को **कच्चे तेल का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता** बन गया है।
अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी कानून (IHL)	**IHL के महत्वपूर्ण सिद्धांत** • **विभेद का सिद्धांत:** यह नागरिकों और नागरिक संपत्ति पर प्रत्यक्ष हमले को प्रतिबंधित करता है। • **आनुपातिकता का सिद्धांत:** पक्षकारों को आकस्मिक नुकसान का पूर्वानुमान लगाने की आवश्यकता होती है, जो सीधे हमले और अप्रत्यक्ष प्रभाव के कारण हो सकता है, बशर्ते कि वह उचित रूप से पूर्वानुमानित हो। • **पूर्वोपाय का सिद्धांत (Principle of precaution):** यह सभी मिलिट्री ऑपरेशन के संचालन में नागरिक आबादी की रक्षा करने हेतु सशस्त्र संघर्ष में शामिल पक्षकारों पर सतत देखभाल करने की जिम्मेदारी आरोपित करता है।
संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC)	• UNSC की स्थापना **संयुक्त राष्ट्र चार्टर द्वारा 1945 में संयुक्त राष्ट्र के 6 प्रमुख अंगों में से एक** के रूप में की गई थी। इसकी प्राथमिक जिम्मेदारी **अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा बनाए रखने** के लिए काम करना है। • परिषद में **5 स्थायी सदस्य** हैं, जबकि **10 अस्थायी सदस्य दो साल के कार्यकाल** के लिए चुने जाते हैं। • **भारत संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य** है और इसने **8 बार** UNSC के अस्थायी सदस्य के रूप में कार्य किया है।
संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना	• **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना में भारत का योगदान** ○ भारत ने **शांति स्थापना मिशनों में 2,87,000** के आस-पास सैनिकों की सेवाएं प्रदान की हैं। ○ भारत **लैंगिक शोषण और दुर्व्यवहार पर ट्रस्ट फंड में योगदान देने वाला पहला देश** था। इसे 2016 में स्थापित किया गया था। ○ शांति रक्षक सैनिकों के खिलाफ अपराधों को रोकने और दोषियों को सजा दिलाने के लिए **"ग्रुप ऑफ फ्रेंड्स"** शुरू किया गया है। ○ कांगो, लाइबेरिया, दक्षिण सूडान और हैती जैसे देशों में **शांति रक्षक सैनिकों, खासकर महिलाओं की भूमिका** को प्रोत्साहन देना।

© Vision IAS

	○ भारतीय थल सेना ने प्रति वर्ष **12,000 से अधिक सैनिकों** को प्रशिक्षित करने के लिए **संयुक्त राष्ट्र शांति स्थापना केंद्र (CUNPK)** की स्थापना की है।
अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय (ICC)	• **ICC के तहत अपराधों की 4 श्रेणियां** ○ **नरसंहार** ○ **मानवता के खिलाफ अपराध** ○ **युद्ध अपराध** ○ **आक्रामकता का अपराध**
राष्ट्रमंडल	• **ब्रिटिश राष्ट्रमंडल की शुरुआत 1926** में तब हुई, जब ब्रिटेन और उसके डोमिनियन, ब्रिटिश शासन के बिना, ब्रिटिश क्राउन के अधीन समान सदस्यों के रूप में जुड़ने हेतु सहमत हुए। • **1947** में स्वतंत्रता के बाद भारत एक गणतांत्रिक राष्ट्र बन गया, लेकिन वह राष्ट्रमंडल का सदस्य भी बने रहना चाहता था। • **राष्ट्रमंडल प्रतिनिधित्व करता है: 14.5 ट्रिलियन** अर्थव्यवस्था; विश्व जनसंख्या का **32%**; तथा **29 वर्ष** या उससे कम आयु की **60% से अधिक जनसंख्या का।**

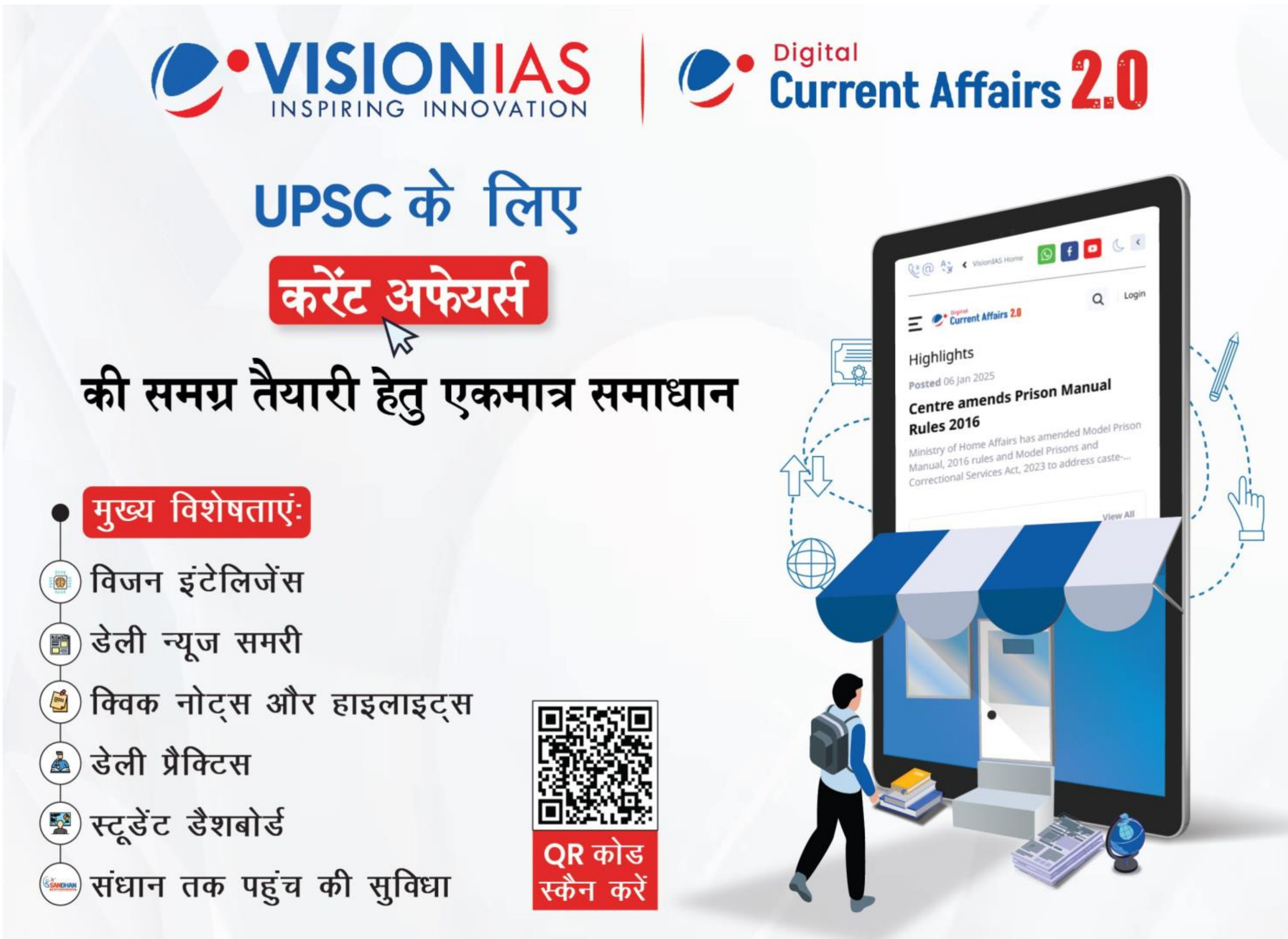

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स 2026

प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली

7 अगस्त, 2 PM

अवधि – 12 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

निःशुल्क काउंसिलिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधि: 12 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधि: 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोट: अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन / मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन
अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित
विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन
इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन / ईमेल / लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़
प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें
प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी
अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest

Congratulations

to all Successful Candidates

10 in **TOP 10** Selections in **CSE 2024**

from various programs of **Vision IAS**

1 AIR
Shakti Dubey

2 AIR
Harshita Goyal
GS Foundation Classroom Student

3 AIR
Dongre Archit Parag
GS Foundation Classroom Student

4 AIR
Shah Margi Chirag

5 AIR
Aakash Garg

6 AIR
Komal Punia

7 AIR
Aayushi Bansal

8 AIR
Raj Krishna Jha

9 AIR
Aditya Vikram Agarwal

10 AIR
Mayank Tripathi

हिंदी माध्यम में 30+ चयन CSE 2024 में

137 AIR
Ankita Kanti

182 AIR
Ravi Raaz

438 AIR
Mamata

448 AIR
Sukh Ram

509 AIR
Amit Kumar Yadav

DELHI

HEAD OFFICE
33, Pusa Road,
Near Karol Bagh Metro Station,
Opposite Pillar No. 113,
Delhi - 110005

MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor,
Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar

GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office,
above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009

FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call:
+91 8468022022,
+91 9019066066

enquiry@visionias.in | /@visioniashindi | /visionias.upsc | /vision_ias_hindi/ | /hindi_visionias

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची